स्पष्टता न्यूज़



अर्द्धवार्षिकी

द्वितीय संस्करण, अप्रैल-2026

OmDayal Group

DELHI PUBLIC SCHOOL RUBY PARK, KOLKATA

DELHI PUBLIC SCHOOL DURGAPUR

OmDayal Group of Institutions
ENGINEERING | ARCHITECTURE | MANAGEMENT

VMC Vidyamandir Classes
IIT JEE | MEDICAL | FOUNDATION

THE BENCHMARK FOR TRANSFORMATIONAL EDUCATION.

Nurturing Young Minds from Foundations to Futures.



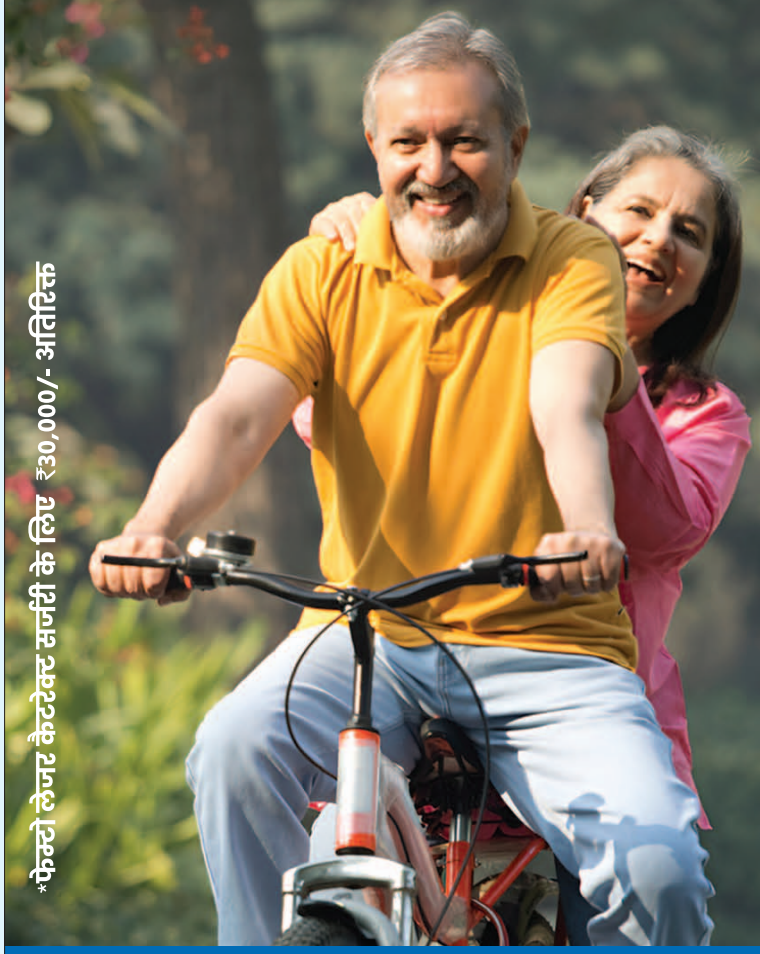
OmDayal Group is committed to nurturing young minds from the beginning of their educational journey through to their professional careers, with a network of **schools and colleges across West Bengal.** Founded in 2002, the group's institutions integrate **innovation, holistic learning, and global-standard infrastructure,** featuring **advanced & futuristic laboratories, modern sports infrastructure, digital and iPad-enabled classrooms, and residential hostels** that prepare students to excel at national and global arenas.

+91 8100 500 600 | www.omdayalgroup.com | contact@omdayal.com

ASG EYE HOSPITALS
meet the experts

Full NABH Accredited

AIIMS, नई दिल्ली के सीनियर सर्जनों द्वारा आंखों का इलाज अब आपकी उंगलियों पर



रोबोटिक फेम्टो लेजर

कैटरेक्ट सर्जरी मल्टीफोकल और ट्राइफोकल लेंस आपको पास और दूर की नज़र से छुटकारा पाने में मदद कर सकते हैं

- ☒ कोई टांके नहीं
- ☒ कोई इंजेक्शन नहीं
- ☒ कोई पट्टी नहीं

अत्याधुनिक फेको सर्जरी

सिर्फ़ ₹ 15,150/-* से शुरू

*फेम्टो लेजर कैटरेक्ट सर्जरी के लिए ₹30,000/- अतिरिक्त

कैटरेक्ट | ग्लूकोमा | रेटिना | कॉन्टूरा लेसिक
स्क्विंट | ओकुलोप्लास्टी | नेत्र प्रत्यारोपण

कैटरेक्ट सर्जरी अब बहुत आसान हो गई है और इसमें लगभग कोई रोक-टोक नहीं है।

3 देशों में +87 शहर
+175 सुपर स्पेशियलिटी नेत्र अस्पताल

Three Crore +*
Treated Patients
*Includes data of all locations

*T&C Apply

Find us on Google Maps

Alcove Gloria,
Sreebhumi, Kolkata
(1 km from Ultadanga Station)

अपॉइंटमेंट के लिए : 033-25212200 | 033-25212211
सैकत साहा : 82748 67501 | 88750 10649

अपनी बात



अमित कुमार सेठ
संपादक अर्द्धवार्षिकी
amitkumarseth0208@gmail.com
9163215055 / 8910012623

चुनावी तपिश में 'स्पष्टता' की डगर

स्पष्टता न्यूज की दूसरी अर्द्धवार्षिकी आपके हाथों में है। पिछले साल प्रकाशित अंक पर पाठकों व सुधी जनों ने अच्छी प्रतिक्रिया जतायी थी। इस साल के पहले अंक को भी हमने अपनी तरफ से बेहतर बनाने की कोशिश की है।

सूचना क्रांति के इस युग में जब सूचनाएं उंगलियों पर उपलब्ध हैं, तब पत्रकारिता अपने सबसे चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रही है। विशेषकर यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स ने जहां हर व्यक्ति को मंच दिया है, वहीं 'खबर' और 'शोर' के बीच की लकीर को भी धुंधला कर दिया है। 'स्पष्टता न्यूज' अपनी इस अर्द्धवार्षिक पत्रिका के माध्यम से आज उसी डिजिटल परिदृश्य की विसंगतियों और चुनौतियों पर विमर्श करने का प्रयास कर रहा है।

आज एक यूट्यूब चैनल चलाना केवल कैमरा संभालना नहीं है। सबसे बड़ी चुनौती विश्वसनीयता का संकट है। जहां 'क्लिकबेट' और सनसनीखेज थंबनेल के जरिए व्यूज बटोरने की अंधी दौड़ हो, वहां तथ्यों की मर्यादा बनाए रखना जोखिम भरा है। एक गंभीर पत्रकार के सामने दुविधा होती है कि वह एल्गोरिदम की पसंद का 'मसाला' परोसे या समाज की जरूरत का 'सच'। अक्सर डिजिटल प्लेटफॉर्म सनसनी को बढ़ावा देते हैं, जबकि जमीनी मुद्दों को वह 'रीच' नहीं मिल पाती जिसके वे हकदार हैं।

विशेष रूप से, बंगाल में चल रही विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया के बीच हमारी भी जिम्मेदारी कई गुना बढ़ गयी है। बंगाल की राजनीति हमेशा से ही वैचारिक टकराव और सघन विमर्श का केंद्र रही है, लेकिन चुनावी मौसम में 'फेक न्यूज' और 'नैरेटिव' गढ़ने वाली फैक्ट्रियां सबसे ज्यादा सक्रिय हो जाती हैं। एक स्वतंत्र यूट्यूब चैनल के लिए चुनौती यह है कि वह राजनीतिक दलों के 'प्रोपेगेंडा' का हिस्सा बने बिना जनता के असली मुद्दों—जैसे बेरोजगारी, सुरक्षा, भ्रष्टाचार और विकास—को केंद्र में रखे। बंगाल की मिट्टी में जो राजनीतिक जागरूकता है, वह पत्रकारों से भी उतनी ही ईमानदारी की मांग करती है।

दूसरी बड़ी चुनौती संसाधनों और आर्थिक आत्मनिर्भरता की है। मुख्यधारा के मीडिया घरानों के पास विशाल फंड होता है, लेकिन एक स्वतंत्र चैनल को निष्पक्षता बनाए रखने के लिए सीमित संसाधनों में जूझना पड़ता है। विज्ञापनदाताओं और राजनीतिक दबावों के बीच अपनी कलम को स्वतंत्र रखना किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं है। साथ ही, सोशल मीडिया पर बढ़ती ट्रोलिंग और वैचारिक कट्टरता ने स्वतंत्र पत्रकारों के लिए एक असुरक्षित माहौल पैदा कर दिया है। बंगाल की चुनावी रैलियों के बीच सच बोलना अब केवल विरोध तक सीमित नहीं, बल्कि व्यक्तिगत सुरक्षा का भी प्रश्न बन गया है। स्पष्टता न्यूज अपील करता है कि हर व्यक्ति अपने मताधिकार का प्रयोग जरूर करे।

इन तमाम बाधाओं के बावजूद, 'स्पष्टता न्यूज' का मानना है कि अंधेरा जितना गहरा होता है, दीये की अहमियत उतनी ही बढ़ जाती है। हमारे लिए यूट्यूब केवल एक तकनीक नहीं, बल्कि लोकतंत्र का अंतिम पहरा है। जब बड़े पर्दे चुनावी शोर में दब जाते हैं, तब ये छोटे मोबाइल स्क्रीन ही आम आदमी की गूंज बनते हैं। स्पष्टता न्यूज चुनौतियों से डरे बिना और आर्थिक-राजनीतिक दबावों को ठुकरा कर आपके विश्वास की पूंजी को बचाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पत्रकारिता यदि मिशन है, तो इसका रास्ता कठिन होगा ही, और 'स्पष्टता न्यूज' इस कठिन पथ पर चलने का संकल्प दोहराता है।

अंत में, इस अंक में विज्ञापन, लेख व पत्रिका प्रकाशन में सहयोग करने वाले बंधुओं के प्रति आभार व्यक्त करना हमारा कर्तव्य है।



Marketing Office: Tirumala Building (12th Floor), 22 East Topsia Road, Tiljala, Kolkata 700 046, W.B., India
P: +91 90512 12345, E: enquiry@skipperlimited.com, W: www.skipperpipes.in
Works: Uluberia (West Bengal) | Guwahati (Assam)

Follow us :

विषय - सूची

संपादकीय : स्पष्टता की डगर..... B
कौन जीतेगा बंगाल की जंग?.....01
गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ और दत्तात्रेय विवाद क्यों?.....04
देश के आर्थिक विकास की रीढ़ है मारवाड़ी समुदाय.....06
इतना संपन्न क्यों है मारवाड़ी समुदाय?.....08
7 दशकों से योग की अलख जगा रहा है यौगिक संघ.....10
विन पेंस : तूफानों के बीच अडिग, अटल.....12
राम और हनुमान एक दूसरे के बिना अधूरे.....13
पद की मर्यादा और सरकारी सुविधाएं.....14
खर्च करने का मनोविज्ञान.....16
जैन समाज की दिशा और दशा.....18
12 वीं के बाद यूपीएससी की तैयारी कैसे करें?.....20
सोशल मीडिया और वैवाहिक बंधन.....22
हक के लिए लडें, तभी होगा उत्थान.....24
मारवाड़ी समाज से निवेदन.....26
भारत कैसे मुक्त होगा थैलेसीमिया से.....27
आज फिल्मी गीतों से क्यों गायब है मिठास?.....28
एचएमटी की पतन कथा.....30
इस साल भी क्या टॉप पर रहेगी बैगी?.....32
सोना -चांदी की कीमतों में उथल पुथल क्यों?.....33
नये-नये तरीके ढूंढ़ रहे साइबर ठग.....34
हावड़ा ब्रिज : बंगाल की लाइफलाइन.....36
स्वास्थ्य ही धन है तो लापरवाही क्यों?.....38
कामयाबी की नयी कहानियां लिख रही हैं महिला उद्यमी वनिता.....40
वास्तुशिल्प का चमत्कार हैं दुनिया के स्वामी नारायण मंदिर.....41
भगवान महावीर की छत्रछाया.....43
क्यों मंद पड़ गया कोलकाता का कपड़ा व्यवसाय.....44
समग्र स्वास्थ्य बहाल रखता है आयुर्वेद.....46
हिमालय के ऋषि.....46
हिंदू नववर्ष : सनातन धर्म की आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक.....48
महावीर जयंती : मनुष्य कर्मों से महान बनता है, जन्म से नहीं.....49
जीतो ने सारे जैन समाज को एक प्लेटफार्म पर लाया : धर्मेंद्र जैन.....50
पूरे फागुन में श्याम बाबा के भक्तों ने मनाया आध्यात्मिक महापर्व.....52
प्रेम मिलन बना कोलकाता में नि:शुल्क सेवा का सबसे बडा केंद्र.....54
बहुमुखी प्रतिभा के धनी राधेश्याम अग्रवाल सुल्तानिया.....55
जीवन में भगवान महावीर केक सिद्धांतों को लागू करें : प्रमुख सागर.....56
मुस्लिम आक्रांताओं से लोहा लेने वाली वीरांगनाएं.....60
भजन कीर्तन में बढ़ती नयी पीढ़ी की भागीदारी.....63
कोलकाता का सालासर भक्त वृंद.....64
समाज की सेवा मेरा धर्म है : राजेंद्र खंडेलवाल.....65
बंगाल के सबसे सम्मानित शैक्षणिक संस्थान के तौर पर मिली.....66
गढ़ना है बंगाल का भविष्य : एक समय में एक सोच.....68

सहयोग राशि
₹250/-

स्पष्टता न्यूज़ नेटवर्क और स्पष्टता मैगजीन की टीम

अमित कुमार सेठ
डायरेक्टर

शिल्पी कन्धवे
डायरेक्टर, स्पष्टता न्यूज़ महिला विंग

प्रकाश चन्द्रा
मुख्य सलाहकार

सुहाना परवीन
एंकर

रश्मि सिंह
एंकर व वॉयस आर्टिस्ट

सोनू मिश्रा
फोटोग्राफर व एडिटिंग विभाग

चित्रा राय
एंकर

मोहन केडिया
डिजिटल मार्केटिंग व एडिटिंग विभाग

सृष्टि राज
वीडियो व ग्राफिक्स विभाग

सौरभ कुमार सिंह
पृष्ठ सज्जा व डिजाइनिंग विभाग

स्वत्वाधिकारी व संपादक अमित कुमार की ओर से
पंजीकृत कार्यालयः-DE 212 Narayantala (East), Baguiati, Kolkata 700159 की ओर से
प्रकाशित और Arihant Printers, Plot No - 67, 3 Pagladanga, Main Road, Tangra, Kolkata, West Bengal 700015 द्वारा मुद्रित.

कौन जीतेगा बंगाल की जंग?



भवानीपुर में दीदी बनाम दादा की टक्कर



प्रकाश चन्द्रा
राजनीतिक पत्रकार

इस बार का सबसे हाई-प्रोफाइल मुकाबला भवानीपुर सीट पर होने जा रहा है, जहाँ मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनके धुर विरोधी शुभेंदु अधिकारी एक बार फिर आमने-सामने हैं। 2021 के नंदीग्राम संग्राम के बाद यह 'रीमैच' बंगाल की राजनीति का सबसे बड़ा केंद्र बिंदु बना हुआ है।

प्रशासनिक मोर्चे पर चुनाव आयोग ने राज्य के मुख्य सचिव, गृह सचिव और डीजीपी सहित 50 से अधिक शीर्ष अधिकारियों के तबादले कर दिए हैं। ममता बनर्जी ने इसे "राजनीतिक हस्तक्षेप" और केंद्र की साजिश करार दिया है, जबकि विपक्षी इसे निष्पक्ष चुनाव की दिशा में बड़ा कदम मान रहे हैं।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 के लिए सियासी पारा अपने चरम पर है। राज्य की सभी प्रमुख पार्टियों ने लगभग अपने उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है, जिससे चुनावी बिसात पूरी तरह बिछ चुकी है। प्रचार जोरों पर है। इस बार का सबसे हाई-प्रोफाइल मुकाबला भवानीपुर सीट पर होने जा रहा है, जहाँ मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनके धुर विरोधी शुभेंदु अधिकारी एक बार फिर आमने-सामने हैं। 2021 के नंदीग्राम संग्राम के बाद यह 'रीमैच' बंगाल की राजनीति का सबसे बड़ा केंद्र बिंदु बना हुआ है।

प्रशासनिक मोर्चे पर, चुनाव आयोग ने राज्य के मुख्य सचिव, गृह सचिव और डीजीपी सहित 50 से अधिक शीर्ष अधिकारियों के तबादले कर दिए हैं। ममता बनर्जी ने इसे "राजनीतिक हस्तक्षेप" और केंद्र की साजिश करार दिया है, जबकि विपक्षी इसे निष्पक्ष चुनाव की दिशा में बड़ा कदम मान रहे हैं। वहीं, एसआईआर का काम अभी भी न्यायिक अधिकारियों की देखरेख में जारी है, जो चुनावी विमर्श को प्रभावित कर सकता है।

प्रमुख राजनीतिक समीकरण और चुनौतियां

मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण: टीएमसी से निलंबित नेता हुमायूं कबीर की पार्टी (एजेयूपी) और असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी मीम के बीच तालमेल ने ममता बनर्जी की चिंता बढ़ा दी है। कबीर ने दावा किया है कि वे 182 सीटों पर चुनाव लड़ेंगे, जिससे राज्य के निर्णायक मुस्लिम वोट बैंक में बिखराव की संभावना प्रबल हो गई है।

परिवर्तन के संकेत? बड़े पैमाने पर अधिकारियों के तबादले और सत्ता विरोधी लहर को देखते हुए राजनीतिक विश्लेषक इसे सत्ता परिवर्तन के संकेत के रूप में देख रहे हैं। टीएमसी ने इस बार 74 मौजूदा विधायकों के टिकट काटकर 'क्लीन इमेज' कार्ड खेलने की कोशिश की है।

भवानीपुर: ममता बनाम शुभेंदु (नंदीग्राम का 'रीमैच')

भवानीपुर की जंग इस बार केवल एक सीट की लड़ाई नहीं, बल्कि साख का सवाल बन गई है। 2021 में शुभेंदु अधिकारी ने नंदीग्राम में ममता बनर्जी को 1,956 वोटों से हराया था। इस बार शुभेंदु ने मुख्यमंत्री को उनके ही गढ़ भवानीपुर में चुनौती दी है। दिलचस्प बात यह है कि शुभेंदु नंदीग्राम और भवानीपुर दोनों सीटों से चुनाव लड़ रहे हैं।

भवानीपुर एक 'कॉस्मोपॉलिटन' सीट है। यहाँ लगभग 20% मुस्लिम, 34% बंगाली हिंदू और बड़ी संख्या में गैर-बंगाली (गुजराती, पंजाबी और मारवाड़ी) मतदाता हैं। 'स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन' के तहत इस सीट से लगभग 41,000 मतदाताओं के नाम हटाए गए हैं। विश्लेषण के अनुसार, 'संदेहास्पद श्रेणी' में रखे गए मतदाताओं में से 56% मुस्लिम हैं, जो पारंपरिक रूप से टीएमसी का वोट बैंक माने जाते हैं। यदि ये मतदाता वोट नहीं दे पाते, तो ममता बनर्जी की जीत का अंतर काफी कम हो सकता है।

मुस्लिम वोट बैंक: बंगाल में करीब 30% मुस्लिम आबादी है जो 100 से अधिक सीटों पर निर्णायक है। कबीर ने 'बाबरी मस्जिद' और 'मुस्लिम मुख्यमंत्री/उप-मुख्यमंत्री' के भावनात्मक मुद्दों को हवा दी है। यदि यह गठबंधन मालदा और मुर्शिदाबाद जैसे जिलों में 5-10% वोट भी काटता है, तो इसका सीधा फायदा बीजेपी को हो सकता है, क्योंकि टीएमसी की जीत काफी हद तक मुस्लिम वोटों के एकतरफा ध्रुवीकरण पर टिकी होती है।

चुनाव आयोग के तबादले

चुनाव आयोग ने चुनाव की तारीखों के एलान के तुरंत बाद राज्य के मुख्य सचिव, गृह सचिव और डीजीपी सहित 50 से अधिक अधिकारियों को हटा दिया है। ममता ने इसे 'अघोषित आपातकाल' और परदे के पीछे से राष्ट्रपति शासन और बीजेपी के इशारे पर की गई कार्रवाई बताया है। उनका तर्क है कि इससे प्रशासनिक व्यवस्था ठप हो जाएगी।

इतिहास गवाह है कि जब भी चुनाव आयोग ने इतने बड़े पैमाने पर शीर्ष नौकरशाही में फेरबदल किया है (जैसे 2011 में), तो वह सत्ता विरोधी लहर को बल देता है। अधिकारियों के तबादले से पुलिस और प्रशासन का वह 'कथित पक्षपात' खत्म होता है जिसका आरोप विपक्ष लगाता रहा है। क्या बंगाल में इस बार 'परिवर्तन' होगा?

वर्तमान संकेत एक त्रिकोणीय और बेहद कड़े मुकाबले की ओर इशारा कर रहे हैं। जहाँ टीएमसी अपनी 'लक्ष्मी भंडार' और बेरोजगारी भत्ता जैसी कल्याणकारी योजनाओं पर भरोसा कर रही है, वहीं बीजेपी 'भ्रष्टाचार' और 'कानून व्यवस्था' को मुद्दा बना रही है। हुमायूं-ओवैसी फैक्टर और एसआईआर की प्रक्रिया ने टीएमसी के 'सुरक्षित' माने जाने वाले समीकरणों में सेंध लगा दी है।

चुनावी हिंसा के कलंक से कब मिलेगी मुक्ति?





एक शांतिपूर्ण चुनाव हमारी साझी जिम्मेदारी है। लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं है।
आएँ, सब मिलकर शांति और सद्भाव बनाए रखें।

चुनावी हिंसा की चिंता

पश्चिम बंगाल में चुनावी हिंसा का इतिहास काफी पुराना और चिंताजनक रहा है। यह समस्या वामपंथी शासन के समय से चली आ रही है और वर्तमान समय में भी एक गंभीर चुनौती बनी हुई है। 2026 के विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया चल रही है, ऐसे में हिंसा मुक्त चुनाव सुनिश्चित करना लोकतंत्र की मजबूती के लिए अनिवार्य है। अभी चुनाव प्रचार के दौरान ही हिंसा की कई घटनाएं घट चुकी हैं। आज यह भारत का एकमात्र राज्य है, जहां चुनावों के समय खून बहता ही बहता है। लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं है और यह केवल तभी रुक सकती है, जब चुनाव आयोग की सख्ती, सत्ता में बैठी सरकार का सहयोग, सदिच्छा और जनता की जागरूकता एक साथ काम करे।

उल्लेखनीय है कि 1960 से 1970 के बीच शुरू हुई नक्सली हिंसा धीरे-धीरे राजनीतिक हिंसा में बदल गई. सरकारी आंकड़े की मानें तो इन पांच दशकों में पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा में करीब 30 हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं और यह सिलसिला आज भी जारी है. पिछले दो दशकों में सबसे ज्यादा मौत सिंगुर और नंदीग्राम आंदोलन में हुई. आजादी के बाद से बंगाल ने कई राजनीतिक दलों के नेतृत्व वाली सरकारें देखी हैं. जिनमें दो दशकों से अधिक समय तक शासन करने वाली कांग्रेस और तीन दशकों से अधिक समय तक शासन करने वाली भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के नेतृत्व वाला वाम मोर्चा शामिल हैं. ममता बनर्जी की अगुआई वाली तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) मौजूदा सरकार का नेतृत्व करती है. इन सभी शासनों में, राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं के बीच, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, हिंसक झड़पों की संस्कृति पिछले कुछ वर्षों में ही पनपी है.

एक आंकड़े के मुताबिक वाम शासन के 34 वर्षों के दौरान राज्य में राजनीतिक हिंसा में 28 हजार लोग मारे गए. ममता बनर्जी के नेतृत्व में हुए नंदीग्राम और सिंगुर आंदोलन को पश्चिम बंगाल की सरकार ने जिस हिंसात्मक तरीके से दबाया वो ताबूत में आखिरी कील साबित हुई और 34 साल की लेफ्ट सरकार का पतन हुआ. पंचायत चुनाव हो या विधानसभा-लोकसभा चुनाव, पश्चिम बंगाल में हिंसा कम नहीं हुई है. अब तो बिना किसी चुनाव के भी राजनीतिक कार्यकर्ताओं की हत्या और उन पर हमला आम बात हो गई है. ममता बनर्जी के लगभग 15 साल के कार्यकाल में राजनीतिक हिंसा की तस्वीर बदलती नजर नहीं आई. ऐसे में लोगों की उम्मीद अब किसी तीसरे विकल्प पर है. बंगाल की जनता के बीच बीजेपी अपने आप को राज्य में मजबूत विकल्प के रूप में पेश कर रही है. शायद इसीलिए बीजेपी ने पश्चिम बंगाल में अपनी पूरी ताकत झोंक रखी है.

पश्चिम बंगाल में चुनावी हिंसा का दायरा काफी विस्तृत है, लेकिन पिछले कुछ चुनावों (2021 विधानसभा, 2023 पंचायत और 2024 लोकसभा) के आंकड़ों और घटनाओं के आधार पर कुछ जिलों को विशेष रूप से 'अति-संवेदनशील' की श्रेणी में रखा गया है। दक्षिण बंगाल, दक्षिण 24 परगना, उत्तर 24 परगना, हावड़ा, बीरभूम-मुर्शिदाबाद, नदिया, जंगलमहल के झाड़ग्राम, पश्चिम मेदिनीपुर, बांकुड़ा के इलाके, उत्तर बंगाल के कूचबिहार, उत्तर दिनाजपुर जिले हिंसा से प्रभावित रहे हैं1भांगड़ (दक्षिण 24 परगना) में अक्सर सत्ताधारी दल और विपक्षी दलों (जैसे आईएसएफ) के बीच हिंसक झड़पें देखी गई हैं। बीरभूम में 'बम कल्चर' और राजनीतिक प्रतिशोध की घटनाएं चुनाव आयोग के लिए हमेशा सिरदर्द रही हैं। ताजा रिपोर्टों (फरवरी 2026) के अनुसार, चुनाव आयोग ने इस बार अभूतपूर्व कदम उठाए हैं, जिनमें चुनावों की आधिकारिक घोषणा से पहले ही मार्च 2021 की तुलना में 4 गुना अधिक (लगभग 480 कंपनियां) केंद्रीय बल 'एरिया डोमिनेशन' के लिए भेजी गयी हैं। जिलाधिकारियों को हर हफ्ते कानून-व्यवस्था की रिपोर्ट सीधे चुनाव आयोग को भेजने का निर्देश दिया गया है। केवल मतदान के दिन ही नहीं, बल्कि चुनाव की घोषणा के पहले ही 21 फरवरी को केंद्रीय अर्धसैनिक बलों की तैनाती हो गयी, ताकि असामाजिक तत्वों में डर पैदा हो। संवेदनशील इलाकों में नियमित फ्लैग मार्च और 'एरिया डोमिनेशन' के माध्यम से मतदाताओं में विश्वास जगाया जा रहा है। चुनाव आयोग ने यह सुनिश्चित किया है कि मतदाता सूची में कोई 'फर्जी' नाम न हो और प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी हो। कम से कम 50% से 100% मतदान केंद्रों पर लाइव वेबकास्टिंग और सीसीटीवी निगरानी अनिवार्य की गयी है, ताकि बूथ कैप्चरिंग जैसी घटनाएं रुक सकें। चुनाव आयोग ने उन अधिकारियों की पहचान कर उन्हें चुनाव प्रक्रिया से दूर रखा है, जिन पर किसी विशेष दल के प्रति झुकाव का आरोप था। हिंसा की छोटी से छोटी घटना पर पुलिस और प्रशासन को बिना किसी राजनीतिक दबाव के तत्काल एफआईआर दर्ज कर गिरफ्तारी करे तो इससे भी हिंसा पर लगाम लगेगी। बंगाल में चुनावों के दौरान बमों का इस्तेमाल एक बड़ी समस्या है। चुनाव से कम से कम 6 महीने पहले से ही अवैध हथियार बनाने वाली फैक्ट्रियों और भंडारण केंद्रों के खिलाफ राज्यव्यापी अभियान चलाया जाना चाहिए, हालांकि यह काम मार्च से ही शुरू हो सका। चुनावी हिंसा से संबंधित मामलों के लिए विशेष फास्ट ट्रैक अदालतों का गठन किया जाना चाहिए ताकि दोषियों को जल्द सजा मिले और दूसरों को कड़ा संदेश जाए। संवेदनशील क्षेत्रों में अदालती आदेशों के तहत विशेष पर्यवेक्षकों की नियुक्ति से भी काफी असर पड़ेगा।

सवाल है कि टीएमसी अपनी कल्याणकारी योजनाओं के दम पर चौथी बार वापसी करेगी, या बीजेपी और नए मोर्चे (हुमायूं-ओवैसी) के बीच बंगाल में सत्ता का नया समीकरण बनेगा? इसका फैसला 4 मई को आने वाले नतीजों से होगा।

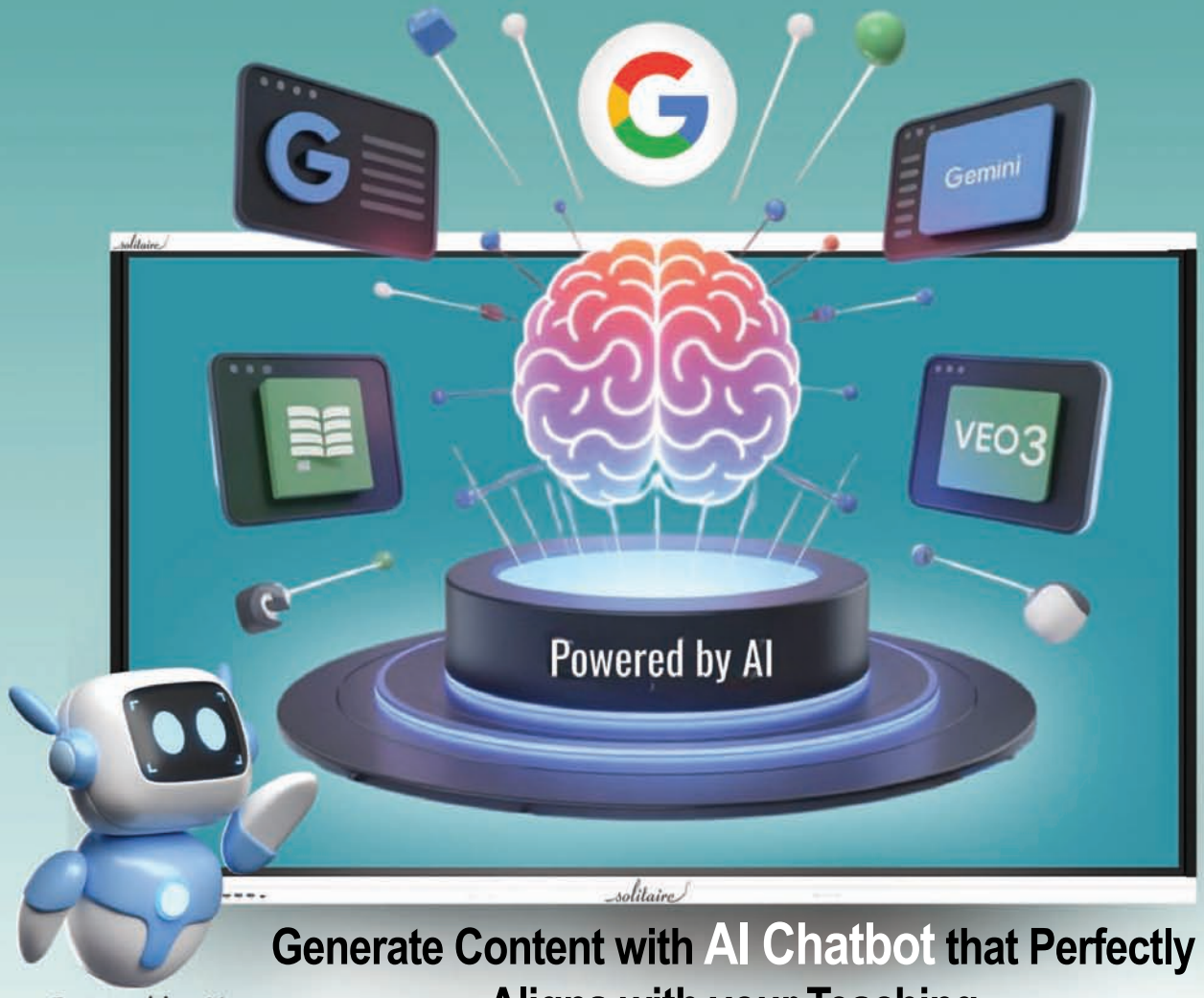
solitaire®
Empowering Collaboration, Amplifying Impact

SUPERTRON

A smart ecosystem for effortless teaching & elevated collaboration with

Solitaire C-Series Interactive Flat Panels

(Google EDLA Certified)



Powered by AI

Generate Content with AI Chatbot that Perfectly Aligns with your Teaching

Powered by Artificial Intelligence

Smart AI Gesture

Contact us:

Email: Solitaire.Products@supertronindia.com | Website: www.solitairetech.in

Phone: Pan India Projects / GEM Enquiry +91 98311 90011 / 77598 34939, West Sales: +91 93238 01478
North Sales: +91 98710 10221, South Sales: +91 99620 00918 / 63644 80224,
East Sales: +91 98367 05035, Toll Free: 1800-571-6767
WhatsApp (Only): +91-9818778982 (For strategic large deals / White Label Business)

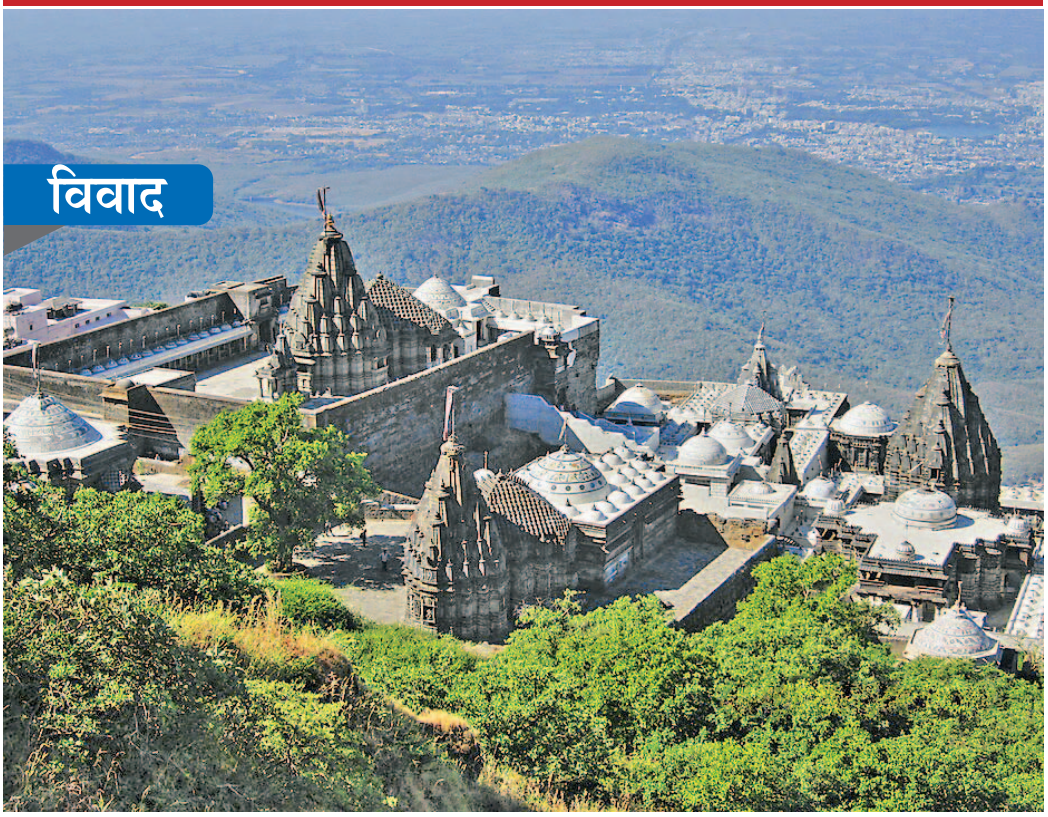
Brand Solitaire available on GeM

GeM Government e Marketplace

@SolitaireProducts | @SOLITAIRE IFPD & UC Products | @Solitaire Products | @solitaire_products

गिरनार पर्वत पर नेमीनाथ और दत्तात्रेय विवाद क्यों ?

गिरनार पर्वत पर नेमीनाथ और दत्तात्रेय विवाद क्यों ?



गिरनार पर्वत (गुजरात) भारत का एक प्राचीन और पवित्र स्थल है, जो जैनों और हिन्दुओं दोनों के लिए अत्यंत श्रद्धा का केंद्र रहा है। जैन परंपरा में यह तीर्थ भगवान नेमिनाथ की निर्वाण स्थली मानी जाती है, जो तीर्थंकरों में 22वें थे। वहीं, हिन्दू परंपरा में यह स्थल दत्तात्रेय की तपोभूमि मानी जाती है। वर्षों से यहाँ धार्मिक सह-अस्तित्व था, परंतु हाल के दशकों में यह द्वंद्व और विवाद का केंद्र बन गया है, विशेष रूप से गिरनार की प्रथम टोंक को लेकर।

नेमीनाथ भगवान और गिरनार का संबंध:

जैन ग्रंथों के अनुसार, भगवान नेमिनाथ ने गिरनार पर्वत पर दीक्षा ली थी और यहीं पर उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया। इस पर्वत पर जैनों के लिए कुल टोंक (चरण स्थल) बनाए गए हैं, जिनमें प्रथम टोंक को सबसे पवित्र माना जाता है क्योंकि वहीं नेमिनाथ भगवान के चरण विराजमान हैं।

पुरातत्व गजट बंबे प्रसिडेंसी (1884) में स्पष्ट उल्लेख है कि पहली टोंक पर एक छोटी सी गुफा है, जिसमें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ के 'चरण पदुका' स्थित हैं। उस गजट में दत्तात्रेय की कोई मूर्ति या मूर्तिरूप का उल्लेख उस काल तक प्रथम टोंक पर नहीं मिलता। इसका स्पष्ट संकेत है कि प्रथम टोंक मूलतः जैन परंपरा की है।

दत्तात्रेय की मूर्ति और विवाद की शुरूआत

हिंदू परंपरा में दत्तात्रेय भगवान को त्रिदेव का स्वरूप माना जाता है। गिरनार पर्वत के शिखर पर दत्तात्रेय से जुड़ी श्रद्धा और कथा लंबे समय से मौखिक रूप में प्रचलित रही हैं, परंतु मूर्ति रूप में दत्तात्रेय की स्थापना बाद के काल में हुई।

पुरातत्विक रेकॉर्ड्स और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अनुसार, दत्तात्रेय की वर्तमान प्रतिमा प्रथम टोंक पर 19वीं सदी के उत्तरार्ध या 20वीं सदी के प्रारंभ में किसी स्थानीय पहल या हिंदू संप्रदाय द्वारा स्थापित की गई थी। इससे पहले केवल जैन प्रतीक-चरण और शिलालेख मौजूद थे।

ऐतिहासिक गवाहियां

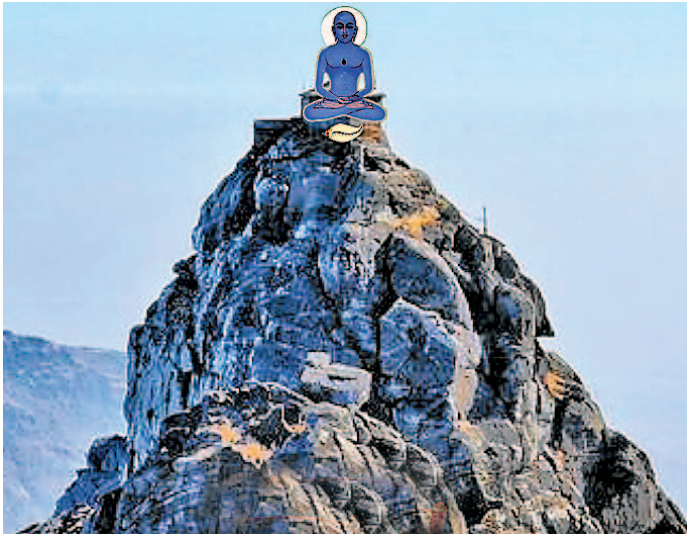
कैथियावाड़ गजट (1884) तथा जैन समाज द्वारा प्रकाशित तीर्थमालाएँ स्पष्ट रूप से बताती हैं कि गिरनार की पहली टोंक पर मूलतः केवल चरण पादुका थीं।

जैन संघों द्वारा 18वीं और 19वीं सदी में गिरनार यात्रा पर निकाले गए यात्रा-वृत्तांतों में भी प्रथम टोंक पर नेमिनाथ के चरणों का ही उल्लेख है।

ब्रिटिश आर्कियोलॉजिकल सर्वे की रिपोर्टों में प्रथम टोंक के पास किसी 'हिंदू मूर्ति' का उल्लेख नहीं मिलता। यह प्रमाण है कि वह स्थापना बाद में हुई।

वर्तमान विवाद का स्वरूप:

आज गिरनार के प्रथम टोंक पर नेमिनाथ भगवान के चरणों के साथ-साथ दत्तात्रेय भगवान की मूर्ति भी रखी गई है, जो धार्मिक संघर्ष और सामाजिक तनाव का कारण बन गई है। जैन समाज का कहना है कि यह उनकी निर्वाण स्थली है, जहां मूर्ति पूजा नहीं, केवल चरण वंदना की जाती है।



हिंदू पक्ष दत्तात्रेय की परंपरा और प्रचलित मान्यताओं के आधार पर दावा करता है कि यह उनका मूल स्थान है।

न्यायिक और सांस्कृतिक पहलू

जैन समाज ने कई बार यह मांग की है कि एएसआई और पुरातत्व विभाग द्वारा ऐतिहासिक सत्यापन हो और दत्त मूर्ति को हटाया जाए, ताकि प्रथम टोंक की मूल स्थिति पुनः बहाल हो। सांस्कृतिक इतिहासकारों का मानना है कि ऐसे तीर्थों पर दोनों समुदायों की भावना का सम्मान हो, परंतु ऐतिहासिक और पुरातात्विक प्रामाणिकता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

गिरनार पर्वत भारत के सांस्कृतिक समावेश का एक सुंदर प्रतीक रहा है, परंतु अब यह एक धार्मिक विवाद का रूप ले रहा है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार, नेमीनाथ भगवान के चरण इस स्थल पर प्राचीनतम हैं और दत्तात्रेय की मूर्ति की स्थापना अपेक्षाकृत नई है। यह समय की आवश्यकता है कि पुरातत्व विभाग और न्यायपालिका इस तथ्य को गंभीरता से लें और तीर्थों की पवित्रता और ऐतिहासिकता को संरक्षित करें।


GANESH
COMPLEX
THE PERFECT WAREHOUSE
& INDUSTRIAL SPACE
FOR YOUR EXPANDING
BUSINESS
GANESH COMPLEX
EASTERN INDIA'S
LARGEST
INDUSTRIAL SPACE
PROVIDER
Trusted by Industry Leaders
SCAN TO
BOOK NOW
amazon
DAMRO
Dabur
Jio Mart
Reliance
Industries Limited
PRAN
HUGGIES
DHL
Prestige
kirloskar
On-time plot delivery | End-to-end after-sales support | Competitive pricing
Ranihati Gate 1
Ranihati Gate 2
Raghudevpur, Panchla
Uluberia
9903-632-200 | 9932-686-183
Kolkata NH- 6, Bombay Road, Raghudebpur, Panchla, Howrah-711322
ganeshcomplex.in

पड़ताल

देश के आर्थिक विकास की रीढ़ है मारवाड़ी समुदाय



रश्मि सिंह
दिल्ली

19वीं शताब्दी में दिल्ली, पंजाब ,जयपुर और बीकानेर के राजाओं ने अपने राज्यों में आर्थिक समृद्धि के लिए मारवाड़ी समुदाय को अनेक रियायतें देकर निवेश के लिए आमंत्रित किया क्योंकि वे जानते थे कि मारवाड़ियों के बिना उनके राज्य में आर्थिक सम्पन्नता नहीं आ सकती।



मारवाड़ी समुदाय ने भारत की अर्थव्यवस्था में व्यापार, उद्योग और वित्त के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह समुदाय, जो राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र से आया है, उद्यमशीलता, वित्तीय प्रबंधन और जोखिम लेने की क्षमता के लिए जाना जाता है। इन्होंने पूरे देश में व्यापारिक और औद्योगिक विकास को बढ़ावा दिया है, जिससे आर्थिक विकास में योगदान मिला है।

व्यापार और वाणिज्यः मारवाड़ी समुदाय पारंपरिक व्यापारिक गतिविधियों और वाणिज्य के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में प्रभावशाली रहा है। इस समुदाय के लोग अपनी उद्यमशीलता की भावना के लिए जाने जाते हैं और देश के विभिन्न हिस्सों और यहां तक कि विदेशों में भी व्यवसाय स्थापित करने के लिए चले गए हैं। उन्होंने कपड़ा, जूट, कोयला, कृषि उत्पाद, बैंकिंग और अन्य क्षेत्रों में पारंपरिक व्यवसायों से आगे बढ़कर औद्योगिक निवेश भी किया है। वे उत्कृष्ट वित्तीय प्रबंधन और निवेश की गहरी समझ के लिए जाने जाते हैं, जिससे उन्होंने अपनी संपत्ति का प्रबंधन और वृद्धि की है। मारवाड़ी उद्यमियों ने स्थानीय स्तर पर उद्योग और व्यवसाय स्थापित कर-के रोजगार के व्यापक अवसर पैदा किए हैं। सीमित खर्च और बचत की आदत के साथ-साथ धर्मार्थ संस्थाओं के माध्यम से, उन्होंने पूंजी संचय में

इस समुदाय के लोग अपनी उद्यमशीलता के लिए जाने जाते हैं और देश के विभिन्न हिस्सों और यहां तक कि विदेशों में भी व्यवसाय कर रहे हैं। उन्होंने कपड़ा, जूट, कोयला, कृषि उत्पाद, बैंकिंग और अन्य क्षेत्रों में पारंपरिक व्यवसायों से आगे बढ़कर औद्योगिक निवेश भी किया है।

योगदान दिया है, जिससे समुदाय और समाज को लाभ हुआ।



19 वीं शताब्दी में दिल्ली ,पंजाब ,जयपुर और बीकानेर के राजाओं ने अपने राज्यों में आर्थिक समृद्धि के लिए मारवाड़ी समुदाय को अनेक रियायतें देकर निवेश के लिए आमंत्रित किया क्योंकि वे जानते थे कि मारवाड़ियों के बिना उनके राज्य में आर्थिक सम्पन्नता नहीं आ सकती। मारवाड़ी ईमानदारी का व्यवसाय करते हैं और अपनी संस्कृति और मूल्यों के प्रति पूरी तरह समर्पित रहते हैं। मारवाड़ी समुदाय के लोग जहां भी बसे उन्होंने वहां पूरे समाज का उत्थान किया है। वर्ष 1911 में बंगाल में 11,000 मारवाड़ी बसे थे और उन्होंने मुम्बई और हैदराबाद में कालीन उद्योग में गहरी पैठ स्थापित की। मारवाड़ी समाज ने आर्थिक संपन्नता के साथ साथ समाज सेवा के क्षेत्र में भी अमिट छाप छोड़ी है । साथ ही उन्होंने अस्पताल, स्कूल, सहित समाज कल्याण के लिए अनेक संस्थानों की स्थापना की जिससे समाज के सभी वर्गों को फायदा मिला।

मारवाड़ी लोग मूल रूप से विशेष रूप से, जयपुर, सीकर, झुंझुनू, रैली, पाली, जालौर, नागौर और कुछ अन्य आसपास के क्षेत्रों में रहते हैं। मारवाड़ी संस्कृत शब्द मारुवत, मारू 'रेगिस्तान' का अर्थ होने से इसे मारूवत माना जाता है। व्यापारियों का मानना है कि यह शब्द मारवा मार्च के आमेर और मेवाड़ के पिछले भाग युद्ध के



वैकल्पिक नाम से बनाया गया है।

भारत की स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम (1857-1858) के बाद, जब सामाजिक और राजनीतिक अशांति थी, तो मारवाडी बड़े पैमाने पर दूसरे राज्यों में जाने लगे। प्रवासी मारवाडी भारत के कई क्षेत्रों में फैले हुए हैं और यहां तक कि पड़ोसी देशों व दूसरे देशों में भी अपने व्यवसाय और व्यापार नेटवर्क का विस्तार करते आ रहे हैं। एक ओर, मारवाड़ी आर्थिक गतिविधियों ने ब्रिटिश आर्थिक शक्ति को मजबूत करने में मदद की। लेकिन दूसरी ओर, प्रारंभ में मारवाड़ी सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े माने जाते थे। फिर भी, कलकत्ता के शुरूआती मारवाड़ियों ने हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया। भारत का सबसे पुराना हिंदी समाचार पत्र, उदंड मार्तंड, 1826 में कलकत्ता से प्रकाशित होना शुरू हुआ। 19वीं सदी के अंत में, भारत में मारवाड़ी व्यापारियों द्वारा वित्तपोषित 20 से ज्यादा हिंदी समाचार पत्र थे।

मारवाड़ी समुदाय ने परोपकार के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बिड़ला परिवार परोपकारी कार्यों में मारवाड़ियों में अग्रणी है। बिड़ला मंदिर भारतीय शहरों के प्रमुख स्थल बन गए हैं। इसके अलावा, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और शिक्षा के प्रमुख संस्थानों में बिड़ला परिवार का योगदान अभूतपूर्व है। राष्ट्रवादी आंदोलन में बिड़ला परिवार की भागीदारी, विशेष रूप से जीडी बिड़ला की महात्मा गांधी से निकटता, सर्वविदित है।

लेकिन बंगाल में एक मारवाड़ी परिवार ऐसा भी है जिसका राष्ट्रवादी आंदोलन और सामाजिक उत्थान, खासकर महिलाओं के उत्थान में योगदान अब गुमनामी में जा रहा है। सीताराम सेक्सरिया अग्रणी सुधारवादी मारवाड़ी नेताओं में से एक थे, जिन्हें महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है, जिसमें 1954 में श्री शिक्षायतन की स्थापना भी शामिल है। भागीरथ कनोड़िया के साथ मिलकर सीताराम ने 1920 में मारवाड़ी बालिका विद्यालय की स्थापना की थी। उन्हें रूढ़िवादी मारवाड़ी माता-पिता से अपनी बेटियों को स्कूल भेजने के लिए विनती करनी पड़ी थी। 1930 के दशक में, विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करने के कारण सीताराम को समाज से बहिष्कृत कर दिया गया और उन्हें बड़ाबाजार छोड़ने पर मजबूर कर दिया गया। सीताराम की पत्नी, जो सविनय अवज्ञा के कारण जेल गईं, के अलावा मारवाड़ी महिला स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बहुत कम जानकारी है। इंदुमती गोयनका बंगाल में इस मामले में जेल जाने वाली पहली महिला थीं। उन्होंने न केवल खादी को बढ़ावा दिया, बल्कि पर्दा प्रथा और दहेज प्रथा के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए महिला शिक्षा और विधवा विवाह का भी समर्थन किया।



इतना संपन्न क्यों है मारवाड़ी समुदाय ?



अमित सेठ



मारवाड़ी व्यवसायी अपनी बातचीत कौशल के लिए जाने जाते हैं। वित्त की गहरी समझ और दूसरे पक्ष के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता के साथ, वे पारस्परिक रूप से लाभकारी सौदे करने में माहिर होते हैं।

अक्सर लोग पूछते हैं कि मारवाड़ी समुदाय के लोग इतने संपन्न क्यों होते हैं? असल में उनकी कुछ खासियतें उन्हें व्यापार में सफल बनाती हैं। राजस्थान मूल के उद्यमी मारवाड़ी व्यापारिक समुदाय की कुछ खास विशेषताएं हैं। मारवाड़ी समुदाय अपनी उद्यमशीलता की भावना के लिए विश्व स्तर पर जाना जाता है।

अपनी उद्यमशीलता क्षमता के लिए जाने जाने वाले, मारवाड़ियों ने भारत के व्यावसायिक परिदृश्य में एक विशिष्ट स्थान बनाया है, और उनका विशिष्ट व्यक्तित्व उन्हें दूसरों से अलग करता है।

उनकी अनुकूलनशीलता, लचीलापन और सहज व्यावसायिक कौशल ने पारंपरिक व्यापार और विनिर्माण से लेकर वित्त, रियल एस्टेट और आधुनिक स्टार्टअप तक, विविध क्षेत्रों में अनगिनत व्यवसायों की सफलता में योगदान दिया है।

यह लेख मारवाड़ी व्यापारिक समुदाय के अद्वितीय व्यक्तित्व लक्षणों और इन विशेषताओं ने उनकी सफलता की कहानी को कैसे आकार दिया है, इसकी पड़ताल करता है।

सावधानी से जोखिम उठाना

मारवाड़ी अपनी सोची-समझी जोखिम उठाने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं। उच्च जोखिम वाले जुए के विपरीत, मारवाड़ी व्यवसायी एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हैं, जो बाजारों, रुझानों की गहन समझ और पीढ़ियों से विकसित एक स्वस्थ अंतर्ज्ञान पर निर्भर करता है। इस दृष्टिकोण ने उन्हें आकर्षक अवसरों का लाभ उठाने, वित्तीय मंदी का सामना करने और असफलताओं के बाद मजबूती से उभरने में मदद की है। वे शायद ही कभी आवेगपूर्ण निर्णय लेते हैं, बल्कि संभावित लाभ और हानि का पूरी तरह से आकलन करना पसंद करते हैं, जिससे उन्हें स्थिर और स्थायी व्यावसायिक प्रथाओं की प्रतिष्ठा मिलती है।

अनुकूलनशीलता और संसाधनशीलता

मारवाड़ी व्यवसायियों की एक और विशिष्ट विशेषता अनुकूलनशीलता है। इस समुदाय का प्रवास का एक लंबा इतिहास रहा है, मारवाड़ी बेहतर अवसरों की तलाश में अपनी शुष्क मातृभूमि से भारत के विभिन्न हिस्सों और अन्य जगहों पर स्थानांतरित होते रहे हैं। इस प्रवास ने उनमें अनुकूलनशीलता का एक प्रभावशाली स्तर विकसित किया है। आज, मारवाड़ी मुंबई और कोलकाता जैसे व्यस्त शहरों से लेकर दुबई और न्यूयॉर्क जैसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केंद्रों तक पहुंच बनाये हुए हैं। स्थानीय संस्कृतियों, भाषाओं और बाजारों के साथ अनुकूलन करने की उनकी क्षमता उनकी सफलता का एक प्रमुख कारण रही है।

मितव्ययिता और वित्तीय अनुशासन

मितव्ययिता मारवाड़ी व्यावसायिक मानसिकता में गहराई से समाहित है। अक्सर मितव्ययी माने जाने वाले, मारवाड़ी अपव्यय को कम करने और दक्षता को अधिकतम करने में विश्वास करते हैं। यह मितव्ययिता कंजूसी नहीं दशार्ती, बल्कि, यह वित्त के प्रति एक अनुशासित दृष्टिकोण को दशार्ती है, जो यह सुनिश्चित करता है कि संसाधनों का आवंटन बुद्धिमानी से और केवल वहीं किया जाए जहां वे सर्वोत्तम लाभ उत्पन्न कर सकें। बचत और मुनाफे के पुनर्निवेश पर उनके ध्यान ने उन्हें पीढ़ियों तक स्थायी व्यावसायिक साम्राज्य बनाने, वित्तीय स्थिरता और लचीलापन सुनिश्चित करने में सक्षम बनाया है।

समुदाय और परिवार-केंद्रित मूल्य

मारवाड़ी व्यावसायिक समुदाय के लिए, परिवार उनके संचालन का केंद्रबिंदु है। अधिकांश मारवाड़ी व्यवसाय पारिवारिक स्वामित्व वाले होते हैं और साझा जिम्मेदारी और विश्वास की भावना से संचालित होते हैं। पारिवारिक मूल्य व्यावसायिक निर्णयों में शामिल होते हैं, जो निष्ठा और दीर्घकालिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं। मारवाड़ी अक्सर अपने व्यावसायिक कदम उठाते समय अपने पूरे परिवार, जो उनके बड़े समुदाय तक फैला हुआ है, के कल्याण पर विचार करते हैं। इस घनिष्ठ दृष्टिकोण ने पीढ़ियों से मारवाड़ी विरासत को संरक्षित करने में मदद की है और नेतृत्व और मूल्यों में निरंतरता सुनिश्चित की है।

मजबूत नेटवर्किंग और संबंध-निर्माण

मारवाड़ी असाधारण नेटवर्कर होते हैं। वे संबंधों को अत्यधिक महत्व देते हैं और अक्सर विशाल नेटवर्क बनाते हैं, जो उन्हें अपनी व्यावसायिक पहुंच का विस्तार करने में सक्षम बनाते हैं। यह नेटवर्किंग क्षमता अक्सर उन्हें व्यावसायिक बातचीत और साझेदारी में बढ़त दिलाती है, क्योंकि लेन-देन में विश्वास और सद्भावना सबसे पहले आती है।

ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण

मारवाड़ी व्यवसाय दर्शन ग्राहकों को सभी कार्यों के केंद्र में रखने पर जोर देता है। वे ग्राहकों की जरूरतों के आधार पर अपनी पेशकशों को ढालने और दीर्घकालिक ग्राहक संबंध बनाने के लिए जाने जाते हैं। यह ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि मारवाड़ी व्यवसायों को उच्च स्तर की ग्राहक निष्ठा और विश्वसनीयता के लिए एक मजबूत प्रतिष्ठा प्राप्त हो। मारवाड़ी समझते हैं कि एक संतुष्ट ग्राहक सबसे मूल्यवान संपत्ति है, जिससे बार-बार व्यापार और रेफरल मिलते हैं।

परोपकार और सामाजिक कल्याण के प्रति जुनून

मारवाड़ी अक्सर अपनी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा परोपकारी कार्यों के लिए समर्पित करते हैं। मारवाड़ी समुदाय

शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक कल्याण में अपने योगदान के लिए जाना जाता है और वंचित समुदायों के उत्थान से जुड़ी पहलों का समर्थन करता है। समाज को कुछ देकर, मारवाड़ी न केवल अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखते हैं, बल्कि सद्भावना भी बढ़ाते हैं, जिससे उनकी व्यावसायिक प्रतिष्ठा और उनके समुदायों के बीच संबंधों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बातचीत का मजबूत कौशल

मारवाड़ी व्यवसायी अपनी बातचीत कौशल के लिए जाने जाते हैं। वित्त की गहरी समझ और दूसरे पक्ष के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता के साथ, वे पारस्परिक रूप से लाभकारी सौदे करने में माहिर होते हैं। यह गुण अक्सर उनके धैर्य और दृढ़ता से पूरित होता है।

लचीलापन और दृढ़ता

मारवाड़ी व्यावसायिक यात्रा यह लचीलेपन की कहानियों से भरा पड़ा है। वे व्यवसाय को दीर्घकालिक दृष्टिकोण से देखते हैं, जिससे वे अस्थायी असफलताओं का सामना कर पाते हैं। मारवाड़ी उद्यमी चुनौतियों का सामना करने के लिए दृढ़ संकल्पित होते हैं और उनका आशावादी दृष्टिकोण उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

मारवाड़ी अपनी जोखिम उठाने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं। उच्च जोखिम वाले जुए के विपरीत, मारवाड़ी व्यवसायी एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हैं, जो बाजारों, रुझानों की गहन समझ और पीढ़ियों से विकसित एक स्वस्थ अंतर्ज्ञान पर आधारित है।





सात दशकों से ब्रिगेड मैदान में योग की अलख जगा रहा यौगिक संघ, हजारों लोगों को दे रहा स्वस्थ जीवन का संदेश



कोलकाता के ब्रिगेड परेड मैदान में पिछले सात दशकों से यौगिक संघ निरंतर योग की परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। प्राकृतिक सौंदर्य, हरियाली और स्वच्छ वायु से घिरे इस विशाल मैदान में हर दिन सुबह की प्राण-संजीवनी बेला में सैकड़ों साधक एकत्र होकर योगाभ्यास करते हैं। यह स्थल न केवल कोलकाता, बल्कि पूरे देश में योग साधना के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में अपनी पहचान बना चुका है।

प्राकृतिक वातावरण में संपूर्ण योग साधना की व्यवस्था

यौगिक संघ अभ्यास क्षेत्र एक विशिष्ट और सुव्यवस्थित स्थान है, जहां औषधीय वृक्षों की छांव में योगासन, प्राणायाम और सूक्ष्म व्यायाम अनुभवी प्रशिक्षकों की देखरेख में कराए जाते हैं। यहां केवल सामान्य योगाभ्यास ही नहीं, बल्कि शरीर की शुद्धि के लिए जलनेति, सूत्रनेति और कुंजल जैसी पारंपरिक योग क्रियाओं को सिखाने और करने की भी व्यवस्था है। साधकों को स्वास्थ्यवर्धक आहार के रूप में अंकुरित चना उपलब्ध कराया जाता है, जो शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है और योग के प्रभाव को और अधिक बढ़ाता है।



महान संतों और योग गुरुओं का रहा सान्निध्य

इस पुण्य कार्य की शुरूआत ब्रह्मलीन स्वामी हरिभक्त जी चैतन्य और धीरेन्द्र ब्रह्मचारी द्वारा की गई थी। उनके प्रयासों से यह स्थान धीरे-धीरे योग साधना का केंद्र बन गया। समय-समय पर यहां महेश योगी, स्वामी रामसुखदास, सुशील मुनि जी महाराज और बाबा रामदेव जैसी महान विभूतियों ने स्वयं उपस्थित होकर योग शिक्षा दी और अपने प्रेरणादायक उपदेशों से साधकों का मार्गदर्शन किया। इन महान हस्तियों की उपस्थिति ने यौगिक संघ को और अधिक प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता प्रदान की है।

डॉ. एच. आर. नागेंद्र का जुड़ना बना नई ऊर्जा का स्रोत

परंपरा को आगे बढ़ाते हुए गत वर्ष प्रसिद्ध योग वैज्ञानिक डॉ. एच. आर. नागेंद्र का नाम यौगिक संघ से जुड़ने से संस्था गौरवान्वित हुई है। इन्हें भारत सरकार ने योग और सामाजिक कार्य के लिए पद्मश्री पुरस्कार से अलंकृत किया है। इन्होंने NASA Space Fligh Centre से शुरूआत की तत्पश्चात वहां छोड़कर Swami Vivekanand Yoga Anusandhan Samsthana, S-VYASA बैंगलोर की स्थापना कर योगासन, प्राणयाम, ध्यान पर शोध कार्य कर रहे हैं।उनका जुड़ाव इस संस्था को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नई दिशा प्रदान कर रहा है।

आधुनिक जीवनशैली में योग की बढ़ती आवश्यकता

आज के दौर में भौतिक सुविधाओं के बावजूद लोगों का स्वास्थ्य लगातार गिरता जा रहा है। शुद्ध वातावरण, संतुलित आहार और नियमित दिनचर्या के अभाव में शरीर और मन दोनों प्रभावित हो रहे हैं। मानसिक तनाव, चिंता और असंतुलित जीवनशैली के कारण कई बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे समय में योग एक सशक्त माध्यम के रूप में सामने आया है, जो शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करता है।

सादा जीवन, उच्च विचार की परंपरा को बढ़ावा

यौगिक संघ केवल योग सिखाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों को एक संतुलित और सादा जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करता है। संस्था का मानना है कि सादा जीवन, उच्च विचार ही स्वस्थ और सुखी जीवन की कुंजी है। जहां पहले लोग मौसम के अनुसार जीवनशैली अपनाते थे और प्राकृतिक भोजन करते थे, वहीं आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से जीवनशैली में असंतुलन आ गया है। इस रैट-रेस ने लोगों की मानसिक शांति को भी प्रभावित किया है।

स्वास्थ्य जागरूकता का मजबूत केंद्र

इन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में यौगिक संघ एक हरे-भरे उपवन की तरह कार्य कर रहा है। यह संस्था न केवल अपने सदस्यों के स्वास्थ्य में सुधार लाने में मदद कर रही है, बल्कि उनके माध्यम से समाज के अन्य लोगों को भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर रही है। यहां यह संदेश दिया जाता है कि यदि हम अपने 24 घंटों में से केवल एक घंटा भी अपने शरीर और स्वास्थ्य के लिए दें, तो हम कई बीमारियों से बच सकते हैं। कोलकाता का यह ऐतिहासिक योग केंद्र आज भी हजारों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। सात दशकों से चली आ रही यह परंपरा न केवल योग को जीवित रखे हुए है, बल्कि समाज को स्वस्थ, संतुलित और सकारात्मक जीवन जीने की दिशा भी दिखा रही है।



यौगिक संघ

कनक बिल्डिंग 41, चौरंगी रोड, कोलकाता - 700016

75 YEARS

स्वास्थ्य, साधना और समरसता का संगम



योग का संदेश

योग का मतलब है जोड़ना-यौगिक संघ जन-जन को योग से जोड़ने के लिए लम्बे अर्से से प्रयत्नशील है। अतः शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक लाभ के लिए यौगिक संघ से जुड़ने का आह्वान किया जाता है।

सम्पर्क सूत्र :

नरेश गनेड़ीवाला : 9830269999 | रतन खरकिया : 9903062988
संतोष सराफ : 9831271251 | गोपाल अग्रवाल : 9830066525

'विन पेन्स' : तूफानों के बीच अडिग, अटल

कीमतों के निरंतर दबाव और बिगड़ते बैलेंस शीट की मार झेल रहे छोटे निमार्ता अस्तित्व बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। बड़े ब्रांड अपने वितरण तंत्र को और मजबूत कर रहे हैं, जबकि मध्यम स्तर के खिलाड़ियों के सामने या तो तेजी से विकास या पीछे हटने का कठिन विकल्प है।

स्टेशनरी उद्योग में जहाँ आज गलाकाट प्रतिस्पर्धा और कीमतों की जंग छिड़ी है, वहीं विन पेन्स ने एक अलग राह चुनी है। 250 करोड़ रुपये से अधिक के राजस्व तक पहुंचने का उनका सफर "तेजी" पर नहीं, बल्कि "ठहराव और अनुशासन" पर टिका है। संस्थापक नरेश जालान का मानना है कि व्यापार में शॉर्टकट नहीं, बल्कि सिस्टम की मजबूती मायने रखती है। जब बाजार में उथल-पुथल हो, तो केवल वही ब्रांड टिकते हैं, जो गुणवत्ता से समझौता नहीं करते। जब किसी उद्योग में कीमतों को लेकर छिड़ी जंग अपना असर दिखाती है, तो सबसे पहले शांत बैठे रहने वाले खिलाड़ी ही इसका शिकार होते हैं। भारत का स्टेशनरी क्षेत्र बढ़ती लागत, भारी छूट और एकीकरण (कॉन्सिलिडेशन) के दबाव से जूझ रहा है और वहां टिके रहना रफ्तार पर नहीं, बल्कि स्टैमिना पर निर्भर करती है। विन पेन्स प्राइवेट लिमिटेड आज खुद को इसी स्थिति में पाता है।

2005 में स्थापित और कोलकाता में मुख्यालय वाली यह लेखन उपकरण निमार्ता कंपनी पिछले कुछ वर्षों में लगातार बढ़ी है और घरेलू व अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। लेकिन इसके संस्थापक नरेश जालान का कहना है कि उनकी यात्रा कभी भी केवल दिखावे के लिए बड़े पैमाने पर विस्तार करने की नहीं रही है।

श्री जालान कहते हैं, "यह व्यवसाय शॉर्टकट से नहीं फलता-फूलता। आप एक या दो साल के लिए तेजी से बढ़ सकते हैं, लेकिन यदि आपकी प्रणालियां मजबूत नहीं हैं, तो बाजार अंततः आपको अपनी सही जगह दिखा देता है।" पूरे उद्योग में अब यह 'सुधार' का दौर चल रहा है। कीमतों के निरंतर दबाव और बिगड़ते बैलेंस शीट की मार झेल रहे छोटे निमार्ता अस्तित्व बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। बड़े ब्रांड अपने वितरण तंत्र को और मजबूत कर रहे हैं, जबकि मध्यम स्तर के खिलाड़ियों के सामने या तो तेजी से विकास या पीछे हटने का ही कठिन विकल्प है।



विन पेन्स ने एक तीसरा रास्ता चुना है: बिना घबराहट के सुदृढ़ीकरण पर जोर देना। अपने शुरूआती वर्षों में, कंपनी मुख्य रूप से एक मार्केटिंग ब्रांड के रूप में काम करती थी, जहां उसने कम मार्जिन और अधिक वॉल्यूम वाले व्यापार की बारीकियों को सीखा। समय के साथ, इसने विनिर्माण (मैन्यूफैक्चरिंग) के क्षेत्र में कदम रखा और बेसिक बॉल पेन से लेकर जेल पेन, मेटल पेन और विशेष लेखन उपकरणों तक अपने उत्पादों का विस्तार किया। इसके बाद निर्यात शुरू हुआ, जिसने लैटिन अमेरिका, मध्य पूर्व, यूरोप और दक्षिण पूर्व एशिया के बाजारों के दरवाजे खोल दिए।

फिर भी श्री जालान इस बात पर जोर देते हैं कि विस्तार (ग्रोथ) कभी भी प्राथमिक उद्देश्य नहीं था। वे कहते हैं, "हमारा ध्यान हमेशा निरंतरता पर था। यदि कोई ग्राहक आज हमे ऑर्डर करता है, तो वही उत्पाद उसे पांच साल बाद भी उसी या उससे अच्छी गुणवत्ता के साथ मिलना चाहिए। यह अनुशासन सुर्खियों में रहने से कहीं अधिक मायने रखता है।"

रणनीति और प्रभाव

उनकी यह सोच अब रंग ला रही है। जैसे-जैसे प्रतिस्पर्धा तेज हुई है, विन पेन्स ने अस्थिर किस्म की छूट देने के लालच से खुद को बचाए रखा है। इसके बजाय, कंपनी ने परिचालन दक्षता, आपूर्तिकताओं के साथ संबंधों और चुनिंदा वैराइटियों के विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया है, हमने उन क्षेत्रों से हाथ पीछे खींच लिए हैं जहाँ मार्जिन अब तर्कसंगत नहीं रह गया था। उद्योग के जानकारों का कहना है कि इस दृष्टिकोण ने कंपनी को उन झटकों को सहने में मदद की है जो कमजोर खिलाड़ियों के लिए घातक साबित हो रहे हैं। कई ब्रांडों के साथ काम कर चुके एक वितरक का कहना है, "कई व्यवसाय केवल उधारी और उम्मीदों पर बढ़े। अब जब बाजार सिमट रहा है, तो केवल वही बच रहे हैं, जिनका अपनी लागत और अपेक्षाओं पर नियंत्रण है।"

एक बेहतर कार्यसंस्कृति

संगठन के भीतर, आक्रामक संदेशों के बजाय बेहतर व शांत निष्पादन पर जोर दिया गया है। कर्मचारी इसे एक ऐसी संस्कृति बताते हैं, जो ड्रामे के बजाय स्थायित्व को महत्व देती है। टीम के एक वरिष्ठ सदस्य के अनुसार, "दबाव तो है ही, लेकिन निर्देश स्पष्ट हैं—सिर्फ विकास दिखाने के लिए सिस्टम को मत तोड़ो।" वित्तीय रूप से, विन पेन्स ने हाल के वर्षों में बिना किसी शोर-शराबे के 250 करोड़ रुपये से अधिक के राजस्व का आंकड़ा पार कर लिया है। कंपनी सैकड़ों लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार देना जारी रखे हुए है और डीलरों, वितरकों व आपूर्तिकताओं के एक व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करती है।

जैसे-जैसे स्टेशनरी क्षेत्र एकीकरण की ओर बढ़ रहा है, जालान का मानना है कि लचीलापन ही अगले दौर के विजेताओं को परिभाषित करेगा। वे कहते हैं, "हर उद्योग इस चक्र से गुजरता है। जब चीजें मुश्किल होती हैं, तो बाजार उन्हीं को पुरस्कृत करता है जिन्होंने अच्छे समय के दौरान अनुशासन बनाए रखा।" दैनिक जीवन की एक साधारण वस्तु (पेन) के इर्द-गिर्द बनी कंपनी के लिए यह सबक बिल्कुल सटीक लगता है। पेन चकाचौंध पैदा करने के लिए नहीं होते; वे लंबे समय तक चलने, भरोसेमंद होने और खामोशी से अपनी उपयोगिता निभाने के लिए होते हैं। शोर से भरे बाजार में, विन पेन्स इस बात पर दांव लगा रहा है कि तमाशे से ज्यादा सहनशक्ति मायने रखेगी।

उल्लेखनीय है कि इंडियन पेन इंडस्ट्री एक मजबूत और बढ़ता हुआ सेक्टर है, जिसकी वैल्यू 8000 करोड़ रुपये से ज्यादा है और यह हर साल 8-10% की दर से बढ़ रहा है। इसकी वजह बढ़ती साक्षरता, स्टूडेंट्स की बढ़ती संख्या और ब्रांडेड, प्रीमियम और फंक्शनल प्रोडक्ट्स की बढ़ती डिमांड है। मार्केट में बॉलपॉइंट पेन (68-72% शेयर) का दबदबा है, जेल और रोलरबॉल सेगमेंट में काफी ग्रोथ हुई है, जो काफी हद तक अनऑर्गनाइज्ड सेक्टर से ऑर्गनाइज्ड, कॉम्पिटिटिव ब्रांडिंग की ओर बढ़ रहा है।



राम और हनुमान एक दूसरे के बिना अधूरे

हिंदू धर्म में रामनवमी और हनुमान जयंती दोनों ही पर्वों का गहरा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। ये त्योहार न केवल देवताओं के जन्म का उत्सव हैं, बल्कि अधर्म पर धर्म की विजय और अटूट भक्ति के प्रतीक भी हैं। रामनवमी 27 मार्च को मनायी गयी और हनुमान जयंती का पालन 2 अप्रैल को किया गया।

रामनवमी का महत्व

रामनवमी चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाई जाती है। इसी दिन भगवान विष्णु ने सातवें अवतार के रूप में मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम के रूप में जन्म लिया था। श्री राम का चरित्र एक आदर्श पुत्र, राजा, पति और भाई की परिभाषा गढ़ता है। रामनवमी हमें सत्य और नैतिकता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।यह दिन चैत्र नवरात्रि का अंतिम दिन भी होता है, जो देवी शक्ति की उपासना की पूर्णता और राम के जन्म के आनंद को जोड़ता है। उत्तर से दक्षिण तक, रामनवमी के दिन रामायण का पाठ, भजन और रथ यात्राएं निकाली जाती हैं, जो भारतीय समाज को एक सूत्र में पिरोती हैं।

हनुमान जयंती का महत्व

हनुमान जयंती चैत्र पूर्णिमा को मनाई जाती है (कहीं-कहीं यह कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को भी मनाई जाती है)। हनुमान जी को भगवान शिव का 11वां रुद्रावतार माना जाता है। हनुमान जी साहस, शक्ति और बुद्धिमत्ता के प्रतीक हैं। उनकी पूजा से भक्तों में भय का नाश होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। हनुमान जी का जीवन सिखाता है कि बिना किसी अहंकार के अपने आराध्य (ईश्वर) के प्रति पूर्ण समर्पण और सेवा ही वास्तविक भक्ति है। उन्हें 'संकटमोचन' कहा जाता है। मान्यता है कि उनकी उपासना से जीवन की बड़ी से बड़ी बाधाएं और नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जाती है।

दोनों पर्वों का अंतसंबंध

राम और हनुमान का संबंध स्वामी और सेवक का सबसे सुंदर उदाहरण है। 'बिनु हनुमान राम नहीं, बिनु राम हनुमान नहीं'—अर्थात रामनवमी के बिना हनुमान अधूरे हैं और हनुमान के बिना राम का काज अधूरा है। हनुमान जयंती रामनवमी के ठीक कुछ दिनों बाद पड़ती है, जो यह संदेश देती है कि जहां धर्म (राम) होगा, वहां शक्ति और सुरक्षा (हनुमान) सदैव विद्यमान रहेगी।

पद की मयार्दा और सरकारी सुविधाएं



डॉ. पारस कोचर, एडवोकेट

पद चाहे सरकारी हो या सामाजिक कार्य से जुड़ी किसी संस्था का, उसकी एक मयार्दा होती है। उसके कुछ नियम होते हैं। उनका सही रूप से पालन करना पदासीन व्यक्ति का धर्म होता है। एक अनुशासन की जंजीर होती है, जिससे बंधा रहना पड़ता है।

पद चाहे सरकारी हो या सामाजिक कार्य से जुड़ी किसी संस्था का, उसकी एक मयार्दा होती है। उसके कुछ नियम होते हैं। उनका सही रूप से पालन करना पदासीन व्यक्ति का धर्म होता है। एक अनुशासन की जंजीर होती है, जिससे बंधा रहना पड़ता है। रकारी अफसर, मंत्री, विधायक, संसद सदस्य, सभी एक श्रेणी में आते हैं। इन लोगों के लिये इनके पद की क्या मयार्दा है, क्या सीमा है, यह सब इनके पद से संबंधित नियमों में लिखा रहता है। यह बात अलग है कि आज के युग में भारत में गिने चुने ही व्यक्ति हैं, जो अपने पद से संबंधित नियमावली का कड़ाई से पालन करते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो ऐसे नियमों को बिल्कुल भी नहीं मानते और कुछ लोग ऐसे हैं जो कुछ-कुछ नियम मानते हैं।

इस लेख में मैं सिर्फ घूस, भ्रष्टाचार आदि की बातें नहीं कर रहा हूं। मेरा तात्पर्य उन नियमों से हैं, जो किसी भी तरह के व्यक्तिगत लाभ लेने से रोकते हैं। इन पदों पर आते ही व्यक्तियों का मुख्य उद्देश्य सभी तरह के फायदे उठाना हो जाता है। वे अपने पदों का दुरुपयोग करते हैं। वे पद पाकर स्वयं को, अपने परिवार को, अपने मित्रों को लाभान्वित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। हर तरह का फायदा उठाना इन लोगों की आदत बन जाती है। इन फायदों की शुरूआत हमारे मंत्रीगण करते हैं, जो सरकार के चपरासी तक अच्छी तरह से सीख जाते है।

सबसे बड़ी बात यह है कि जनता भी इन सब बातों का अनदेखा कर रही है। क्योंकि, उनका भी स्वार्थ निहित है। हर राज नेता अपने ही परिवार वालों को प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्री, या अन्य महत्वपूर्ण पद देता है, चाहे उनमें योग्यता हो या नहीं। सरकारी योजनाओं से जितने भी लाभ मिल सकते हैं, उन्हें उठाते हैं, चाहे उसके लिये ये लोग योग्य हों या नहीं। बड़ी-बड़ी अस्पतालों, शिक्षण संस्थाओं आदि में दाखिला करवाना इनके बाएं हाथ का काम है।

गिने चुने लोग ऐसे भी हैं, जो इस तरह का फायदा बिल्कुल नहीं उठाते। अभी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में ये बातें सामने आ रही हैं कि उन्होंने अपने परिवार को रत्ती भर भी फायदा नहीं पहुंचाया। उनकी मां साधारण घर में रहती थी, उनके छोटे भाई के साथ। इनके भाई भी साधारण स्थिति में हैं।



PRAHLADBHAI MODI VASANTIBEN MODI

एक समाचार पढ़ा कि उनकी इकलौती बहन बनारस के सरकारी अस्पताल में कतार में खड़ी थी, इलाज के लिये। प्रश्न उठता है कि क्या यह सही है? क्या मातृ धर्म निभाना गलत है? क्या इस युग में भी हरिश्चंद्र की तरह पत्नी से बेटे के लिये कफन के लिये पैसा मांगा जा सकता है यानी कि कोई इतना नियम कायदा लेकर चल सकता है? जिस बेटे ने जन्म दिया, वह स्वयं प्रधान मंत्री निवास में सारी सुख सुविधाएं पा रहा है और मां साधारण जीवन निर्वाह कर रही थी। माँ के साथ प्रधान मंत्री निवास में रहना नियम विरुद्ध नहीं है। यदि अपनी बहन का इलाज अपने पैसों से करवाया जाता है तो यह नियम विरुद्ध नहीं है। क्या इन पदों पर आसीन लोगों का परिवार के प्रति कोई कर्त्तव्य नहीं है? सिर्फ राज धर्म ही महत्वपूर्ण है? हाँ, सरकारी सुविधाओं का अपने पद का दुरुपयोग कर नाजायज लाभ उठाना गलत है, किंतु परिवार के लिए कुछ भी न करना भी गलत है।

मैं कुछ सरकारी अफसरों को जानता हूँ, जो इस तरह की सरकारी सेवाएँ तो दूर की बात है, व्यक्तिगत सेवाओं का भी लाभ नहीं उठाना चाहते हैं। एक बार मैं कोलकाता के आयकर विभाग के डी आई साहब के घर मिलने गया था। जब मैं जाने लगा तो उन्होंने मुझे विनम्रता से कहा कि आप मुझे रेलवे रिजर्वेशन काउंटर पर छोड़ देंगे क्या? आपके रास्ते में ही पड़ेगा। मैं आश्चर्यचकित हो गया। रिजर्वेशन काउंटर पर मैं भी गाड़ी से उतर कर उनके साथ चला गया। वे एक कतार में खड़े हो गये। मैंने उनसे आग्रह किया कि मैं उनकी जगह खड़ा हो जाता हूँ। पर वो नहीं माने। मैं सोच रहा था कि उनके एक इशारे पर एक नहीं, अनगिनत टिकट हम लोग बनवा कर दे सकते थे। एक वार एक आयकर विभाग के चीफ कमिश्नर मुझसे मिलने मेरे ऑफिस आये। जब वे जाने लगे तो मैंने उन्हें अपनी गाड़ी में जाने के लिये बहुत आग्रह किया किंतु वे बोले मैं मेट्रो रेल से ही जाऊँगा। ऐसे भी सरकारी अफसर होते हैं। पद की वजह से जो सेवाएँ इन लोगों को मिलती हैं, उनका उपभोग रिश्तेदारी में एक सीमा में रह करना अनुचित नहीं है। आज के इस जमाने में सतयुग की तरह आचरण रखना या राजा हरिश्चन्द्र की तरह कर्तव्य निभाना संभव नहीं है। सिर्फ.राज धर्म निभाना ही जरूरी नहीं है, वरन परिवारवालों की सहायता करना भी कर्तव्य होता है।

मान लीजिये रिश्तेदारी में किसी को एक राजनेता ने परीक्षा में कम अंक होने पर भी डाक्टरी पढ़ाई में नाम लिखवा कर डाक्टर बनवा दिया, किंतु इसके कारण हो सकता है दूसरा छात्र यदि मेधावी भी है, तो वह वंचित रह जायेगा। अतः इस तरह की सिफारिशों से देश का, जनता का भला नहीं होगा। घर की सुख शांति के लिये भी रिश्तेदारों को सरकारी लाभ पहुचाना मजबूरी हो जाती है। अन्यथा बीबी नाराज होती है, पिता नाराज हो सकता है आदि आदि। ये लोग भी परिवार के कारण मजबूर हैं सरकारी सुविधाओं का रिश्तेदारों को लाभ दिलाने के लिये। अपने आप को बड़ा दिखाने की प्रतिस्पर्धा में लोग अपने पद की मयार्दा भूल जाते हैं और अपने परिवार के फायदे के लिये किसी भी हद तक जा गुजरते हैं। राजनीति में तो राजनेता अपने परिवार को सरकारी सुविधा दिलाना अपना हक समझते हैं। अगर किसी का पुत्र बहुत बीमार है और उसे किसी अच्छे अस्पताल में अपने रुतबे के कारण कोई भर्ती कराता है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री माननीय जवाहर लाल नेहरू अपनी सिगरेट हवाई मार्ग से विदेश से मँगाते थे और अपने कपड़े भी विदेशों में धुलने भेजते थे। पद के कारण ऐसी सेवाएँ लेना सर्वथा गलत था। पूर्व प्रधान मंत्री माननीय लाल बहादुर शास्त्री की गाड़ी का ऋण भी उनके मृत्यु के बाद उनकी पत्नी ने चुकाया था। सरकारी तंत्र में दोनों तरह के लोग रहते हैं। किंतु आज के युग में सरकारी सेवाओं का लाभ उठाने वाले ही ज्यादा हैं। स्वयं के लिये, रिश्तेदारों के लिये पद की मयार्दा भूल जाते हैं और अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं। प्रायः बड़े से बड़े नेता भी स्वयं के लिये या रिश्तेदारों के लिये अपने मताहतों से, जनता से सरकार द्वारा दी गई सुविधाओं का फायदा उठाते रहते हैं। यह एक बड़ी विडंबना है, किंतु देश की यह संस्कृति बन गयी है और जनता भी इसका बुरा नहीं मानती, क्योंकि जनता भी इन्ही पदासीन व्यक्तियों के द्वारा अपना निजी फायदा उठाती है, अतः विरोध नहीं करती।

BEST WISHES FROM

ANEKANT
Khushiyon Ki Buniyad

ANEKANT GROUP

Endless Possibilities

Khushiyon Ki Buniyad

www.anekantinfra.com

KOLKATA | RAIPUR | BHOPAL | RANCHI | BOKARO | SUJANGARH

CAL Bakery
कोलकाता • Artisanal Breads & Pastries
100% Eggless

CAL BAKERY

100% Eggless

Artisanal Breads & Pastries

8777440101 | calbakery

खर्च करने का मनोविज्ञान



सीए राकेश धानीवाल

खर्च करना जीवन का आवश्यक हिस्सा है, लेकिन अंधाधुंध खर्च वित्तीय तनाव का कारण बन सकता है। यदि हम अपने खर्च के पीछे छिपे मनोवैज्ञानिक कारणों को समझ लें, तो बेहतर वित्तीय निर्णय ले सकते हैं।

आज के समय में पैसे कमाना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है पैसे को समझदारी से खर्च करना। फिर भी अक्सर हम ऐसी चीजें खरीद लेते हैं, जिनकी हमें वास्तव में जरूरत नहीं होती। यह केवल आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि मनोवैज्ञानिक भी है। खर्च करने के पीछे हमारी भावनाएं, आदतें और सामाजिक प्रभाव बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। आइए समझते हैं कि आखिर हम जरूरत से ज्यादा खर्च क्यों करते हैं और इसे कैसे नियंत्रित किया जा सकता है?

भावनात्मक खर्च

कई बार लोग खुशी, तनाव, या उदासी में खरीदारी करते हैं। जब हम उदास होते हैं, तो नई चीजें खरीदने से थोड़ी देर के लिए अच्छा महसूस होता है। इसे अक्सर "रिटेल थेरेपी" कहा जाता है।

उदाहरण के लिए, तनाव में महँगे कपड़े खरीद लेना, दुखी होने पर ऑनलाइन शॉपिंग करना। लेकिन यह खुशी अस्थायी होती है, और बाद में हमें खर्च किए गए पैसों का पछतावा भी हो सकता है।

सामाजिक दबाव

आजकल सोशल मीडिया का प्रभाव बहुत बढ़ गया है। जब हम दूसरों को नई कार, महंगे मोबाइल या विदेश यात्राएं करते देखते हैं, तो हमें भी वैसा ही करने की इच्छा होती है। यही कारण है कि कई लोग अपनी आय से अधिक खर्च करने लगते हैं। उदाहरण के लिए लोग नया फोन खरीदने के लिए अक्सर एपल का आईफोन या अन्य महंगे ब्रांड का लेते हैं, भले ही उनकी वास्तविक आवश्यकता न हो।

इसे मनोविज्ञान में कीपिंग अब विद अदर्स कहा जाता है।

तात्कालिक संतुष्टि

मनुष्य स्वभाव से तुरंत मिलने वाली खुशी को प्राथमिकता देता है। इसलिए हम भविष्य की बचत की बजाय आज खर्च करना पसंद करते हैं।

ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म जैसे एमेजन या फ्लिपकार्ट त्वरित डिलीवरी और आकर्षक ऑफर देकर इसी मनोविज्ञान का उपयोग करते हैं।

बाइ नाउ का बटन हमें तुरंत निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है।

ऑफर और डिस्काउंट का जाल

50% ऑफ, लिमिटेड टाइम ऑफर, बाय वन गेट वन 1 जैसे शब्द हमारे दिमाग पर गहरा प्रभाव डालते हैं। कई बार लोग केवल इसलिए चीज खरीद लेते हैं, क्योंकि डिस्काउंट मिल रहा है, जबकि उन्हें उस वस्तु की आवश्यकता नहीं होती। असल में हम पैसा बचा नहीं रहे होते, बल्कि अनावश्यक खर्च कर रहे होते हैं।

आसान क्रेडिट की सुविधा

क्रेडिट कार्ड और बाय नाउ, पे लेटर जैसी सुविधाएँ खर्च करना बहुत आसान बना देती हैं। लोग जब कार्ड से भुगतान करते हैं, तो उन्हें तुरंत पैसे जाने का अहसास नहीं होता। इस कारण वे जरूरत से ज्यादा खर्च कर बैठते हैं।

खर्च को नियंत्रित करने के उपाय

- खरीदने से पहले 24 घंटे का नियम अपनाएँ - तुरंत खरीदारी न करें।
- मासिक बजट बनाएं और उसी के अनुसार खर्च करें।
- आवश्यकता और इच्छा में अंतर समझें।
- क्रेडिट कार्ड का सीमित उपयोग करें।
- बचत को प्राथमिकता दें – पहले बचत करें, फिर खर्च। खर्च करना जीवन का आवश्यक हिस्सा है, लेकिन अंधाधुंध खर्च वित्तीय तनाव का कारण बन सकता है। यदि हम अपने खर्च के पीछे छिपे मनोवैज्ञानिक कारणों को समझ लें, तो बेहतर वित्तीय निर्णय ले सकते हैं। अंततः सही आर्थिक आदतें हमें वित्तीय सुरक्षा, मानसिक शांति और बेहतर भविष्य की ओर ले जाती हैं।




Roland
Where Elegance
Meets Sound.
GALAXY Digital PVT. LTD.
Delhi - 011-42480119 | Kolkata - 033-22804098

जैन समाज की दशा एवं दिशा



डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन

समाज



जैन समाज के लोगों की संख्या निरन्तर घट रही है। इसके मूल में परिवार नियोजन की स्थिति और कन्याओं को जन्म न देने की प्रवृत्ति भी कारण हो सकते हैं। अत: हमें अपने जैन समाज की संख्यात्मक स्थिति सुधारने की जरूरत है।

आधुनिक परिवारों का टूटना, बिखरना, पति–पत्नी में संबंध विच्छेद, माता–पिता को अकेला छोड़ना या वृद्धाश्रमों में भेजा जाना, पिता–पुत्र का अलगाव आदि का समाधान मात्र ह्यह्यपरस्परोपग्रहह्ल में ही संभव है। आज स्थिति इतनी विषम है कि हर कोई अकेलेपन से ग्रस्त है!

भारत सरकार द्वारा पूर्व में करायी गयी जनगणना के अनुसार जैन समाज की कुल जनसंख्या लगभग 42 लाख आंकी गयी थी। जैन समाज इससे कुछ अधिक भी हो सकती है क्योंकि समाज की सभी उपजातियों के द्वारा अनिवार्य रूप से जैन न लिखे जाने और उपजाति सूचक उपनाम जोड़ने के कारण सही जनगणना नहीं हो पाती। जैन समाज के लोगों की संख्या निरन्तर घट रही है। इसके मूल में परिवार नियोजन की स्थिति और कन्याओं को जन्म न देने की प्रवृत्ति भी कारण हो सकते हैं। अतः हमें अपने जैन समाज की संख्यात्मक स्थिति सुधारने की जरूरत है।

इस दिशा में निम्नलिखित उपाय करने चाहिए— (क) समाज अपनी स्थिति के अनुरूप बच्चों की संख्या तय करें। (ख) कन्याओं का जन्म ना हो; ऐसी भावना ना रखें। (ग) दहेज प्रथा पर कानूनी रोक तो है ही किन्तु सामाजिक रोक भी हो। जो दहेज लेता हो उसे सामाजिक पदों से वंचित रखा जाए, उसके द्वारा दिया गया दान, भोज आदि स्वीकार न किया जाए। (घ) अभावग्रस्त कन्याओं एवं बालकों के समुचित संरक्षण, शिक्षा (छात्रवृत्ति), विवाह आदि की व्यवस्था समाज करे।

उच्च शिक्षा की दशा और दिशा

आज के युग की नई पीढ़ी की प्रमुख समस्या यह है कि अधिक शिक्षा कैसे मिले ? कहाँ से मिले ? जैन दर्शन कहता है कि आत्मा में अनन्त ज्ञान है। लेकिन ज्ञानावरणी कर्म का जब तक आस्रव है तब तक सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं किन्तु जो निरन्तर श्रुत का अभ्यास करता है उसे उच्च शिक्षा या ज्ञान की प्राप्ति होती है। आज गुरुओं के प्रति सम्मान एवं सेवा का भाव नहीं है। जबकि शिक्षा के लिए यह जरूरी है। हमें अपने आचार्यों, उपाध्यायों (शिक्षकों), का उचित सम्मान एवं सेवा करना चाहिए।

अर्थ की दशा और दिशा

वर्तमान युग अर्थ प्रधान है। अतः सभी के मन में एक ही चाह है कि व्यक्तिगत या देश के स्तर पर अर्थ में वृद्धि कैसे हो ? अर्थ पुरुषार्थ से प्राप्त होता है। किन्तु वह न्यायोपार्जित हो तो ही सुख देता है जिस आर्थिक समृद्धि की हम बात करते हैं वह बढ़ी है। आँकड़े भी यही बताते हैं। किन्तु अर्थ का मतलब ही तो सुख नहीं है। सुख में अर्थ भी कारण है किन्तु यदि अर्थ से सुख न मिले तो वह व्यर्थ है। जैन समाज की पूर्व में औद्योगिक/आर्थिक स्थिति अच्छी थी।

आज वह मात्र आत्मसंतोष के लायक है। संसार के सर्वाधिक धनी 50—100 व्यक्तियों में जैनियों का शायद ही कोई स्थान है। भारत के अरबपतियों में घोषित 20 में हमारा स्थान 20 वाँ है। हो सकता है आँकड़े इधर—उधर हों किन्तु स्थिति तुलनात्मक दृष्टि से बेहतर नहीं है। भले ही हम कुल आयकर का 24 प्रतिशत जमा करते हों।

हमें अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए यह कार्य करना चाहिए—

(क) जैन अहिंसा बैंक की स्थापना करना चाहिए तथा प्रत्येक राज्य में जहाँ जैन रहते हों उसकी शाखायें खोलना चाहिए।

(ख) उक्त बैंक में ही अनिवार्य रूप से जैन मन्दिरों, समितियों, ट्रस्टों का धन जमा करवाना चाहिए।

(ग) शेयर प्रणाली के आधार पर बड़ी औद्योगिक इकाईयाँ स्थापित करना चाहिए।

(घ) हमें निःसंकोच होकर लघु कुटीर उद्योग समाज में चलाना चाहिए।

(ङ) हमें तीर्थंकर आदिनाथ द्वारा प्रतिपादित असि, मसि, कृषि, शिल्प, विद्या और वाणिज्य इन सभी छह कर्मों को अपनाना चाहिए।

संसाधनों की दशा और दिशा

आज चहुँ ओर अर्थ और भौतिकता की समृद्धि को ही समृद्धि माना जा रहा है मानो यही सब कुछ है। जबकि हमें आर्थिक सम्पन्नता और भौतिक समृद्धि के भाव से उबरकर जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि पर ध्यान देना चाहिए।अतः हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम संभलकर चलें और उन परिस्थितियों को उत्पन्न होने से रोके जो समस्यायें उत्पन्न करती हैं, चाहे वे वैचारिक प्रदूषण की हों या पर्यावरणीय प्रदूषण की।

पारिवारिक सम्बन्धों की दशा एवं दिशा

जैन समाज की पारिवारिक स्थिति अत्यन्त मजबूत रही है और है भी किन्तु इसको बनाये रखने की जिम्मेदारी भी हमारी है। आज सामाजिक जनों के सामने दो प्रश्न हैं कि वह व्यक्तिगत जीवन जीये, या परस्पर /समष्टिगत जीवन। हम परस्परोपग्रह युक्त जीवन के पक्षपाती हैं। तत्त्वार्थसूत्र में सूत्र आया है — परस्परोपग्रहो जीवानाम्अर्थात्जीव परस्पर उपकार करते हैं। आज सामंजस्य सहअस्तित्व और सद्भावना की कमी ने व्यापार, शिक्षा धर्म और संस्कृति के अनेक क्षेत्रों को प्रदूषित किया है। आधुनिक परिवारों का टूटना, बिखरना, पति—पत्नी में संबंध विच्छेद, माता—पिता को अकेला छोड़ना या वृद्धाश्रमों में भेजा जाना, पिता—पुत्र का अलगाव आदि का समाधान मात्र परस्परोपग्रह में ही संभव है। आज स्थिति इतनी विषम है कि हर कोई अकेलेपन से ग्रस्त है!

क्या यह हमारा कर्तव्य नहीं है कि हम अपने परिवार की एकता बनाये रखें, इस हेतु हमें बुजुर्गों के सम्मान की भावना बनानी होगी। आज जैन समाज में विभिन्न उपजातियों में बंटवारा होने के कारण विवाह की समस्या उत्पन्न हो गयी है। उपजातियां अपना मोह छोड़ नहीं पाती और अपनी घटती संख्या से भी अंजान बनी हुई हैं। ऐसे में उनके सामने वर–वधू के चुनाव की समस्या है। दूसरी ओर शिक्षा और सर्विस की अनिवार्यता ने लड़कियों के सामने अन्य जाति के लड़कों से जो उसी के अनुरूप शिक्षित और सर्विसरत हैं; उनसे विवाह का रास्ता खोल दिया है। समाज की परवाह किसे है ? अतः हमें वृहत जैन समाज की स्थापना करना चाहिए तथा जैन वैवाहिक संस्था/संस्कार को मजबूत करना चाहिए।

खानपान की दशा एवं दिशा

जैसे हम चाहते हैं कि हमारा शरीर नीरोगी रहे किन्तु भोजन करते समय यह विचार किया कि जो हम खा रहे हैं उसका शरीर पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? याद रहे जिह्वा का चटोरापन इंसान की सेहत का सबसे बड़ा दुश्मन है। कहते हैं हर रोग का रास्ता पेट से होकर जाता है और हम हैं कि पेट का फुलाने में ही सेहत की सुरक्षा मान रहे हैं। जो मिलता है उसे खा लेते हैं। हम ये विचार ही नहीं करते कि इसका श–रीर एवं मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? अतः स्वस्थ शरीर के लिए खान—पान का विवेक एवं संयम आवश्यक है। इसमें में सुधार के लिए निम्नलिखित उपाय करने होंगे, जिनमें खानपान कीअहिंसक वस्तुओं का निर्माण एवं वितरण (विक्रय), अहिंसक उत्पादों का प्रचार एवं प्रसार, अहिंसक खेती शामिल करें।

जीव दया दशा एवं दिशा

आज स्थिति यह है कि मांसाहार ने करुणा को, लोभ ने ईमान को, व्यभिचार ने सम्बन्ध को, खुलेपन ने लज्जा को, स्वार्थ ने साधुता को और व्यापार ने शुचिता या शुभता को खा लिया है। इससे बचाव बहुत जरूरी है। इस पर भी तुर्रा यह है कि हम अकेले क्या कर सकते हैं ? हम मनुष्य हैं, अहिंसक और जैन हैं तो हमारा आचरण भी वैसा ही होना चाहिए। आज यदि दूध एवं घी तथा गोबर की खाद आदि समस्याओं का समाधान अपेक्षित हैं तो तभी संभव है जबकि बूचड़खाने बंद हों। देश से बूचड़खाने कभी बंद नहीं हो सकते, मांस का व्यापार भी बंद नहीं हो सकता।

इस कारण दुग्ध के अभाव की समस्या भी बनी रहेगी। ऐसे में जैन समाज का यह कर्तव्य बनता है कि वह पशुपालन को अपने जीवन का अंग बनाये और ऐसी गौशालायें स्थापित करे जिनमें दूध नहीं दे रही गायें अथवा अन्य जानवर रखे जा सकें।

दान : दशा एवं दिशा

नीतिकार एवं विज्ञजन कहते हैं कि अर्थमनर्थं भावय नित्यंअर्थात्अर्थ की अनर्थता का विचार नित्य करना चाहिए। आज जिनके पास अथाह सम्पत्ति है वे उससे व्यथित हैं। यही कारण है कि वे अब अर्थ के परमार्थ संबंधी उपयोग की बात कर रहे हैं। आचार्य श्री उमास्वामी ने सातावेदनीय के आस्रव के कारणों में दान को माना है। अपनी वस्तु का पर के अनुग्रह के लिए त्याग करना दान है।

धन की तीन गतियाँ होती हैं, दान, भोग और नाश। जो धन न देता है, न भोगता है उसकी तीसरी गति अर्थात नाश होता है। अतः धन आया है तो उससे अपने प्रयोजन सिद्ध करो और उसका पुण्यमय नियोजन करो। पुण्यमय नियोजन का तात्पर्य दान से है। बिना दान के धन की सद्गति नहीं होती, धनवान की भी नहीं।

राजनैतिक दशा एवं दिशा

पूर्व में जहां जैन समाज म. प्र., गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि राज्यों में राजनैतिक भूमिका में प्रभावी था तथा अनेक विधायक एवं सांसद जैन हुआ करते थे वहीं आज जैन बाहुल्य वाले विधानसभा क्षेत्रों में उन्हें राजनैतिक उम्मीदवारी नहीं मिल रही है, चुने जाने के बाद भी उन्हें उनकी योग्यतानुसार मंत्री पद नहीं दिये जा रहे हैं इसका प्रमुख कारण हमारी राजनैतिक उपेक्षा नहीं अपितु हमें





राजनीति से क्या लेना- देना, यह प्रवृत्ति है। अतः इस प्रवृत्ति से मुक्त होकर हमें राजनीति की मुख्यधारा से जुड़ना चाहिए और प्रत्यक्ष राजनीति—चुनाव में भाग लेना चाहिए।

धार्मिक संस्थाओं व संगठनों की दशा एवं दिशा

जैन समाज की विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाएँ हैं जिनमें भारत वर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासमिति, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्, दक्षिण भारत जैन सभा, भारतीय जैन मिलन, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्वपरिषद् श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद् तथा अनेक जातीय, उपजातीय संगठन हैं। सबके अपने—अपने नेता हैं, पदाधिकारी हैं किन्तु कोई एक प्रभावी नेतृत्व न होने या संयुक्त प्रभावी नेतृत्व न होने के कारण हमारी आवाज औरों तक तो क्या अपनों तक भी नहीं पहुँच पाती है। इसी का दुष्परिणाम है कि गिरनार संकट में हैं, ऋषभदेव केसरिया जी संकट में है और हमारी सामाजिक एवं धार्मिक अस्मिता संकट में हैं।

जैन समाज की अन्य समस्याएं

मनुष्य के जीवन में सात कारणों से समस्याएँ आती हैं-

1. तन के कारण
2. मन के कारण
3. धन के कारण
4. परिवार के कारण
5. यश के कारण
6. लोभ के कारण
(पद, प्रतिष्ठा, जमीन आदि)
7. सुरक्षा को लेकर।

जैन समाज को चाहिए कि इन समस्याओं के समाधान के लिए वह इन उपायों को अपनाये :

1. तन संबंधी समस्या के समाधान के लिए वह भोग पर अंकुश लगाये, योग साधना करे, जीवन में ब्रह्मचर्य को स्थान दे और निज द्रव्य से स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना करें।
2. मन संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए वह समाज में मित्रवत रहे और संवाद कायम करे।
3. धन संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए वह संतोष वृत्ति को अपनाये और न्यायोपार्जन पर बल दे। यदि वह नौकरी करता है तो नियोक्ता के साथ ईमानदारी से कार्य करे और यदि व्यापारी हो तो सुनिश्चित लाभ के साथ एक भाव का व्यापार करे।
4. परिवार संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए जरूरी है कि वह संयुक्त परिवार को अपनाये किन्तु एकल परिवार के रूप में ही रहना पड़े तो परिवार के अन्य सदस्यों के मध्य प्रगाढ़ पारस्परिक सहयोग की उदात्त भावना रखे।
5. यश संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए जरूरी है कि हम कार्य करते समय सम्मान की इच्छा ना रखें और यदि सम्मान मिले तो उसे सिर झुकाकर विनम्र भाव से स्वीकार करें।
6. लोभ (पद, प्रतिष्ठा, जमीन आदि) संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए जरूरी है कि जब पद के योग्य निर्वाह की क्षमता हो तो ही पद ग्रहण करें।
7. सुरक्षा संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए जरूरी है हम धर्म और सतकर्म पर विश्वास रखें। हमारे यहाँ तो धर्मोरक्षति रक्षितः कहा गया है।

आज समाज को आवश्यकता है कि–

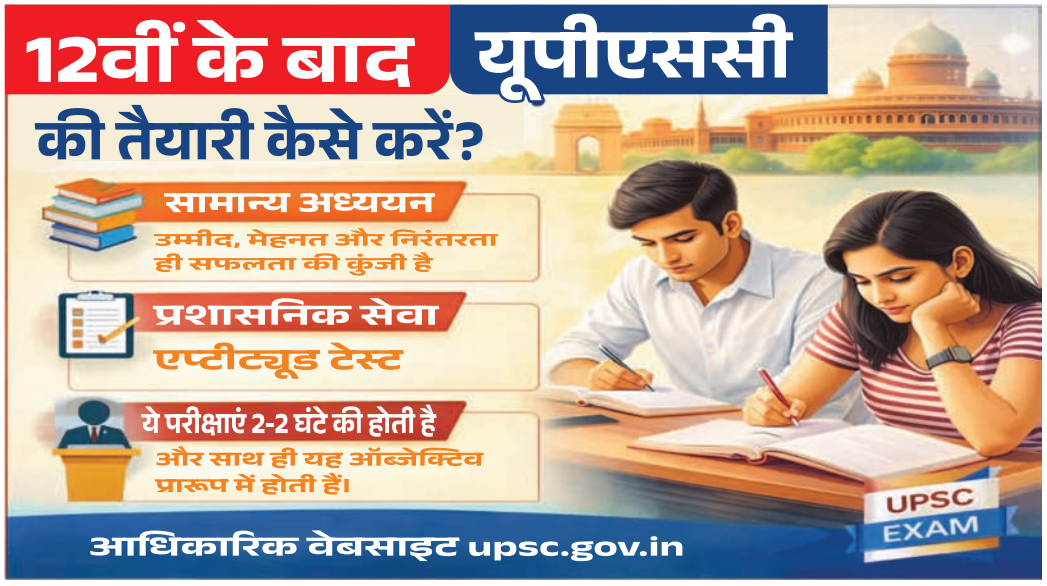
1. वह अपने मानस को मतांधता से मुक्त करे।
2. शास्त्र कसौटी पर अपनी विवेक बुद्धि को कसे।
3. आत्मपरीक्षण करना सीखे।
4. अर्थ का अनर्थ न करे।
5. फिजूलखर्ची से बचे।
6. संस्कार एवं शिक्षा को प्राथमिकता दे।
7. अपने जैनत्व को बचाये रखे और शान से कहे— जैन जयतु शासन।

(**डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन** श्री अ. भा. दि. जैन. विद्वत्वपरिषद के महामंत्री हैं)



शिल्पी कंधवे

12वीं के बाद यूपीएससी की तैयारी कैसे करें?



सबसे पहले आपको यूपीएससी की परीक्षा के लिए तत्पर होने के लिए दैनिक रूप से समाचार पत्र पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। यह आपको न केवल मानसिक परिपक्वता प्रदान करेगा बल्कि आपको महत्वपूर्ण करंट अफेयर्स से भी अवगत करवायेगा। इसके साथ आपको योजना और कुरुक्षेत्र जैसी मैगजीन को मासिक रूप से पढ़ना चाहिए।

12वीं कक्षा पास करने के बाद हर छात्र-छात्रा अपने बेहतर कॅरियर को लेकर उत्सुक रहते हैं। वे जानना चाहते हैं कि 12वीं के बाद ऐसा क्या करें जिससे वे अपने कॅरियर की ऊंचाइयों पर पहुंच जाएं। कक्षा 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद बहुत से छात्रों का आईएएस बनने का सपना होता है। 12वीं के बाद यूपीएससी की तैयारी कैसे करें, यह वो प्रश्न है जिसका जवाब प्रशासनिक सेवा में अपने कॅरियर की इच्छा रखने वाला हर युवा तलाश रहा है।

किसी भी तैयारी के लिए एक रणनीति का होना बेहद आवश्यक है। यूपीएससी की तैयारी शुरू करने से पहले आपको इसके परीक्षा पैटर्न की जानकारी होनी चाहिए।

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा अपनी आधिकारिक वेबसाइट upsc.gov.in पर यूपीएससी सीएसई अधिसूचना के साथ यूपीएससी आईएएस आवेदन पत्र जारी करता है। पात्र और इच्छुक उम्मीदवार यूपीएससी ओटीआर लिंक पर रजिस्ट्रेशन के बाद यूपीएससी आईएएस आवेदन पत्र भर सकते हैं।

भारत सरकार में सबसे उच्च पद आईएएस ,आईपीएस का होता है। जिसे भारतीय प्रशासनिक सेवा तथा भारतीय पुलिस सेवा के नाम से जाना जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या हमे सीधा 12वीं पास करने के बाद आईएएस आईपीएस या यूपीएससी की तैयारी में जुट जाना चाहिए या हमें अपनी ग्रेजुएशन पूरी होने तक का इंतजार करना चाहिए। हमेशा से ही कहा जाता है कि यदि किसी लक्ष्य को प्राप्त करना हो तो उसकी तैयारी जितनी जल्दी शुरू की जाएगी, लक्ष्य भी उतनी ही जल्दी प्राप्त किया जा सकता है। यदि आप अपनी ग्रेजुएशन पूरी होने का इंतजार करेंगे तो ऐसे में आपके तीन या चार साल व्यर्थ हो सकते हैं। इससे बेहतर है कि आप आईएएस आईपीएस की परीक्षा की तैयारी करें।

अक्सर छात्रों के मन में यह प्रश्न उठता है कि आईएएस बनने के लिए उन्हें 10वीं और 12वीं तथा ग्रेजुएशन में कितने प्रतिशत अंक चाहिए होंगे। छात्रों को केवल इन कक्षाओं में उत्तीर्ण होना आवश्यक है। यूपीएससी ने आईएएस की परीक्षा के लिए कोई न्यूनतम अंक निर्धारित नहीं किए है, उम्मीदवारों का किसी भी विषय में स्नातक/ ग्रेजुएट होना आवश्यक है। यदि आप 12वीं के बाद सीधे आईएएस की तैयारी करना चाहते है तो आपको स्नातक के लिए ऐसे विषय का चयन करना चाहिए जो आपको इस परीक्षा में एडवांटेज प्रदान करें। अर्थात आपका एक विषय का कोर्स आप स्नातक के माध्यम से पूरा कर सकते हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा या सिविल सेवा की परीक्षा यूपीएससी यानी यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन या संघ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाती है। यूपीएससी की परीक्षा में सामान्य वर्ग के छात्रों के लिए आयु सीमा 32 वर्ष है तथा उन्हें छः बार परीक्षा में बैठने का अवसर दिया जाता है। इसके अलावा एससी और एसटी छात्रों के लिए आयु सीमा 35 वर्ष है तथा महिलाओं के लिए भी यह आयु सीमा 35 वर्ष है तथा उनके लिए एटेम्पट निर्धारित नहीं है। आईएएस या यूपीएससी परीक्षा के लिए आवेदन मूलतः फरवरी माह में जारी किए जाते हैं। यूपीएससी की परीक्षा मूल रूप से तीन भागों में विभाजित होती है। सबसे पहले प्राथमिक या प्रीलिमिनरी परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसमें 2 पेपर एक ही दिन में आयोजित किए जाते हैं:

सामान्य अध्ययन : प्रशासनिक सेवा एप्टीट्यूड टेस्ट

ये परीक्षाएं 2-2 घंटे की होती है और साथ ही यह ऑब्जेक्टिव प्रारूप में होती हैं।

यूपीएससी के पहले पेपर में करंट अफेयर्स, इतिहास, राजनितिक विज्ञान, सामान्य विज्ञान, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था आदि सब्जेक्ट से प्रश्न पूछे जाते हैं, और दूसरे पेपर में संख्यात्मक अभियोग्यता, रीजनिंग, अंग्रेजी आदि सब्जेक्ट से प्रश्न पूछे जाते हैं।

संबंधित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों को आईएएस या यूपीएससी की प्राथमिक परीक्षा के प्रथम पेपर को उत्तीर्ण करने के लिए पढ़ना चाहिए। इसके साथ ही कम से कम पिछले 2 वर्ष के करंट अफेयर्स का ज्ञान भी होना चाहिए। इसके अलावा दूसरी परीक्षा के लिए छात्रों को संख्यात्मक अभियोगिता, रीजनिंग और अंग्रेजी की मूलभूत जानकारी होनी चाहिए। ये दोनों ही परीक्षाएं 200-200 अंको की होती है, प्रथम पेपर में 100 प्रश्न होते हैं जबकि दूसरे पेपर में 80 प्रश्न होते है, इनकी समयावधि 2 घंटे होती है, पहली परीक्षा में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा निर्धारित कट-ऑफ प्राप्त करना जरुरी होता है जबकि दूसरी परीक्षा केवल क्वालीफाइंग होती है इसमें छात्र को 200 में से केवल 66 अंक प्राप्त करना आवश्यक होता है। परन्तु इन परीक्षाओं में प्राप्त अंकों को अंतिम अंकों में नहीं जोड़ा जाता है, ये परीक्षाएं आपको केवल उत्तीर्ण करनी होती हैं।

यूपीएससी की प्राथमिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद छात्र मुख्य(मैन्स) परीक्षा में भाग ले सकते हैं, मुख्य परीक्षा में कुल 9 परीक्षाएं आयोजित की जाती है, जो 2 प्रकार के पेपर में विभाजित होती हैं। साक्षात्कार का चरण 275 अंकों का होता है। इस चरण में छात्र की प्रतिभा, उसके आत्म-विश्वास तथा उसके ज्ञान का परिक्षण किया जाता है। इन सभी परीक्षाओं अर्थात मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार का कुल योग 2025 होता हैं इनमे से प्राप्त अंकों के आधार पर आयोग उम्मीदवारों का चयन किया जाता है। सबसे पहले आपको यूपीएससी की परीक्षा के लिए तत्पर होने के लिए दैनिक रूप से समाचार पत्र पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। यह आपको न केवल मानसिक परिपक्वता प्रदान करेगा बल्कि आपको महत्वपूर्ण करंट अफेयर्स से भी अवगत करवायेगा। इसके साथ आपको 'योजना' और 'कुरुक्षेत्र' जैसी मैगजीन को मासिक रूप से पढ़ना चाहिए। आपको यूपीएससी परीक्षा के लिए राज्यसभा टीवी चैनल, आल इंडिया रेडियो व पीआईबी का भी अनुसरण करना चाहिए। साथ ही आप यूट्यूब पर यूपीएससी परीक्षा और करंट अफेयर्स से संबंधित स्टडी चैनल को फॉलो कर सकते हैं। साथ ही आपको छठीं कक्षा से लेकर 12 वीं कक्षा तक की एनसीआरटी की पुस्तकें पढनी चाहिए।

MITSUBISHI ELECTRIC

Ankur

(HOUSE OF AIR-CONDITIONER)

- Authorised Sales & Servise Dealer of MISTUBISHI ELECTRIC & AKABISHI Brand.
- We deal in VRF, Cassette Units, Room Air Conditioner (Split) & Centralised Air Conditioner.
- Complete Air Conditioning Solutions for Homes, Offices & Commercial Spaces.





156A, Lenin Sarani,
"Kamalalaya Centre"
Kolkata - 700013

27, Arabinda Sarani, Kolkata - 700005

9830007700 / 9748249279

ankurelectronicsg3@gmail.com

A UNIT OF

LORD of the DRINKS | WAREHOUSE CAFE' | Veneto | NYMERAH





राजेन्द्र मूँधड़ा

सोशल मीडिया की दुनिया में रिश्तों की स्थिरता बनाए रखने के लिए भरोसा, संवाद और संयम पहले से कहीं अधिक जरूरी हो गया है। यही वह तरीका है जिससे हम आखिरी वक्त में टूटती शादियों की बढ़ती प्रवृत्ति को कम कर सकते हैं और शादी को सच में सपनों जैसा बना सकते हैं।

शादी, जीवन का एक ऐसा पड़ाव है, जिसे हमेशा खास और यादगार माना जाता है। यह केवल दो लोगों के प्यार का प्रतीक नहीं है, बल्कि परिवारों, दोस्तों और समाज के लिए भी एक उत्सव का अवसर होता है। लंबे समय की तैयारियां, सगाई, प्रपोजल, प्री-वेडिंग शूट और बड़े समारोह सब कुछ इस दिन को परफेक्ट बनाने के लिए किया जाता है। लेकिन आज की डिजिटल दुनिया में यह परफेक्ट इमेज अक्सर टूटने लगती है।

सोशल मीडिया की भूमिका

सोशल मीडिया ने लोगों को जोड़ने में क्रांति ला दी है। यह हमें दोस्तों, परिवार और प्रियजनों के करीब लाता है। लेकिन इसके साथ ही, यह रिश्तों में दबाव, तुलना और अविश्वास का बड़ा स्रोत भी बन गया है। इंस्टाग्राम, फेसबुक और व्हाट्सऐप पर हर कोई अपने परफेक्ट जीवन की झलक दिखाता है। परिणामस्वरूप, छोटे-छोटे मतभेद भी बड़े विवादों में बदल जाते हैं। हाल ही में इसका सबसे चर्चित उदाहरण आया भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना और इंदौर के म्यूजिक कंपोजर पलाश मुच्छल की शादी से। लाखों की तैयारियों और चर्चा के बीच, उनका रिश्ता तय दिन से पहले ही रद्द हो गया। विशेषज्ञों का कहना है कि यह कोई अकेला मामला नहीं है। आजकल कई जोड़े इसी तरह आखिरी समय में शादी से पीछे हटते हैं।

डिजिटल दबाव और मानसिक तनाव

सोशल मीडिया ने जहां लोगों को जोड़ने का काम किया है, वहीं यह मानसिक दबाव भी बन गया है। पुराने रिश्तों का फिर से सामने आना, निजी बातचीत का सार्वजनिक होना और दूसरों के जीवन से लगातार तुलना करना ये सब कारक हैं जो रिश्तों में दरार पैदा कर रहे हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार, आधुनिक युवा पीढ़ी रिश्तों को लेकर पहले से अधिक सतर्क और संवेदनशील हो गई है। छोटी असहमति, संदेह या झगड़े को भी वे बड़े मुद्दे के रूप में लेते हैं। इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत संबंधों की स्थिरता और भरोसा कमजोर होता है।

विशेषज्ञों की राय

सामाजिक मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि रिश्तों को बचाने के लिए सिर्फ प्रेम और आकर्षण ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए भरोसा, संवाद, संयम और समझ बेहद जरूरी हैं। सोशल मीडिया का सीमित और समझदारी से उपयोग ही आधुनिक रिश्तों में संतुलन बनाए रख सकता है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लगातार सक्रिय रहने से कभी-कभी असली संवाद और भावनाओं की समझ कम हो जाती है। लोग छोटी गलतफहमियों को बढ़ा-चढ़ाकर देखते हैं और रिश्ते से पीछे हटने का फैसला कर लेते हैं। विशेषज्ञों का सुझाव है कि शादी से पहले पार्टनर्स को एक-दूसरे की भावनाओं को समझना, निजी जीवन और डिजिटल दुनिया के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए।

सामाजिक प्रभाव

आखिरी समय में टूटती शादियों की प्रवृत्ति सिर्फ व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है। यह समाज में भी तनाव और निराशा पैदा करती है। परिवार, रिश्तेदार और दोस्त भी इन टूटे हुए रिश्तों का बोझ झेलते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, ऐसे मामलों में संवाद और परामर्श की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है। विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि डिजिटल दुनिया में रहते हुए रिश्तों की मजबूती बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन असंभव नहीं।

- **क्या करें ये बड़ा सवाल**
- **सोशल मीडिया पर अपनी निजी जिंदगी को सीमित रखना**
- **साथी के साथ खुला और ईमानदार संवाद बनाए रखना**
- **छोटी समस्याओं को समय रहते सुलझाना**
- **परिवार और मित्रों से परामर्श लेना**
- **मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का** ध्यान रखना

इन उपायों से रिश्तों को स्थायित्व और मजबूती मिल सकती है, और शादी जैसी पवित्र और महत्वपूर्ण घटना सच में खुशी और प्यार का प्रतीक बन सकती है।

डिजिटल युग ने जहां हमारे जीवन को आसान और तेज बनाया है, वहीं यह रिश्तों पर अप्रत्याशित दबाव भी डाल रहा है।

सोशल मीडिया की दुनिया में रिश्तों की स्थिरता बनाए रखने के लिए भरोसा, संवाद और संयम पहले से कहीं अधिक जरूरी हो गया है। यही वह तरीका है जिससे हम "आखिरी वक्त में टूटती शादियों" की बढ़ती प्रवृत्ति को कम कर सकते हैं और शादी को सच में सपनों जैसा बना सकते हैं।

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :-



ROAD CARGO MOVERS Pvt. Ltd.

Reliable
Quality
Fast

Head- office:
1 Gibson Lane, 2nd Floor
Suite- 210 & 211 , Kolkata- 700069
Phone : 2210-3480 I E-mail : info@roadcargo.in

Branches & Associates :

Guwahati, Siliguri, Durgapur, Haldia, Kharagpur, Balasore, Bhubneswar, Cuttuck, Ichchapuram, Vishakapatnam, Vijaywada, Chennai, Bangalore, Raipur, Vadodara.

नारी की जिस शक्ति का,
शायद तुमको है आभास नहीं,
नारी बिन इस दुनिया में जीवन का
कोई भी प्रकाश नहीं।
नारी तू कमजोर नहीं, स्वयं शक्ति
पहचान
अपने हक के लिए लड़,
तभी होगा उत्थान

हक के लिए लड़ें, तभी होगा उत्थान

समाज



सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिये पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा और वहां की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा, जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके।

महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, वेश्यावृति, मानव तस्करी जैसी सामाजिक व पारिवारिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये एक स्वस्थ परिवार की जरुरत है, जो राष्ट्र के विकास के लिये आवश्यक है।

हमारे भारतीय समाज के अतीत की बात की जाए तो लगभग हर जगह पुरुष प्रधान मानसिकता महिलाओं पर हावी रही है, जिससे उन्हें उपेक्षा, भेदभाव, लैंगिक, असमानता और शोषण का सामना करना पड़ा है। आज भी भारतीय समाज इन कुरुतियों से अछूता नहीं है। आज भी कहीं न कहीं पुरुषों को ये लगता है कि महिलाएं कभी भी आत्मनिर्भर नहीं हो सकतीं,वो कमजोर हैं और पुरुषों के आधिपत्य में ही वो सुरक्षित रह सकती हैं। इसी गलत मानसिकता के कारण बहुत पहले से स्त्रियों के प्रति नकारात्मक विचार पाल पोष कर रखे गये हैं। स्त्री को सिर्फ घरेलू श्रमिक, उपभोग व मनोरंजन की वस्तु समझा जाता रहा है।

इतनी सामाजिक बेड़ियों में बंधे होने के बावजूद महिलाओं ने पुरुषों के समक्ष अपने ज्ञान तथा विवेक का परिचय दिया है। जैसे- रजिया सुल्तान, देवी चौधरानी, रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, मदर टेरेसा, इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, पीटी उषा, कल्पना चावला, टी.सी. थॉमस, पी.वी.संधु, द्रौपदी मूर्मू आदि महिलाओं ने समाज के विकास के लिए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपना योगदान दिया और हर क्षेत्र में अपना परचम लहराया। इससे जाहिर होता है कि अगर महिलाओं को भी सशक्त बनाया जाए तो वह भी समाज में अच्छे कार्यों के लिए योगदान जरूर दे सकती हैं। आज समाज में ऐसे वातावरण की आवश्यकता है, जिसमें सरकारी व गैर सरकारी प्रयासों से देश और समाज को खुशहाल और समृद्ध बनाना है। सदियों से चली आ रही इस रूढ़िवादी परंपराओं को तोड़ना होगा। महिलाओं को शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में संगठित होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक कर सभी क्षेत्रों में उनकी भागीदारी के स्तर में वृद्धि करने पर ही महिलाएं सशक्त होगी और तभी समाज मजबूत होगा और राष्ट्र निर्माण होगा

लोगों को जगाने के लिये महिलाओं का जागृत होना जरुरी है। एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गांव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर अग्रसर होता है।

महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, वेश्यावृति, मानव तस्करी जैसी सामाजिक और पारिवारिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा, चूंकि एक बेहतर शिक्षा की शरूआत बचपन से घर पर हो सकती है, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये एक स्वस्थ परिवार की जरुरत है, जो राष्ट्र के विकास के लिये आवश्यक है।

सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिये पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा और वहां की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा, जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिये लड़िकयों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की जरुरत है।

महिला सशक्तिकरण में ये ताकत है कि वो समाज और देश में बहुत कुछ बदल सकें। वो समाज में किसी भी समस्या से पुरुषों की तुलना में बेहतर ढ़ंग से निपट सकती हैं। वो देश और परिवार के लिये अधिक जनसंख्या के नुकसान को अच्छी तरह से समझ सकती हैं। वे आर्थिक प्रबंधन में भी पूरी तरह से सक्षम हैं। पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं किसी भी प्रभावकारी हिंसा को संभालने में सक्षम हैं चाहे वो पारिवारिक हो या सामाजिक।

महिला सशक्तिकरण की मदद से बिना अधिक प्रयास किये परिवार के हर सदस्य का विकास आसानी से हो सकता है। एक महिला परिवार में सभी चीजों के लिये बेहद जिम्मेदार मानी जाती है, अतः वो सभी समस्याओं का समाधान अच्छी तरह से कर सकती है। महिलाओं के सशक्त होने से पूरा समाज अपने आप सशक्त हो जायेगा। मनुष्य, आर्थिक या पर्यावरण से संबंधित कोई भी छोटी या बड़ी समस्या का बेहतर उपाय महिला सशक्तिकरण है। पिछले कुछ वर्षों में हमें महिला सशक्तिकरण का फायदा मिल रहा है। महिलाएं अपने स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी, तथा परिवार, देश और समाज के प्रति जिम्मेदारी को लेकर ज्यादा सचेत रहती है। वो हर क्षेत्र में प्रमुखता से भाग लेती है और अपनी रुचि प्रदर्शित करती है। अंततः कई वर्षों के संघर्ष के बाद सही राह पर चलने के लिये उन्हें उनका अधिकार मिल रहा है।

महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएं शक्तिशाली बनती है, जिससे वो अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती हैं और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती हैं। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिये उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है।

प्राचीन भारतीय समाज दूसरी भेदभावपूर्ण दस्तूरों के साथ सती प्रथा, नगर वधु व्यवस्था, दहेज प्रथा, यौन हिंसा, घरेलू हिंसा, गर्भ में बच्चियों की हत्या, पर्दा प्रथा, कार्य स्थल पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, बाल विवाह तथा देवदासी प्रथा आदि परंपरा थी। इस तरह की कुप्रथा का कारण पितृसत्तामक समाज और पुरुषों की मानसिकता थी। राजा राम मोहन रॉय की लगातार कोशिशों की वजह से ही सती प्रथा को खत्म करने के लिये अंग्रेज मजबूर हुए। बाद में, दूसरे भारतीय समाज सुधारकों

ईश्वर चंद्र विद्यासागर, आचार्य विनोभा भावे, स्वामी विवेकानंद आदि ने भी महिला उत्थान के लिये अपनी आवाज उठायी और कड़ा संघर्ष किया। भारत में विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिये ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपने लगातार प्रयास से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 की शुरूआत करवाई।

आज खासतौर से महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, ऑनर किलिंग और तस्करी जैसे गंभीर अपराध देखने को मिलते हैं। हालांकि यह काफी अजीब है कि शहरी क्षेत्रों की महिलाएं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के अपेक्षा अपराधिक हमलों की अधिक शिकार होती हैं। यहां तक कि कामकाजी महिलाएं भी देर रात में अपनी सुरक्षा को देखते हुए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग नही करती है। सही मायनों में महिला सशक्तिकरण की प्राप्ति तभी की जा सकती है जब महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके और पुरुषों की तरह वो भी बिना किसी भय कहीं भी आ जा सकें।

माना जाता है कि प्राचीन काल में भारतीय महिलाओं की स्थिति आधुनिक काल से अच्छी थी प्राचीन काल में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर समाज में काम करती थीं प्राचीन काल में तो यहां तक कहा जाता था कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवताओं का वास होता है लेकिन आधुनिक काल में महिलाओं की स्थिति प्राचीन काल से बहुत खराब है, और इसलिए आज का समाज महिला सशक्तिकरण पर विचार कर रहा है और कोशिश की जा रही है कि महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाया जा सके। अगर भारत आने वाले समय में, एक विकसित देश बनना होगा और इसके लिए अति आवश्यक है कि हम भारतीय महिलाओं को सशक्त करें!

भारतीय समाज में आज भी महिलाओं को लेकर दोहरे मापदण्ड हैं। भारत में महिला अस्मिता और उसकी सुरक्षा, अधिकारों और सम्मान को लेकर आन्दोलन हुए हैं, परन्तु उन्हें पुरूष समाज की ओर से जितना समर्थन मिलना चाहिए नहीं मिला है। आधुनिक शिक्षा पद्धति और चिन्तन शैली के प्रसार आदि के फलस्वरूप भारत में महिला सशक्तिकरण का आरंभ हुआ । महिला का स्थान प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण रहा है। महिला को ही सृष्टि रचना का मूल आधार कहा गया है। महिलाएं समाज का एक महत्वपूर्ण और आवश्यक अंग हैं, क्योंकि विश्व की आधी जनसंख्या तकरीबन इन्हीं की है। महिलाएं आज भी पूरी तरह सशक्त नहीं हुई हैं, इसका सबसे बड़ा कारण आए दिन होने वाली तमाम घटनाएं हैं, जिसमें वे तरह-तरह की हिंसा का शिकार हो रही हैं। बाहर तो वे हिंसा का शिकार होती है साथ ही अपने परिवार के पुरूष और दूसरी महिला सदस्यो के द्वारा भी उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। बाहर एवं घर परिवार मे हो रही हिंसा को मिटाए बिना समाज में महिला सशक्तिकरण का स्वप्न कभी पूरा नहीं हो सकता है।

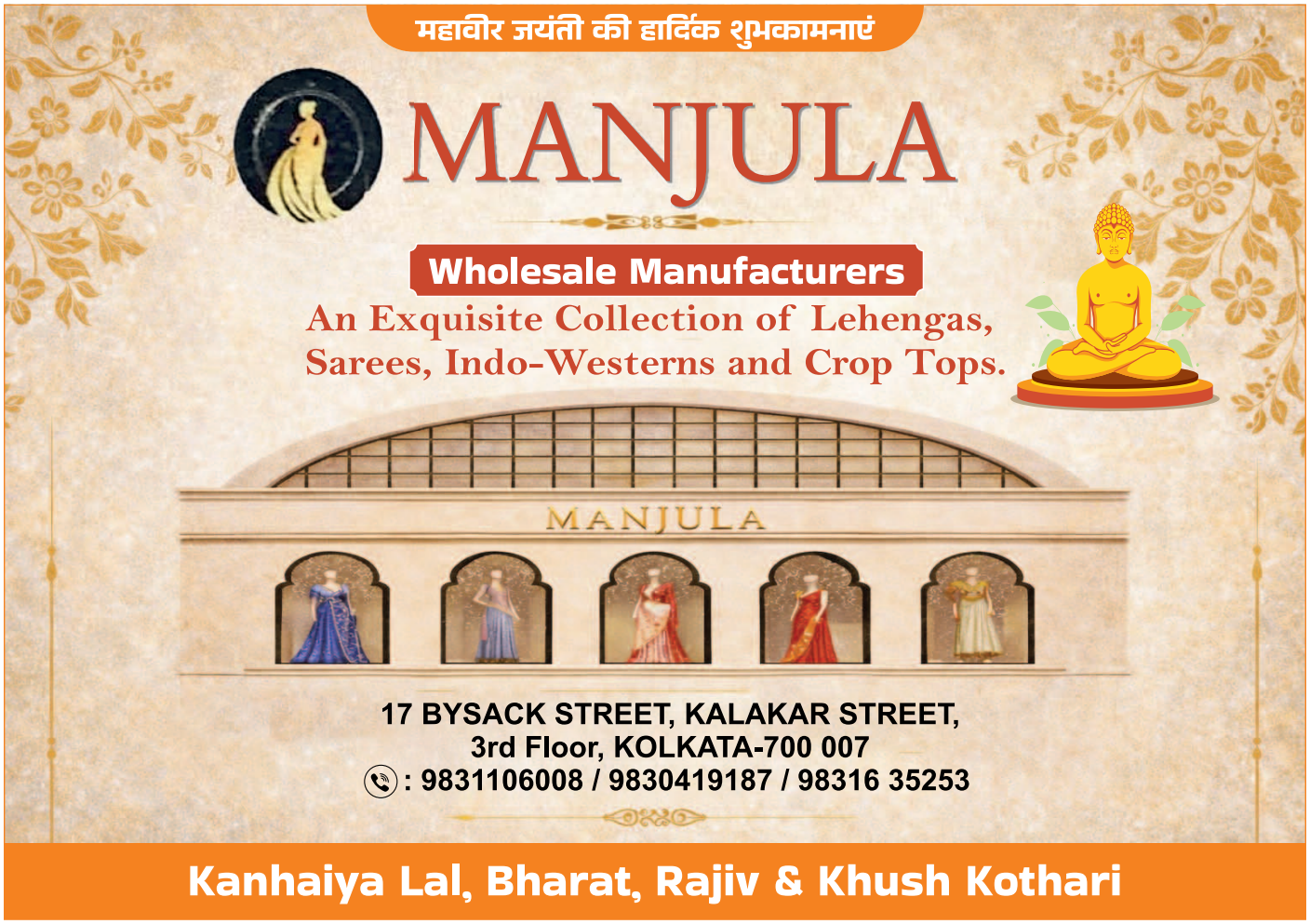
महिला सशक्तिकरण का अर्थ है, महिलाओं में आत्म सम्मान, आत्म निर्भरता व आत्मविश्वास जागृत करना है। महिला सशक्तिकरण के लिए वर्तमान में सबसे बड़ी आवश्यकता उनको अपने अधिकारों एवं कर्तव्यो के प्रति सजग होने की है। यदि कोई महिला अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति सजग और आत्मनिर्भर है, तो उसका आत्मसम्मान अवश्य ऊंचा होगा और वे देश कि विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है,भारत के हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह एक महिला को उसके मूल अधिकार जीने के अधिकार से वंचित ना करें। उत्तराधिकारी अधिनियम के तहत नए नियमों के आधार पर पुश्तैनी संपत्ति पर महिला और पुरुष दोनों का बराबर हक है।

गरिमा और शालीनता के लिए अधिकार : -

किसी मामले में अगर आरोपी एक महिला है तो उस पर की जाने वाली कोई भी चिकित्सा जांच प्रक्रिया किसी महिला द्वारा या किसी दूसरी महिला की उपस्थिति में ही की जानी चाहिए।

महिला सशक्तीकरण : -

महिलाओं का पारिवारिक बंधनों से मुक्त होकर अपने और अपने देश के बारे में सोचने की क्षमता का विकास होना ही महिला सशक्तीकरण कहलाता है।



मारवाड़ी समाज से निवेदन



संतोष सराफ
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी फेडरेशन

बंधुओ! सबसे पहले अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी फेडरेशन के स्थापना दिवस पर मैं हार्दिक बधाई देना चाहता हूं। आज का दिन संस्था की लंबी यात्रा, उपलब्धियों और मूल मूल्यों को याद करने, संस्थापकों के प्रयासों को सम्मानित करने का तो है ही, सदस्यों के बीच एकता और गर्व की भावना को बढ़ावा देने और भविष्य के लिए नए लक्ष्यों को निर्धारित करना भी है। आज का दिन संस्था की विरासत का उत्सव है और वर्तमान सदस्यों को उसकी संस्कृति और लक्ष्यों से जुड़ने के लिए प्रेरित करता है।

मारवाड़ी समाज में फिजूलखर्ची, कन्या भ्रूण हत्या और पुरानी सोच जैसी सामाजिक बुराइयां आज भी काफी हद तक मौजूद हैं, जिनका समाधान शिक्षा, संगठन को मजबूत करने, जागरूकता अभियान चलाने और पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक सोच के साथ अपनाने से किया जा सकता है। शादी-विवाह में सादगी लाना, लड़की-लड़के में समानता रखना और समाज के विकास के लिए संगठनात्मक एकता पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। शादी-विवाह जैसे आयोजनों में अत्यधिक खर्च और दिखावा एक बड़ी बुराई है। मारवाड़ी समाज में विवाह की दिनचर्या में सुधार होना चाहिए। सबसे अच्छा तो दिन में शादी संपन्न कराना है। पर आज कम से कम शाम 4 बजे बारात आ जानी चाहिए और साढे 5 बजे तक वरमाला संपन्न कर रिशेप्शन अधिकतम शाम 7 बजे तक हो जाना चाहिए। आज बारात में महिलाएं नाचती हैं, जो भौंडा लगता है। कुछ लोग तो शराब पीकर आना अपना शौक समझते हैं। पुराने जमाने में रात में शादियां होती थीं, इसकी वजह थी मुस्लिम या दूसरे आक्रांताओं का शासन होना। अपनी बहू-बेटियों को बुरी नजरों से बचाने के लिए ऐसा करना जरूरी था। मुसलमानों, सिखों व ईसाइयों में शादियां आज भी दिन में ही होती हैं। हम इस परंपरा को क्यों नहीं अपना सकते?

आज शादियों में भावात्मकता और संस्कार की शायद कमी है, इसीलिए सात जन्मों का बंधन एक झटके में टूट जा रहा है। परिवार से अलग रहने की प्रवृति बढ़ रही है। तलाक के मामले बढ़ रहे हैं। बुजूर्गों के प्रति सम्मान घट रहा है और लोग वृद्धाश्रमों में जाने पर या तो मजबूर हैं या विवश कर दिये जा रहे हैं। समाज में दहेज अब लगभग बंद है, पर फिजूलखर्ची जारी है, इस पर रोक लगनी चाहिए।

अपने समाज में बहुत सारे संगठन होने के बावजूद, संगठित होकर अपनी बात रखने की प्रवृत्ति कम दिखती है। मारवाड़ी समाज पर व्यापारी की छाप पड़ी है, उसे दूर करने के लिए अन्य गतिविधियों में भी भाग लेना आवश्यक है। मारवाड़ी समाज की प्रगति के लिए शिक्षा, कौशल विकास और व्यावसायिक विविधीकरण पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए। इसमें आधुनिक शिक्षा और प्रौद्योगिकी को अपनाना, पारंपरिक व्यवसायों से परे नए क्षेत्रों में निवेश करना और सामुदायिक सहयोग और नेटवर्किंग को मजबूत करना शामिल है। उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहन देना, जरूरतमंद छात्रों को वित्तीय सहायता और छात्रवृत्ति प्रदान करना भी पुण्य का काम है, इसे जारी रखा जाना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से ही पुरानी रूढ़ियों को खत्म किया जा सकता है। केवल पारंपरिक व्यापारिक क्षेत्रों तक सीमित न रहकर, नए उद्योगों जैसे कि प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश को बढ़ावा देना, युवा उद्यमियों को नई परियोजनाओं के लिए प्रोत्साहित करना और उन्हें आवश्यक संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान करना भी हमारा कर्तव्य होना चाहिए।

समुदाय के सदस्यों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना जरूरी है, जिससे ज्ञान और संसाधनों का आदान-प्रदान हो सके। सामाजिक कल्याण और परोपकार के कार्यों में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने से समाज के कमजोर वर्गों को मदद मिलेगी। हमें अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों को बनाए रखते हुए भविष्य की ओर बढ़ना है, ताकि पहचान और प्रगति एक साथ चल सकें। समाज के लोगों को संगठित होकर अपनी आवाज उठानी चाहिए। संगठन के माध्यम से ही समाज के विकास और समस्याओं के समाधान के लिए आवाज उठाई जा सकती है।





महावीर जयंती
की हार्दिक शुभकामनाएं



शीतल दुगड़

भारत कैसे मुक्त होगा थैलेसीमिया से ?

भारत को आज थैलेसीमिया के मामले में 'विश्व की राजधानी' माना जा रहा है। यहां 1,50,000 से अधिक मरीज हैं। ये बीमारी माता-पिता से बच्चों को मिलती है, जिसमें शरीर में खून की कमी हो जाती है. यह देश में सबसे बड़े आनुवंशिक विकारों में से एक है, जहां प्रति वर्ष लगभग 10,000 से 15,000 नए बच्चे इस बीमारी के साथ पैदा होते हैं। इसके अलावा, लगभग 3-4% भारतीय आबादी बीटा-थैलेसीमिया के वाहक हैं। यह बीमारी मुख्य रूप से पश्चिम और उत्तर भारत में अधिक है, लेकिन पूरे देश में इसके मामले पाए जाते हैं।

थैलेसीमिया एक आनुवंशिक रक्त विकार है, जिसके लिए नियमित रूप से रक्त चढ़ाने की आवश्यकता होती है। अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण (बोन मैरो ट्रांसप्लांट इसका एकमात्र स्थायी इलाज है। भारत सरकार राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के माध्यम से इसके उपचार के लिए 'थैलेसीमिया बाल सेवा योजना' जैसी पहल चलाती है। हर साल 8 मई को विश्व थैलेसीमिया दिवस मनाया जाता है। अनुमान है कि हर साल लगभग 3 से 4 लाख बच्चे गंभीर हीमोग्लोबिन विकार के साथ पैदा होते हैं। बीटा थैलेसीमिया बीटा ग्लोबिन जीन में उत्परिवर्तन के कारण होता है, जो सामान्य हीमोग्लोबिन के उत्पादन के लिए जरूरी है। हीमोग्लोबिन लाल रक्त कोशिकाओं में मौजूद प्रोटीन होता है, जो फेफड़ों से शरीर के सभी ऊतकों तक ऑक्सीजन पहुंचाता है। हमारे शरीर में दो बीटा ग्लोबिन जीन होते हैं - और यदि उनमें से एक में उत्परिवर्तन हो जाता है, तो व्यक्ति वाहक बन जाता है, जिसमें कोई लक्षण नहीं दिखते और वह लगभग 9 ग्राम/डेसीलीटर हीमोग्लोबिन और छोटी लाल रक्त कोशिकाओं (कम एमसीवी) के साथ सामान्य जीवन जी सकता है।

रोकथाम के उपाय : थैलेसीमिया-मुक्त भारत का सपना शादी से पहले व्यापक स्क्रीनिंग, गर्भावस्था के शुरुआती दौर में प्रसवपूर्व जांच, व्यापक जागरूकता अभियानों, सरकारी नीतियों के कड़ाई से कार्यान्वयन और स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देकर साकार किया जा सकता है। इस रोग के आनुवंशिक स्वभाव और इसके वाहक होने के बारे में कॉलेज और स्कूलों में शिक्षित करना जरूरी है। थैलेसीमिया रोगियों को आजीवन रक्त की आवश्यकता होती है, इसलिए रक्तदान को बढ़ावा देना और डे-केयर सेंटरों में सुरक्षित रक्त आधान (ब्लड ट्रांसफ्यूजन) सुनिश्चित करना जरूरी है। स्टेम सेल प्रत्यारोपण थैलेसीमिया का एकमात्र संभावित इलाज है।

इस संबंध में मेरा केंद्र सरकार को निम्नलिखित सुझाव है कि निम्नलिखित सरकारी दस्तावेजों में **थैलेसीमिया रिपोर्ट को शामिल करना चाहिए:**

» बर्थ सर्टिफिकेट के साथ थैलेसीमिया रिपोर्ट भी अटैच किया जाये, ताकि जल्दी पता चल सके और समय पर इलाज शुरू हो सके।

» 18 साल की उम्र में मेरिट/एकेडमिक सर्टिफिकेट के साथ थैलेसीमिया रिपोर्ट अटैच किया जाये, ताकि किशोरों व युवाओं को जिंदगी के फैसले लेने से पहले अपने थैलेसीमिया स्टेटस के बारे में पता हो।

» मैरिज सर्टिफिकेट के साथ थैलेसीमिया रिपोर्ट अटैच होना चाहिए, ताकि कपल्स को बच्चे प्लान करने से पहले अपने स्टेटस के बारे में पता चल सके और ज़रूरत पड़ने पर मेडिकल कंसल्टेशन ले सकें। उल्लेखनीय है कि भारत में हर महीने रिकॉर्ड 1000 बच्चे थैलेसीमिया मेजर के साथ जन्म ले रहे हैं और उन्हें जिंदगी भर खून चढ़ाकर अपना जीवन बचाना पड़ रहा है।

थैलेसीमिया जागरूकता के लिए नारे

- "थैलेसीमिया को जानें, थैलेसीमिया को रोकें – जागरूकता से जानें बचती हैं!"
- "शादी से पहले परीक्षण करवाएं, आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित रखें।"
- "बीमारी नहीं, जानकारी फैलाएं – सभी के लिए थैलेसीमिया जागरूकता।"
- "थैलेसीमिया-फ्री भारत के लिए एक साथ – एक आसान टेस्ट से शुरुआत करें।"
- "आज जागरूकता, एक स्वस्थ कल।"
- "शिक्षा और देखभाल से थैलेसीमिया की चेन तोड़ें।"
- "खून दान करें, उम्मीद फैलाएं और थैलेसीमिया से लड़ें।"
- "स्वस्थ परिवार, थैलेसीमिया-फ्री भारत।"

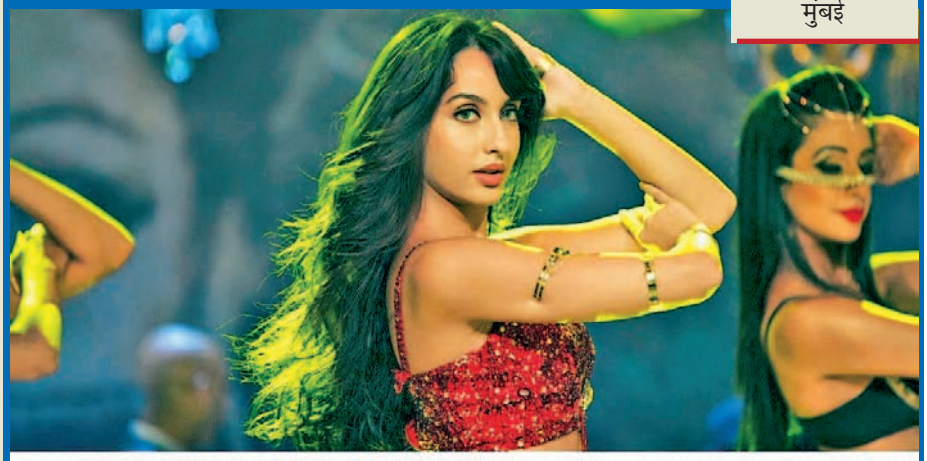
लेखिका शीतल दुगड़ जीतो एपेक्स लेडीज विंग की चेयरपर्सन हैं। 2014 से ही वे इस विंग में विभिन्न पदों पर कार्य करती आ रही हैं। भारत से थैलेसीमिया के उन्मूलन से जुड़े कार्यक्रमों में वे लगातार शामिल होती रहीं हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तीकरण कार्यक्रमों उनकी निरंतर भागीदारी रही हैं। कार रेसिंग की शौकीन शीतल जी आरडीबी फाउंडेशन की संस्थापक व चेयरपर्सन भी हैं। उन्होंने भारत की पहली महिला कार रेसिंग टीम का नेतृत्व किया है।

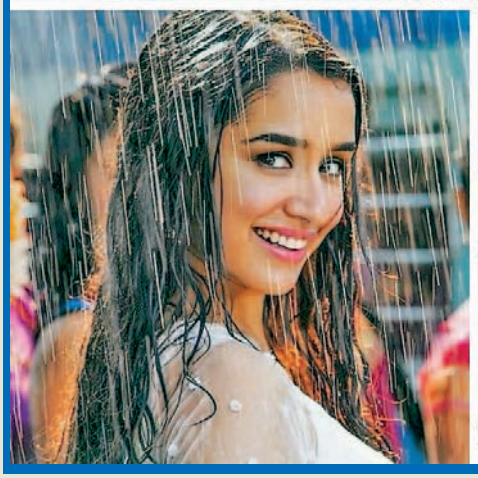
फिल्म

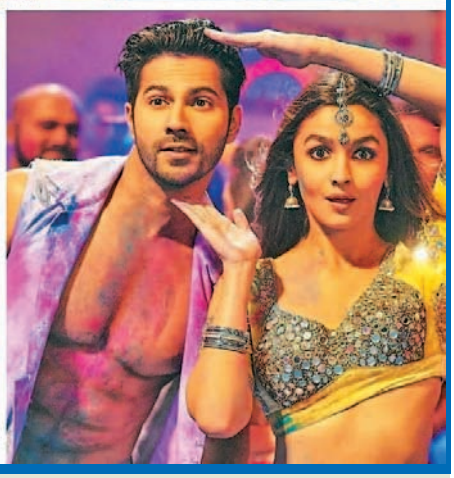
आज फिल्मी गीतों से क्यों गायब है मिठास ?



सुहाना परवीन
मुंबई







आज के हिंदी गानों में मिठास की कमी का मुख्य कारण तेज बदलाव, अत्यधिक व्यावसायीकरण, और संगीत बनाने के तरीके में बदलाव है, जहाँ अब धुन पहले बनती है और बोल बाद में ठूँसे जाते हैं, जबकि पुराने गानों में बोलों की गहराई और वाद्य यंत्रों का प्रामाणिक प्रयोग होता था, जिससे गाने दिल को छूते थे और लंबे समय तक याद रहते थे। हिंदी सिनेमा के पुराने गाने यादगार और मधुर हैं क्योंकि वे फिल्म की कहानी से जुड़े हुए होते थे, अगर हम फिल्म का गाना सुनते हैं तो इसकी कहानी जो उस गाने से जुड़ी होती है, वह याद आ जाती है। गीतकार फिल्म की कहानी की स्थिति के अनुसार गीत लिखते थे और संगीत निर्देशक उसी के अनुसार संगीत बनाते थे जो बहुत प्रभावशाली और दिलचस्प होते थे। फिल्म गाइड के गीत 'दिन ढल जाए, रात न जाए' का एक उदाहरण लें, जो अभिनेता देव आनंद पर फिल्माया गया है, गीत बताता है कि फिल्म का नायक अपनी प्रेमिका को याद कर रहा है और और गायन के माध्यम से अपनी भावनाओं को बता रहा है। अगर आप पुराने गीतकारों को देखेंगे तो शैलेंद्र जी,साहिर साहब,जावेद अख्तर जी, कैफी आजमी, गुलजार जी, अन्जान जी, हसरत जयपुरी साहब, शकील बदायूनी साहब, आनंद बख्शी जी ने जैसे गीतों के बोल लिखे है वो इतने भावपूर्ण है कि अगर संगीत अच्छा नही भी हुआ तो भी वो गीत आपके स्मृतियों में रहेगा। कहते है कि साहिर साहब ने एक महफिल में ही अपनी रुमाल में अपनी प्रेयसी के लिए ही एक गीत लिख डाला था जिसका प्रयोग भविष्य में हमराज फिल्म में भी किया गया। गीत इस प्रकार था- ना मैं तुमसे कोई उम्मीद रखूँ दिलनवाजी की ना तुम मेरी तरफ देखो गलत अंदाज नजरों से ना मेरे दिल की धड़कन लड़खड़ाये मेरी बातों से ना जाहिर हो तुम्हारी कश्म-कश का राज नजरों से चलो इक बार फिर से अजनबी बन जाये हम दोनों । अब बात करते है संगीतकारों और गायको की । पुराने समय में शायद इतनी फिल्में नही बनती थी, जितनी आज बनती हैं तो उस समय संगीतकार अपने संगीत के साथ काफी प्रयोग भी करते थे। आर. डी. बर्मन साहब जिन्हें भारत मे पाश्चात्य संगीत लाने का श्रेय भी दिया जाता है, उन्होंने अपने गीतों में बहुत प्रयोग किये हैं, खास-कर ताल में जो कि सुनने में काफी अच्छा लगता है। तीसरी मंजिल फिल्म के गीतों में शायद पहली बार पूर्ण रूप से ताल में गिटार का प्रयोग किया गया है और रफी साहब की आवाज के तो कहने ही क्या। गायक भी उस समय बहुत नायाब थे। रफी साहब, किशोर कुमार, मुकेश जी, तलत महमूद, मन्ना डे, लता जी, आशा जी, गीता जी, सुमन जी इन सभी गायकों के आवाज में जादू था। आजकल भी अच्छे संगीतकार और गीतकार हैं लेकिन उतनी मधुरता नही है, गीतों में क्योंकि आजकल ज्यादातर इलेक्ट्रॉनिक वाद्ययंत्र प्रयोग होते हैं। आपको आजकल के गीतों में दुर्लभ ही तबला, शहनाई, बांसुरी या सितार सुनाई दे जो कि मन को बहुत शान्ति देती है। इसलिए जो शान्ति और मधुरता आपको पुराने गीतों में मिलेगी, वो आजकल के संगीत में पूर्णतः मिलना दुर्लभ है। आज के हिंदी गानों में मिठास की कमी का मुख्य कारण तेज बदलाव, अत्यधिक व्यावसायीकरण, और संगीत बनाने के तरीके में बदलाव है, जहाँ अब धुन पहले बनती है और बोल बाद में ठूँसे जाते हैं, जबकि पुराने गानों में बोलों की गहराई और वाद्य यंत्रों का प्रामाणिक प्रयोग होता था, जिससे गाने दिल को छूते थे और लंबे समय तक याद रहते थे; अब डिजिटल मीडिया और शॉर्ट-फॉर्म कंटेंट के कारण हुकलाइन्स पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, जिससे गानों की गुणवत्ता और भावनात्मक जुड़ाव कम हो रहा है. पुराने गानों में असली वाद्य यंत्रों (तबला, सारंगी, हारमोनियम) का उपयोग होता था, जो प्रामाणिक ध्वनि देते थे; अब सिंथेसाइजर और पहले से बने म्यूजिक लूप्स से काम चलाया जाता है, जिससे गहराई कम हो गई है. आजकल पहले धुन बनती है और फिर उसमें शब्द फिट किए जाते हैं, जबकि पहले बोल और संगीत साथ मिलकर बनते थे, जिससे भावनाओं का जुड़ाव ज्यादा होता था. इसके अलावा संगीत अब कला से ज्यादा एक उत्पाद बन गया है, जिसे जल्दी बनाना और बेचना है, जिससे गुणवत्ता पर असर पड़ता है.

पुराने समय के जो गाने आज भी याद हैं, वे समय की कसौटी पर खरे उतरे अच्छे गाने हैं; उस समय भी खराब गाने बने होंगे, जो अब भूले जा चुके हैं. पुराने गानों में कच्ची भावनाएं, लाइव वाद्य यंत्र और गहराई होती थी. आज के गानों में वीडियो पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, लेकिन स्वर और बोल उतने दमदार नहीं होते, जिससे गाने दिल तक नहीं पहुँच पाते. रफी साहब, किशोर कुमार, मुकेश जी, तलत महमूद, मन्ना डे, लता जी, आशा जी, गीता जी, सुमन जी इन सभी गायकों के आवाज में जादू था। संक्षेप में, बाजार की जरूरतें, डिजिटल युग का प्रभाव और संगीत बनाने की बदली हुई प्रक्रिया ने आज के गानों से वो मिठास और भावनात्मक गहराई छीन ली है, जो पुराने गानों की पहचान थी

KHEMI

With Complete wiring solution to designing your space, we at TIBREWALA'S are destined for fulfilling of all your needs and dezires

Mobile : 97486 55049

DRISHYA

Drishya Interior Designer & Consultant

43 Dr. Narayan Roy Sarani, Simla Street, Kolkata-700006

E-mail : drishya16.info@gmail.com

Our Brands Endorsement

SWITCHGEAR SAFE & SURE

PHILIPS

Schneider Electric

POLYCAB

HAVELLS

GLOSTER

SIEMENS

legrand®

BAJAJ

ABB

Racold

ANCHOR

Crabtree

TIBREWALA *Insulation Ltd.*

VAMISH

VAMISH ELECTRICALS

House of Electricals Goods (Industrial & Domestic)

50, Ezra Street, Kolkata-700001 Ph. : 033 4003 5686, 033 7134 1183





उद्योग

एचएमटी की पतन कथा

जब टाइटन ने किया बाजार पर कब्जा

किसी समय यह भारत का वक्त बताने वाली एकमात्र घड़ी कंपनी थी। भारत सरकार के उपक्रम की इसकी घड़ी लेने के लिए सालों की वेटिंग होती थी।

इस कंपनी के पास भारत के सर्वश्रेष्ठ डिजायनर थे, इंजीनियर थे। बस नहीं थी तो इच्छा शक्ति समय के साथ चलने की, ग्राहकों को भगवान मानने की।

एचएमटी याद है आपको? आज से 30-40 साल पहले इसकी बनायी घड़ियां आदमी की शान होती थीं। उत्तराखण्ड के रानीबाग में एचएमटी की फैक्ट्री अब भुतहा नजर आती है। किसी समय यह भारत का वक्त बताने वाली एकमात्र घड़ी कंपनी थी। भारत सरकार के उपक्रम की इसकी घड़ी लेने के लिए सालों की वेटिंग होती थी।

इस कंपनी के पास भारत के सर्वश्रेष्ठ डिजायनर थे, इंजीनियर थे। बस नहीं थी तो इच्छा शक्ति समय के साथ चलने की, ग्राहकों को भगवान मानने की। सारी दुनिया क्वार्ट्ज.टेक्नोलॉजी में आ चुकी थी लेकिन एचएमटी की ज़िद थी कि वह मैन्युअल यानी चाभी भरने वाली घड़ियां ही बनायेंगे। उसमें भी डिमांड व सप्लाई का गैप इतना कि ग्राहकों को वर्षों इंतजार करना पड़ता था, यहां तक कि रिश्वत देकर या ब्लैक में खरीदनी पड़ती थी। कंपनी का मैनेजमेंट सब ओर से कमाई कर रहा था। पॉवरफुल लोगों को समय से घड़ी देकर कंपनी जैसे एहसान करती थी। इस बीच, विदेशी कंपनियों को मार्केट फैलने लगा। ऐसे हालात हुए कि भारत में बिकने वाली अस्सी प्रतिशत घड़ियां अवैध रूप से भारत आने लगीं। मजेदार बात थी कि उन घड़ियों के विज्ञापन भी छपते थे, ऑफिस थे, बस वैध तरीके से भारत में नहीं बिक सकती थीं। ग्राहक भी वही खरीदते, दुकानदार भी वही बेचते, बस भारत सरकार का भ्रम था कि भारत में हम केवल एचएमटी की घड़ी ही बिकने देंगे।

इस भवन के पीछे एक पहाड़ी नाला बहता है। एचएमटी के कर्मचारी प्लास्टिक के डिब्बे में घड़ी के पुर्जे रख कर फेंक देते थे और उनके रिश्तेदार जाकर उसे निकाल लेते थे और उसे बेचते थे।

फिर इंट्री हुई टाटा के टाइटन कंपनी की। उन्होंने केवल इलेक्ट्रॉनिक घड़ियां बनाने का फैसला किया। एचएमटी के पास उससे मुकाबले की रणनीति यही थी कि हम सरकारी हैं व सरकार से बोल कर किसी प्राइवेट कंपनी को पैर नहीं जमाने देंगे। पर टाटा भी इतने हल्के न थे। टाइटन ने एचएमटी से ही रिटायर्ड अधिकारी, इंजीनियर लिए और पचास वर्ष पुरानी कंपनी एचएमटी को केवल एक वर्ष के अंदर ही अपनी बादशाहत खोने पर मजबूर किया और टाइटन नंबर एक कंपनी हो गई। उसके बाद, बस 3 वर्षों के अंदर एचएमटी की घड़ी भारत में कोई आधी कीमत पर खरीदने वाला न बचा।

आज चित्र में दिख रही उसकी फैक्ट्री अपने गुजरे कल के इतिहास की गवाह है। गवाह है कि जो व्यवसाय करते हुए समय व विकसित हो रही तकनीक के साथ नहीं चलता, ग्राहकों का सम्मान नहीं करता, वह एक दिन मिट्टी में मिल ही जाता है। भले ही कभी उसकी मोनोपोली रही हो।

STEELCO PRODUCTS | SCHAEFFLER



Schaeffler Product & Service Solution for all Industrial Applications

Founded in 1964, we at Steelco Products have maintained our leadership position in the distribution of precision bearings. We are an authorised industrial distributor for Schaeffler products and services. We have a broad range of products covering almost all industrial sectors and can offer our customers a wide range of services including support, diagnostics and maintenance for rolling bearings and systems. We work closely with our customers to provide holistic solutions, adhering to the highest quality standards.





STEELCO PRODUCTS
A unit of ESPEE ENTERPRISES PVT. LTD.
South City Business Park, 770, Anandapur 3rd Floor,
Unit: 307, Kolkata - 700 107
Ph.: 033 4001 1129 | Mob.: +91 94330 97685
E-mail: steelco@steelcoproducts.com
Branches: **Vadodara** | **Raigarh**



सुहाना परवीन
मुंबई

इस साल भी क्या टॉप पर रहेगी बैगी?



अब टाइट कपड़ों की जगह ढीले-ढाले और आरामदायक कपड़े (बैगी) चलन में हैं, जो स्टाइल के साथ आराम भी देते हैं। वैसे पुराना फैशन भी नयेपन की छौंक के साथ लोकप्रिय हो रहा है।

नये साल के फैशन में आराम और स्टाइल का मेल, विंटेज और रेट्रो लुक, बोल्ड रंग और प्रिंट और टिकाऊ कपड़े) छाए हुए हैं, जिसमें फ्यूशन वियर, स्टेटमेंट स्लीव्स और लेयरिंग भी ट्रेंड में हैं, जो पारंपरिक और आधुनिक शैलियों का मिश्रण पेश करते हैं। अब टाइट कपड़ों की जगह ढीले-ढाले और आरामदायक कपड़े (बैगी) चलन में हैं, जो स्टाइल के साथ आराम भी देते हैं। वैसे पुराना फैशन भी नयेपन की छौंक के साथ लोकप्रिय हो रहा है।

भारतीय और पश्चिमी कपड़ों का मिश्रण, जैसे साड़ी के साथ स्नीकर्स या क्रॉप टॉप के साथ लहंगा, लोकप्रिय है।

नियॉन, फ्यूशिया और कोबाल्ट ब्लू जैसे चमकदार रंग और एनिमल प्रिंट्स (जेबरा, तेंदुआ) फैशन में हैं। पर्यावरण के प्रति जागरूकता के कारण अपसाइकल (पुनर्नवीनीकरण) सामग्री और नैतिक प्रथाओं से बने कपड़ों को प्राथमिकता दी जा रही है। जालीदार (मेश) कपड़े और शीयर (पारदर्शी) लेयर्स आउटफिट को स्टाइलिश और ट्रेंडी बनाते हैं। लंबी जैकेट, पफर जैकेट और वूलन को-ऑर्ड सेट्स लेयरिंग के लिए लोकप्रिय हैं।

2026 की गर्मियों के फैशन ट्रेंड्स में 'सेल्फ-एक्सप्रेशन' की थीम हावी रहेगी, जिसमें बोल्ड रंग (जैसे नियॉन फ्लेयर और ज्वेल्स), विंटेज डेनिम (लूज फिट), और 'मैक्सिमलिज्म' (ज्यादा लेयरिंग और डिजाइन) का बोलबाला रहेगा, साथ ही सिल्क व पारदर्शी ब्लाउज, पेंडेंट नेकलेस और अलग-अलग एनिमल प्रिंट्स जैसे जेबरा और काऊ प्रिंट भी लोकप्रिय होंगे। वाइब्रेंट और बोल्ड रंग जैसे नियॉन फ्लेयर, एमराल्ड ग्रीन, और अन्य ज्वेल्स व इसके अलावा, क्रीम, कोरल, ऑलिव ग्रीन और अर्थी शेड्स भी एलीगेंट लुक देंगे। सॉफ्ट फेड, लूज फिट और 'लिव-इन' लुक वाले डेनिम स्कर्ट और जीन्स, ट्रांसपेरेंट और सिल्क ब्लाउज, जो लेयरिंग या नेक स्कार्फ के साथ स्टाइल किए जाएंगे। इसमें डिजाइन और लेयरिंग, जिसमें बोल्ड शेड्स और पैटर्न को अपनाना शामिल हैं। इनमें साहसिक पैटर्न, जैसे जेबरा स्ट्राइप्स और काऊ प्रिंट जैसे नए एनिमल प्रिंट्स शामिल हैं।

एक्सेसरीज में सिंगल, लंबी पेंडेंट नेकलेस, जो बोहेमियन टच देंगे। टाई अब सिर्फ. ऑफिस वियर नहीं, बल्कि एक स्टेटमेंट पीस होगी, जिसे अलग-अलग स्टाइल में पहना जाएगा।सलवार कमीज के साथ नेकलेस स्टाइल, जैकेट या काफ्तान दुपट्टे का ट्रेंड लोकप्रिय हो रहा है। कैजुअल लुक के लिए बैगी जींस और एक स्टेटमेंट स्लीव्स वाला टॉप लोकप्रिय हो रहा है।

फैशन एक कला है, अभिव्यक्ति है इसमें कोई बुराई नहीं। लेकिन जब अभिव्यक्ति सिर्फ न आकर्षित करने का तरीका बन जाए, तो सवाल उठते हैं। क्या ये आत्मनिर्भरता है? क्या ये आत्मविश्वास है? या फिर सिर्फ लाइक्स, फॉलोअर्स और ट्रेंड का खेल? और हाँ, पुरुषों की नजर भी तो वहीं टिकती है जहाँ उन्हें कुछ 'अलग' दिखे! तो क्या गलती सिर्फ कपड़ों की है? या उस नजर की भी जो हर जगह सनसनी ढूंढती है?

सवाल ये नहीं कि कौन सही है सवाल ये है कि हम अपने समाज में क्या महत्व दे रहे हैं। क्या हम व्यक्तित्व देख रहे हैं या सिर्फ शरीर? क्या हम आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे रहे हैं या उपभोग की मानसिकता को?

सोना-चांदी की कीमतों में उथल पुथल क्यों ?



प्रकाश चन्द्रा

कारोबार



ईरान-अमेरिका- इजराइल जंग के कारण निवेशक डरे हुए हैं और कोई रिस्क नहीं लेना चाहते। वे अपना सोना-चांदी बेचकर अपने पास 'कैश' (लिक्विड मनी) इकट्ठा कर रहे हैं, ताकि किसी भी आपात स्थिति से निपटा जा सके।

सोना-चांदी की कीमतों में उथल-पुथल है। इसका मुख्य कारण मिडिल ईस्ट में तनाव, मजबूत अमेरिकी डॉलर, केंद्रीय बैंकों द्वारा ऊंची ब्याज दरें और मुनाफावसूली है। युद्ध के बावजूद निवेशक डॉलर और बांड्स में पैसा लगा रहे हैं, जिससे कीमती धातुओं की मांग और कीमतें प्रभावित हो रही हैं। आमतौर पर दुनिया में जब भी कोई जंग या उथल-पुथल होती है, तो निवेशक सुरक्षित निवेश के लिए 'गोल्ड' की तरफ भागते हैं और सोने के दाम आसमान छूने लगते हैं। लेकिन मिडिल ईस्ट में चल रही ईरान जंग में कहानी बिल्कुल उल्टी नजर आ रही है।

लगातार 3 हफ्तों से जंग जारी है, लेकिन सोने की चमक बढ़ने के बजाय फीकी पड़ गई है। जंग शुरू होने से पहले (27 फरवरी 2026) भारत में सोना 1.59 लाख प्रति 10 ग्राम था, जो आज (24 मार्च) गिरकर करीब 1.40 लाख पर आ गया है। यानी सीधे 20 हजार की गिरावट! इंटरनेशनल मार्केट में भी सोना 14-15% टूटकर $4,355 से $4,372 प्रति औंस तक आ गया है।

इस जंग के कारण निवेशक डरे हुए हैं और कोई रिस्क नहीं लेना चाहते। वे अपना सोना-चांदी बेचकर अपने पास 'कैश' (लिक्विड मनी) इकट्ठा कर रहे हैं ताकि किसी भी आपात स्थिति से निपटा जा सके। जनवरी 2026 में सोने की कीमतें रिकॉर्ड ऊंचाई पर थीं। बड़े निवेशकों ने इसी का फायदा उठाकर ऊंचे दामों पर अपना सोना बेचना शुरू कर दिया। मार्केट में सप्लाई बढ़ी और दाम गिर गए। हालांकि सोने की कीमत 21 जनवरी को 1.50 लाख रुपए पार कर गई। वहीं 1 किलो चांदी जनवरी 2026 में अपने रिकॉर्ड स्तर 4,20,048 प्रति किलो तक पहुंचने के बाद अब (27 मार्च) चांदी करीब 44% टूटकर 2,34,700 के आसपास आ गई है।

पिछले साल भर से सोना व चांदी की कीमतों में उथल-पुथल से निर्धन तबके का चांदी के प्रति आकर्षण रहा है, पर अब चांदी की चमक इतनी बढ़ी है कि आंखें चौधियां जायें। जिस चांदी को 1 लाख रुपये प्रति किलोग्राम से दो लाख रुपये तक पहुंचने में 14 महीने का वक्त लगा था, उसने दो लाख से तीन लाख रुपये का सफर महज एक महीने में ही तय कर लिया है।

क्या है इसकी वजह ?

दरअसल, सोना चांदी की कीमतों में उछाल का मुख्य कारण वैश्विक आर्थिक और भू-राजनीतिक अनिश्चितता है, जिससे निवेशक सुरक्षित निवेश की ओर भाग रहे हैं, साथ ही डॉलर की कमजोरी, केंद्रीय बैंकों द्वारा सोने की खरीदारी और चांदी के औद्योगिक उपयोग (जैसे सोलर पैनल, ईवी) में भारी वृद्धि भी इसे बढ़ावा दे रही है, जिससे मांग लगातार आपूर्ति से ज्यादा है और कीमतें ऐतिहासिक उच्च स्तर पर पहुँच गई हैं।

भू-राजनीतिक तनाव, जैसे रूस-यूक्रेन, मध्य-पूर्व के संघर्ष और अमेरिकीयूरोप व्यापार तनाव जैसे वैश्विक संघर्षों ने निवेशकों को सोने की ओर धकेला है, क्योंकि इसे अनिश्चितता में एक सुरक्षित सहारा माना जाता है। डॉलर के कमजोर होने पर अन्य मुद्राओं वाले निवेशकों के लिए सोना सस्ता हो जाता है, जिससे मांग बढ़ती है और कीमतें ऊपर जाती हैं। इसकेअलावा, चीन सहित दुनिया भर के केंद्रीय बैंक अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने और अपने भंडार को विविधतापूर्ण बनाने के लिए बड़ी मात्रा में सोना खरीद रहे हैं।

चांदी सभी धातुओं में सबसे उत्कृष्ट विद्युत और तापीय चालकता रखता है, जो तांबे और सोने से भी ज्यादा है। अपनी इस खासियत की वजह से यह इलेक्ट्रॉनिक्स, जैसे कि मोबाइल फोन, कंप्यूटर, टीवी, स्विच और फ्यूज में अनिवार्य रूप से उपयोग किया जाता है। चांदी में एंटी-माइक्रोबियल (रोगाणुरोधी) गुण होते हैं। इसकी वजह से इसका प्रयोग घाव की ड्रेसिंग, पट्टियों, क्रीम और चिकित्सा उपकरणों (जैसे कैथेटर और ब्रीदिंग ट्यूब) में संक्रमण रोकने के लिए किया जाता है। इसके अलावा, दंत चिकित्सा में अमैलगम फिलिंग के लिए भी इसका इस्तेमाल होता है।



सरकार सतर्क, जागरुकता अभियान, नये ऐप, पर लोगों से लूट जारी





शुभम कुमार

नये - नये तरीके ढूंढ़ ले रहे हैं साइबर ठग

अब एक नया स्कैम ई-सिम के जरिए चल रहा है. हाल ही में मुंबई निवासी का एटीएम और यूपीआई ब्लॉक करने के बावजूद उनके अकाउंट से 4 लाख रुपये निकाल लिए गए.

किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले डोमेन नेम की स्पेलिंग को बहुत ध्यान से देखना चाहिए. साइबर अपराधी अक्सर एक या दो अक्षरों का हेरफेर कर असली जैसी दिखने वाली नकली वेबसाइट बनाते हैं.

ऑनलाइन ठगी के मामले देश में काफी तेजी से बढ़ रहे हैं। अब ठग नए-नए तरीकों से लोगों को ठग रहे हैं। कभी व्हाट्सएप कॉल के जरिए डिजिटल गिरफ्तारी का डर तो कभी सिम बंद होने का झांसा देकर लोगों को फंसाया जाता है। अब ठगों ने सरकारी नौकरी का लालच देकर ठगी करने का नया तरीका अपनाया है। सर्व शिक्षा अभियान के नाम पर एक फर्जी वेबसाइट बनाई गई है जो इतनी असली लगती है कि कोई भी धोखा खा सकता है।

इन फर्जी पोर्टल्स का मुख्य उद्देश्य लोगों को गुमराह कर आर्थिक नुकसान पहुंचाना है। ये वेबसाइटें सरकारी नौकरी के नाम पर उम्मीदवारों से पैसे मांगती हैं। चूंकि इनका डिजाइन और नाम सरकारी वेबसाइटों से मिलता-जुलता होता है इसलिए लोग भरोसा कर लेते हैं और जाल में फंस जाते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर हाल ही में एक यूजर ने एक महिला की तस्वीर शेयर करते हुए दावा किया कि उसकी मां का हाल ही में निधन हो गया है और अंतिम संस्कार के लिए उसे पैसों की सख्त जरूरत है। इस पोस्ट में जीवी प्रकाश कुमार को टैग किया गया, जिन्होंने दया की बिना ज्यादा जांच-पड़ताल किए उस अकाउंट को 20 हजार रुपये ट्रांसफर कर दिए। कई लोगों ने जांच कर पाया कि जिस तस्वीर को मृत महिला की बताया जा रहा था, वह दरअसल इंटरनेट से ली गई एक पुरानी फोटो थी। एटीएम और यूपीआई बंद कराने पर भी लाखों की चपत लगाने की खबर आयी। टेक्नोलॉजी जिस तेजी से बढ़ रही है, उतनी ही तेजी से साइबर अपराध भी बढ़ता जा रहा है। आज लाखों लोग इन स्कैमर्स की शिकार बन चुके हैं। फोन में से पर्सनल डाटा चोरी कर लिया जाता है। अब एक नया स्कैम ई-सिम के जरिए चल रहा है। हाल ही में मुंबई निवासी का एटीएम और यूपीआई ब्लॉक करने के बावजूद उनके अकाउंट से 4 लाख रुपये निकाल लिए गए। मुंबई में एक शख्स को किसी अनजान नंबर से एक कॉल आया और उसके साथ एक लिंक भेजा गया, जिसे वह बिना सोचे-समझे क्लिक कर देता है। यह लिंक फिजिकल सिम को ई-सिम में बदलने के लिए होता है। इस पर क्लिक करते ही उसके नंबर की ई-सिम के लिए रिक्वेस्ट कंफर्म हो गई। इसके बाद उसके फोन के नेटवर्क्स चले गए, क्योंकि अब सिम कार्ड बदल चुका था। लेकिन स्वैम में अब भी 24 घंटे का वक्त लगता है, हालांकि, ऐसे में आपके फोन पर सिर्फ कोई कॉल या मैसेज नहीं आ सकते, लेकिन ओटीपी मिल सकता है। जिसका साइबर फ्रॉड ने इस्तेमाल किया। बैंक में कॉल कर उस आदमी ने अपना एटीएम कार्ड, यूपीआई तो ब्लॉक कराया, लेकिन तब तक उसके अकाउंट से 4 लाख रुपये निकल चुके थे। मुंबई की बुजुर्ग महिला के साथ साइबर ठगी का एक नया केस सामने आया है, जिसमें साइबर ठगों ने बड़ी ही चालाकी से शिकार बनाया और उनसे 20 करोड़ रुपये ठग लिए। विक्टिम महिला के साथ साइबर ठगी का खेल करीब 2 महीने तक चला और महिला को डिजिटल अरेस्ट करके रखा। इस दौरान महिला को 2-3 घंटे के दौरान कॉल की जाती और लोकेशन पूछी जाती।

सरकारी योजनाओं के नाम पर ठगी

साइबर ठगों ने अब सरकार की

लोकलुभावन योजनाओं को अपनी ठगी की कमाई करतूतों का जरिया बना लिया है। ये साइबर ठगोरे पहले बैंक क्रेडिट डेबिट कार्ड अपग्रेड करने, बिजली के बिल भरने अथवा मोबाइल नंबर ब्लाक

करने या आधार कार्ड अपग्रेड करने जैसी सरकारी सुविधाओं की लिंक भेज ठगी कर रहे थे वहीं अब इनकी इन कारस्तानियों के लगातार उजागर होने और शासन प्रशासन की एजेंसियों के जागरूकता कार्यक्रम के चलते जनता को इस तरह की ठगी का पता चल गया। जिसके बाद इन साइबर ठगों ने ठगी का अपना जरिया बदल लिया है और ये अब सरकार की लोकलुभावन योजनाओं से अपने आपराधिक कारनामों को अंजाम दे रहे हैं। ऐसा ही एक मामला प्रधानमंत्री किसान योजना के नाम पर एपीके फाइल भेज व्यापारी से लाखों की धोखाधड़ी का क्राइम ब्रांच ने दर्ज किया है। इसके पहले प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा लोन योजना, किसान समृध्दि योजना सहित कई योजनाओं के जरिए साइबर ठगी के विभिन्न मामले उजागर हुए हैं।

अब पीएम किसान योजना के जरिए ठगी की वारदात सामने आई है। अनिल कुमार मिश्रा का ट्रांसपोर्ट का व्यवसाय है। वाट्सऐप पर पीएम किसान योजना के नाम से उन्हें एक एपीके फाइल आई थी। उक्त फाइल को उन्होंने क्लिक किया था। इसके बाद फिर उन्हें एक और एपीके फाइल मिली। शाम के समय मोबाइल पर एक मैसेज आया जिसमें लिखा था अब्दुल समद बेनिफिसीयरी एड। उन्होंने मैसेज चेक किए तो 5 लाख, 2।85 लाख रुपए कटने का पता चला।

पुलिस ने खास तौर पर लोगों से हैप्पी न्यू ईयर वाले मैसेज को लेकर सावधानी बरतने की अपील की है। ऐसे संदेशों में आकर्षक डिजाइन, वीडियो, फोटो या लिंक भेजे जाते हैं, जिन पर क्लिक करते ही व्यक्ति के बैंक खाते से पैसे निकल जाते हैं या मोबाइल का डेटा हैक हो जाता है। पिछले साल ऐसे कई मामले सामने आए थे, जिनमें लोगों ने शुभकामना संदेश के साथ आए लिंक पर क्लिक किया और कुछ ही मिनटों में उनके बैंक खातों से पैसे गायब हो गए। कई मामलों में मोबाइल फोन में मालवेयर इंस्टॉल हो गया, जिससे ठगों को ओटीपी और बैंक डिटेल्स तक पहुंच मिल गई।

भूलकर भी गूगल से न खोजें कस्टमर केयर नंबर

यूपी के फतेहपुर जिले में एक शख्स के साथ 1 लाख रुपये की ठगी हो गई। फतेहपुर में गूगल पर खोजे कस्टमर केयर नंबर पर फोन मिलाने के बाद स्वास्थ्य विभाग के कर्मी से एक लाख रुपये की ठगी हो गई। उन्होंने कुछ दिन पहले एक ई-स्कूटर खरीदा था। ई-स्कूटर में तकनीकी खामी होने पर सोशल सिंह ने गूगल पर कंपनी का टोल फ्री नंबर खोजा। उस पर फोन करने पर उनसे शिकायत दर्ज कराने के नाम पर ओटीपी मांगी गई। ओटीपी बताने के बाद उनके बैंक खाते से 87 हजार 390 रुपये और दूसरी बार में 12 हजार 599 रुपये कट गए। इसके बाद साइबर ठगों का फोन बंद हो गया।

रायबरेली में साइबर फ्रॉड गैंग का पदार्फाश

रायबरेली पुलिस ने साइबर अपराधियों के ऐसे गैंग का पदार्फाश किया है, जो व्यापारियों को सस्ते में माल सप्लाई करने के नाम पर साइबर ठगी का शिकार बनाते हैं। इसके लिए यह साइबर ठग गरीब लोगों के डॉक्यूमेंट पर खाता खुलवाते हैं और साइबर ठगी का पैसा उसी में ट्रांसफर कराते हैं। ऐसा ही एक मामला रायबरेली के भदोखर थाना क्षेत्र में सामने आया जहाँ एक लोहे की सरिया का व्यवसाई ठगी का शिकार हो गया। मुंबई के एक व्यक्ति ने विदेश में नौकरी दिलाने के नाम पर 7 लोगों से 36 लाख रुपए की ठगी की है। मोहम्मद शफीक ने फेक कंसल्टेंसी ऑफिस खोलकर नकली वीजा, अपॉइंटमेंट लेटर और टिकट देकर लोगों से पैसे ऐंठे। ठगी का शिकार हुए लोगों की शिकायत पर जब दस्तावेजों की जांच हुई तो सच्चाई सामने आई। उत्तर प्रदेश में गाजीपुर के जमानिया कोतवाली क्षेत्र में साइबर ठगों ने पार्ट टाइम जॉब और रेस्टोरेंट फीडबैक टास्क का झ-ांसा देकर दो लोगों से लाखों रुपये की ठगी कर ली।

टेलीग्राम चैनल के जरिए ठगी का जाल

पुलिस के अनुसार ठगों ने टेलीग्राम चैनल के माध्यम से लोगों को फंसाया। अज्ञात नंबरों से लिंक भेजकर उन्हें चैनल से जोड़ा गया और छोटे-छोटे ऑनलाइन टास्क पूरा करने के नाम पर पैसे जमा कराए गए। अलीनगर (चंदौली) में रह रही संजना को एक अज्ञात नंबर से लिंक भेजा गया, जो टेलीग्राम चैनल पर ले गया। वहां उन्हें रेस्टोरेंट फीडबैक देने के टास्क दिए गए। 12 और 13 अक्टूबर को कुल पांच ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के जरिए 1.61 लाख रुपये ठग लिए गए।

हैल्लो, आपकी पॉलिसी मैच्योर हो गई है

गुजरात के सूरत में पॉलिसी मैच्योर करवाने के नाम पर बुजुर्ग से 98 लाख रुपये की ठगी की गई। सूरत साइबर क्राइम सेल ने सीनियर सिटीजन को ठगने वाले दो साइबर अपराधियों अमित कुमार और सुमित कुमार को गिरफ्तार किया है। ये अपराधी दिल्ली के रहने वाले हैं।

इंटरनेट पर प्यार ढूंढना खतरे से खाली नहीं

रोमांस स्कैम आमतौर पर डेटिंग ऐप्स पर देखने को मिलता था, लेकिन अब यह सोशल मीडिया पर भी तेजी से पैर पसार रहा है। गृह मंत्रालय के साइबर क्राइम समन्वय केंद्र के अनुसार, साइबर ठग नकली प्रोफाइल बनाकर लोगों से दोस्ती करते हैं और धीरे-धीरे भावनात्मक रूप से उन्हें अपने जाल में फंसा लेते हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि भारत दुनिया के उन शीर्ष तीन देशों में शामिल हो गया है, जहां रोमांस स्कैम तेजी से बढ़ रहे हैं।

फोन चलाते-चलाते ठगों के पास पहुंच रहा फिंगरप्रिंट

सोशल मीडिया पर इन दिनों साइबर ठगों की ओर से ठगी का नया तरीका अपनाया जा रहा है। इसमें ठग शुगर जांच के बहाने लोगों से उंगली के निशान ले रहे हैं। इसमें लोग सामान्य हैल्थ चेकअप समझकर बिना सोचे-समझे अपनी उंगली के निशान दे रहे हैं, जिससे उनका आधार कार्ड और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज हैक हो जा रहे हैं।

डॉक्टर बनकर कर रहे फ्रॉड

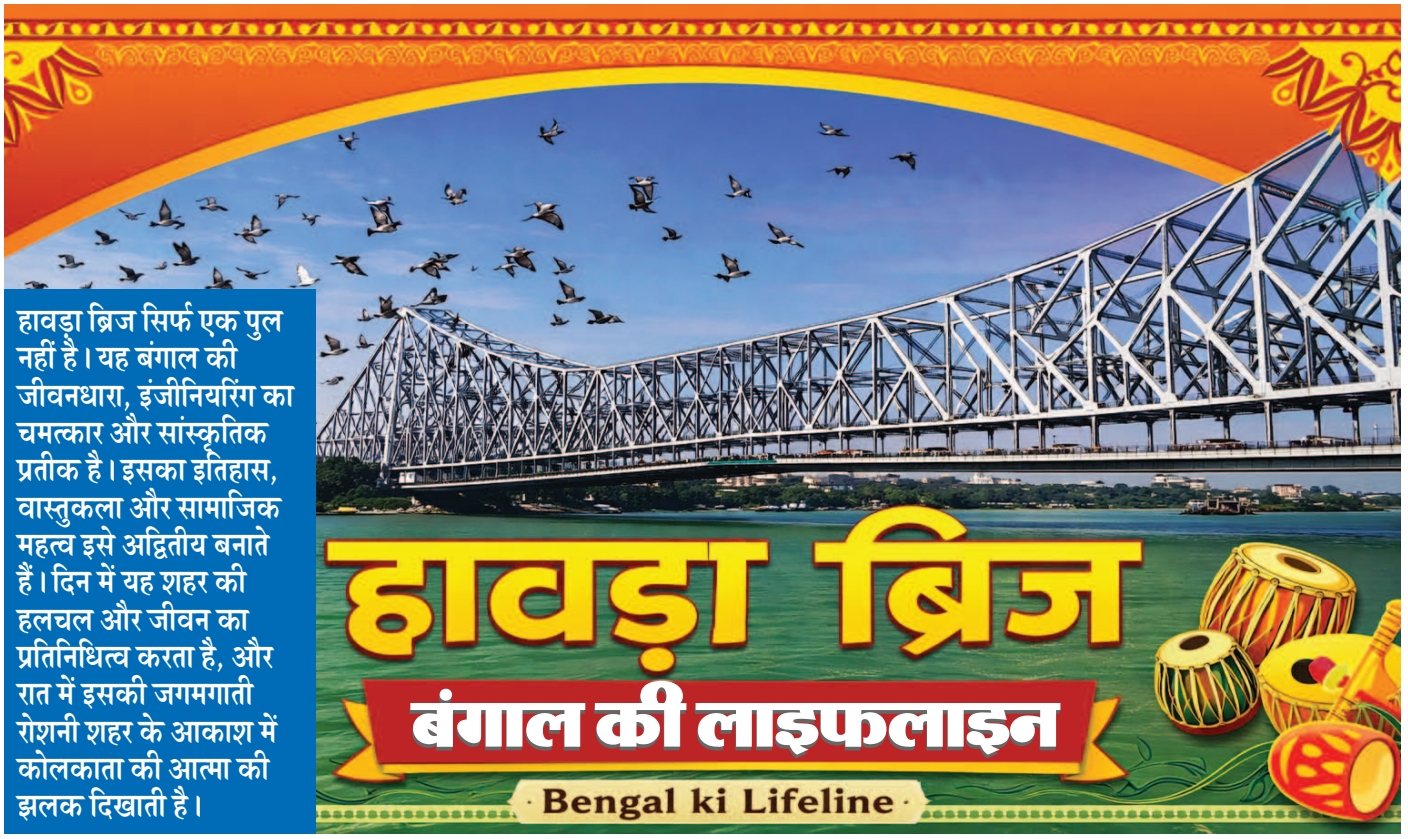
जबलपुर में साइबर ठगी का एक नया मामला सामने आया है। साइबर जालसाजों ने डॉक्टर बनकर एक व्यक्ति को 2.55 लाख रुपये का चूना लगा दिया। गंजीपुरा इलाके में रहने वाले जनरल स्टोर संचालक सुधीर नायक साइबर ठगी के नए तरीके का शिकार हो गए, जिसमें उन्हें 2,55,682 रुपये की चपत लग गई। पीड़ित की पत्नी लंबे समय से पैरों की समस्या से जूझ रही थी, जिसके चलते सुधीर नायक ने 4 अक्टूबर को ऑनलाइन बेस्ट न्यूरोसर्जन की तलाश शुरू की। सर्च के जरिए मिले नंबर पर कॉल करने पर उनसे डॉक्टर का नाम और समस्या पूछी गई और कहा गया कि अगले दिन के लिए अपॉइंटमेंट दिया जाएगा। अपॉइंटमेंट के बहाने लाखों की ठगी कर ली गई।

कैसे बचें ?

अनजान नंबर से आने वाले किसी भी कॉलर के साथ अपनी पर्सनल बैंक डिटेल्स आदि शेयर ना करें, खासकर जिसमें बैंक डिटेल्स आधार कार्ड डिटेल्स आदि शामिल हैं। इससे वह आपके बैंक अकाउंट का एक्सेस ले सकता है। पर्सनल डिटेल्स शेयर ना करें! अनजान नंबर से कॉल करने वाला अगर खुद को बैंक कर्मचारी, कुरियर का कर्मचारी या पुलिस अफसर आदि बताता है तो सबसे पहले उस कॉलर की जानकारी को वेरिफाई करें। इस केस के बारे में किसी दूसरे को कुछ ना बताएं। यहां आपको जानना जरूरी है पुलिस या सीबीआई ऑफिसर कभी भी वीडियो कॉल आदि नहीं करते हैं। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले डोमेन नेम की स्पेलिंग को बहुत ध्यान से देखना चाहिए। साइबर अपराधी अक्सर एक या दो अक्षरों का हेरफेर कर असली जैसी दिखने वाली नकली वेबसाइट बनाते हैं। HTTPS और लॉक आइकन देखें: सुरक्षित वेबसाइटों की पहचान उनके यूआरएल की शुरूआत में दिखने वाले HTTPS और एड्रेस बार में मौजूद ताले (लॉक) के आइकन से होती है। यदि ये सुरक्षा संकेत मौजूद नहीं हैं, तो उस पर अपना कोई भी वित्तीय या निजी विवरण दर्ज न करें। गूगल सेफ ब्राउजिंग का उपयोग: किसी भी संदिग्ध लिंक की सुरक्षा जांचने के लिए https://transparencyreport.google.com / safe-browsing / searchपर जा सकते हैं। इस पोर्टल पर लिंक पेस्ट करें और सुनिश्चित करें कि यह 'असुरक्षित', 'मालवेयर' या 'फिशिंग' तो नहीं दिखा रहा है।

गोपनीय जानकारी साझा करने से बचें

अपनी निजी जानकारी जैसे ओटीपी, आधार, पैन या बैंक विवरण किसी भी व्यक्ति या अज्ञात वेबसाइट से साझा न करें। साइबर ठगी की वारदात की सूचना निकटतम पुलिस स्टेशन, साइबर पुलिस स्टेशन या साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल https://cybercrime.gov.in पर देनी चाहिए। इसके अलावा सहायता के लिए साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 या साइबर हेल्पडेस्क नंबर 9256001930 और 9257510100 पर भी संपर्क किया जा सकता है।



हावड़ा ब्रिज सिर्फ एक पुल नहीं है। यह बंगाल की जीवनधारा, इंजीनियरिंग का चमत्कार और सांस्कृतिक प्रतीक है। इसका इतिहास, वास्तुकला और सामाजिक महत्व इसे अद्वितीय बनाते हैं। दिन में यह शहर की हलचल और जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, और रात में इसकी जगमगाती रोशनी शहर के आकाश में कोलकाता की आत्मा की झलक दिखाती है।

इतिहास, इंजीनियरिंग और संस्कृति का अद्भुत संगम

प्रकाश चन्द्रा

कोलकाता और हावड़ा को जोड़ने वाला हावड़ा ब्रिज, जिसे आमतौर पर हावड़ा पुल कहा जाता है, सिर्फ एक साधारण पुल नहीं है। यह पुल शहर की जीवन रेखा, इंजीनियरिंग का चमत्कार और बंगाल की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। हर दिन हजारों लोग इसे पार करते हैं और हर रात इसकी रोशनी शहर को जीवंत बना देती है।

इतिहास: ब्रिटिश काल की इंजीनियरिंग प्रतिभा

हावड़ा ब्रिज का निर्माण 1936 में शुरू हुआ और 1942 में पूरा हुआ। इसे ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा बनाया गया था, जो पुराने पोंटून पुल का विकल्प था। यह पुल उस समय का एक विशाल और महत्वाकांक्षी इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट था।

पुल की डिजाइन प्रसिद्ध इंजीनियर फर्म रेंडेल पामर एंड ट्रिटन ने की थी। यह कैंटिलीवर डिजाइन का अद्वितीय नमूना है, जिसमें नट और बोल्ट का उपयोग नहीं हुआ। इसकी रिवेटेड स्टील संरचना आज भी तकनीकी कौशल और 20वीं सदी के प्रारंभिक वास्तुकला का प्रतीक है।

संरचना और इंजीनियरिंग का चमत्कार

लंबाई और चौड़ाई: पुल की लंबाई 2,300 फीट और चौड़ाई 71 फीट है।

ऊंचाई: पुल नदी की सतह से 82 मीटर ऊंचा है। सामग्री: उच्च तन्यता वाले इस्पात का उपयोग इसे अत्यधिक मजबूत बनाता है।

रखरखाव: नियमित निरीक्षण और मरम्मत से इसकी संरचना दशकों से सुरक्षित है। इस पुल ने अपने निर्माण के समय सबसे लंबा कैंटिलीवर पुल होने का गौरव हासिल किया और आज भी इसे इंजीनियरिंग का चमत्कार माना जाता है।

हावड़ा ब्रिज का सांस्कृतिक महत्व

हावड़ा ब्रिज केवल यातायात मार्ग नहीं है। यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम और कोलकाता के सामाजिक इतिहास का गवाह रहा है। कठिन परिस्थितियों में भी यह पुल दृढ़ता और एकता का प्रतीक बना रहा। सांस्कृतिक दृष्टि से हावड़ा ब्रिज साहित्य, फिल्म और कला में भी प्रमुखता से दिखाई देता है। यह कोलकाता की जीवंत संस्कृति और रचनात्मक ऊर्जा का प्रतीक बन चुका है। कलाकार और लेखक इसे प्रेरणा का स्रोत मानते हैं, और यह शहर की पहचान का अभिन्न हिस्सा है।

स्थान और कनेक्टिविटी: हावड़ा ब्रिज कोलकाता के मध्य स्थित है और हुगली नदी पर फैला हुआ है। इसकी रणनीतिक स्थिति इसे शहर के विभिन्न हिस्सों से आसानी से जोड़ती है। यह पुल वाहन, पैदल यात्री और ट्राम के लिए मुख्य मार्ग है। शहर के प्रमुख स्थानों और परिवहन केंद्रों के निकट होने के कारण यह पर्यटकों के लिए भी सुविधाजनक है।

आस-पास के दर्शनीय स्थल

पुल के पास हलचल भरे बाजार हैं, जहां कोलकाता की सड़क संस्कृति, स्वाद और जीवनशैली का अनुभव किया जा सकता है। हावड़ा ब्रिज से कुछ ही दूरी पर यह सुरम्य स्थल है, जो नौका विहार और सूर्यास्त का आनंद लेने के लिए आदर्श है।

जगमगाती छटा

रात के समय पुल एलईडी लाइटों से जगमगाता है। यह रोशनी नदी पर मनमोहक प्रतिबिंब बनाती है और पुल को एक जादुई वातावरण प्रदान करती है। स्थानीय लोग और पर्यटक इसे देखने आते हैं, और यह कोलकाता का प्रमुख पर्यटन आकर्षण बन चुका है।

हावड़ा ब्रिज पर कड़े यातायात नियम और गति सीमाएं लागू हैं। नियमित निरीक्षण और मरम्मत से संरचनात्मक अखंडता सुनिश्चित की जाती है। संकेत और बैरियर दुर्घटनाओं को रोकते हैं। यह पुल लगातार भारी यातायात और मौसम की कठोर परिस्थितियों को झेलता है।

हावड़ा ब्रिज का ऐतिहासिक महत्व

यह स्वतंत्रता संग्राम और कोलकाता के सामाजिक इतिहास का गवाह रहा है। यह कैंटिलीवर डिजाइन के अनुसार, रिवेटेड स्टील संरचना से बनाया गया। यह इंजीनियरिंग का चमत्कार इसलिए है कि निर्माण के समय यह सबसे लंबा कैंटिलीवर पुल था। मजबूत निर्माण और नवोन्मेषी डिजाइन इसे अद्वितीय बनाते हैं। कड़े यातायात नियम, नियमित निरीक्षण और मरम्मत पुल की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। रात की रोशनी पुल की भव्यता बढ़ाती है और पर्यटकों के लिए जादुई अनुभव प्रदान करती है।

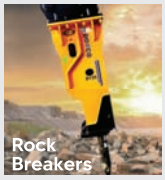
हावड़ा ब्रिज सिर्फ एक पुल नहीं है। यह बंगाल की जीवनधारा, इंजीनियरिंग का चमत्कार और सांस्कृतिक प्रतीक है। इसका इतिहास, वास्तुकला और सामाजिक महत्व इसे अद्वितीय बनाते हैं। दिन में यह शहर की हलचल और जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, और रात में इसकी जगमगाती रोशनी शहर के आकाश में कोलकाता की आत्मा की झलक दिखाती है।

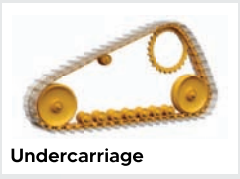


DOZCO is a trusted Indian brand delivering high-performance HEMM, its spare parts and attachments for construction, infrastructure, mining, agriculture, marine, road building and special applications .

Our comprehensive range includes Yanmar Mini Excavators, Shantui Dozers and Motor Grader Equipment including Rock Breakers, Chisels, Buckets, Cutter Attachments, Undercarriage Parts, Wear Parts etc with a world-class manufacturing plant in Visakhapatnam and strong PAN India network with 36 branches. We deliver OEM and aftermarket solutions that boost HEMM efficiency with trusted quality and innovation.

Manufacturing:

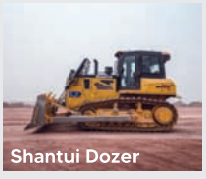

Rock Breakers

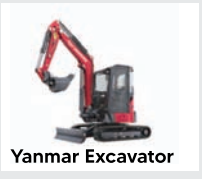

Undercarriage


Chisels

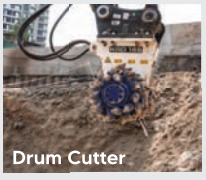

Buckets

Equipment & Attachments:


Shantui Dozer

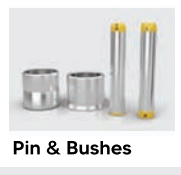

Yanmar Excavator


Motor Grader


Drum Cutter

Spare Parts:


Undercarriage Spare Parts


Pin & Bushes


Wear Parts

42+	39K SQ. MTR.	30K+	950+	36+	5+
Years of Experience	Manufacturing Facility	Client Base	Employees	Offices in PAN India	Continents Coverage

DOZCO (INDIA) PVT. LTD

CONSTRUCTION & MINING - EQUIPMENT & PARTS

CORPORATE OFFICE
No 243, D - Block, IDA, Auto Nagar, Vishakapatnam - 530 012, India
+91 8912769681 info@dozco.com

CHENNAI OFFICE
Address: 4/251A, Poonamallee High Road, Kumananchawdi, Chennai - 600 056, Tamil Nadu, India.
044 26791110 / +91 9176631910 chennai@dozco.com

REGISTERED OFFICE
No. 6, Waterloo Street, 3rd floor, Kolkata - 700 069, West Bengal, India

Follow Us: www.dozco.com



स्वास्थ्य ही धन है, तो लापरवाही क्यों ?



रतन खरकिया
यौगिक संघ
जॉइंट सेक्रेटरी

स्वास्थ्य ही धन है- यह वाक्य हम सभी ने बचपन से सुना है। माता-पिता, शिक्षक और समाज हमें बार-बार यह समझाते रहे हैं कि स्वस्थ शरीर और शांत मन ही जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति हैं। यदि स्वास्थ्य ठीक है, तो हम जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं लेकिन यदि स्वास्थ्य बिगड़ जाए, तो धन, पद और प्रतिष्ठा सब व्यर्थ प्रतीत होते हैं। फिर भी वास्तविकता यह है कि आधुनिक जीवन में हम सबसे अधिक लापरवाही अपने स्वास्थ्य के प्रति ही बरत रहे हैं। यह विरोधाभास चिंताजनक है और आत्मचिंतन की मांग करता है।

सबसे बड़ा कारण है बदलती जीवनशैली : तकनीक और आधुनिक साधनों ने हमारे जीवन को सुविधाजनक बना दिया है, लेकिन शारीरिक सक्रियता कम कर दी है। पहले लोग पैदल चलने, खेतों में काम करने या घरेलू श्रम से स्वाभाविक रूप से सक्रिय रहते थे। आज की दिनचर्या में घंटों कंप्यूटर के सामने बैठना, मोबाइल पर समय बिताना और वाहनों पर निर्भर रहना शामिल हो गया है। इससे शरीर निष्क्रिय हो गया है। निष्क्रिय जीवनशैली मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग जैसी बीमारियों को जन्म देती है। हम जानते हुए भी कि नियमित व्यायाम आवश्यक है, उसे अपनी प्राथमिकता नहीं बनाते।

खान-पान की आदतें भी हमारी लापरवाही का बड़ा कारण : तेज रफ्तार जीवन में लोग त्वरित और स्वादिष्ट भोजन की ओर आकर्षित होते हैं। जंक फूड, पैकेटबंद खाद्य पदार्थ, अत्यधिक चीनी और वसा युक्त आहार धीरे-धीरे शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। पारंपरिक, पौष्टिक और संतुलित भोजन की जगह बाहर का तला-भुना भोजन लेने की प्रवृत्ति बढ़ी है। परिणामस्वरूप पाचन संबंधी समस्याएं, मोटापा और अन्य रोग तेजी से फैल रहे हैं। हम स्वाद के आगे स्वास्थ्य को नजरअंदाज कर देते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी भी गंभीर समस्या : आज का समाज प्रतिस्पर्धा और प्रदर्शन पर आधारित है। हर व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है, बेहतर अंक, बेहतर नौकरी और बेहतर जीवन स्तर की चाह रखता है। इस दौड़ में तनाव, चिंता और अवसाद आम हो गए हैं। मानसिक तनाव का सीधा प्रभाव शरीर पर पड़ता है। अनिद्रा, थकान और चिड़चिड़ापन धीरे-धीरे गंभीर रोगों का रूप ले सकते हैं। फिर भी हम मानसिक स्वास्थ्य को खुलकर स्वीकार नहीं करते और न ही समय पर सहायता लेते हैं।

समय की कमी का बहाना भी हमारी लापरवाही को दशार्ता है। हम काम, परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच इतने उलझ जाते हैं कि स्वयं के लिए समय निकालना भूल जाते हैं। कल से व्यायाम शुरू करेंगे या अगले महीने से नियमित दिनचर्या अपनाएंगे जैसी सोच हमें आज की जिम्मेदारी से दूर कर देती है। यह टालमटोल की आदत धीरे-धीरे स्वास्थ्य को कमजोर करती है।

नशे की बढ़ती प्रवृत्ति भी चिंताजनक : तंबाकू, शराब और अन्य मादक पदार्थों का सेवन युवाओं में तेजी से बढ़ रहा है। यह केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को नहीं, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक जीवन को भी प्रभावित करता है। क्षणिक आनंद के लिए दीर्घकालिक हानि को नजरअंदाज करना समझदारी नहीं है, फिर भी लोग इसे हल्के में लेते हैं।

नियमित स्वास्थ्य जांच की उपेक्षा भी समस्या को बढ़ाती है। हम अक्सर तब तक डॉक्टर के पास नहीं जाते जब तक बीमारी गंभीर न हो जाए। प्रारंभिक अवस्था में पहचानी गई बीमारी का उपचार सरल और प्रभावी होता है, लेकिन लापरवाही उसे जटिल बना देती है। यदि हम नियमित जांच और संतुलित दिनचर्या अपनाएं, तो कई रोगों से बचा जा सकता है।

स्वास्थ्य की अनदेखी का एक सामाजिक पहलू भी है। समाज में बाहरी सफलता को अधिक महत्व दिया जाता है। लोग आर्थिक प्रगति, भौतिक सुख-सुविधाओं और सामाजिक प्रतिष्ठा को प्राथमिकता देते हैं। स्वस्थ जीवनशैली को अक्सर समय की बबार्दी समझ लिया जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि यदि शरीर और मन स्वस्थ नहीं हैं, तो किसी भी उपलब्धि का आनंद नहीं लिया जा सकता।

समाधान स्पष्ट है : हमें अपनी सोच और प्राथमिकताओं में परिवर्तन लाना होगा। नियमित व्यायाम, योग और प्राणायाम को जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। प्रतिदिन कम से कम 30 से 45 मिनट शारीरिक गतिविधि शरीर को सुदृढ़ बनाती है। संतुलित और पौष्टिक आहार, पर्याप्त जल सेवन और समय पर भोजन स्वास्थ्य की नींव हैं।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान, संगीत, पढ़ाई और परिवार के साथ समय बिताना उपयोगी है। डिजिटल उपकरणों का सीमित उपयोग और पर्याप्त नींद भी आवश्यक है। विशेषज्ञों के अनुसार, 7-8 घंटे की नींद शरीर और मस्तिष्क को पुनः ऊजार्वान बनाती है। हमें यह समझना होगा कि स्वास्थ्य कोई विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है। धन कमाने की दौड़ में यदि हम स्वास्थ्य खो देते हैं, तो बाद में वही धन उसे वापस पाने में खर्च करना पड़ता है। इसलिए बेहतर है कि हम समय रहते सजग हो जाएं।

अंततः स्वास्थ्य ही जीवन की असली पूंजी है। इसे सहेजना आत्मसम्मान और आत्मप्रेम का प्रतीक है। यदि हम स्वयं स्वस्थ रहेंगे, तो परिवार और समाज भी स्वस्थ रहेगा। जीवन की सच्ची समृद्धि वही है जिसमें शरीर सशक्त, मन प्रसन्न और आत्मा संतुष्ट हो। इसलिए आज ही संकल्प लें कि हम अपने स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे और "स्वास्थ्य ही धन है" को केवल कहावत नहीं, बल्कि जीवन का सिद्धांत बनाएंगे।

SPARSH
(HEM CREATIONS PTV LTD)

SAREES AND LEHENGAS

5B ROWDON STREET 2nd FLOOR
KOLKATA
PH. : 98312 71251 / 033 44064987



UNSTITCHED SUITS
26A, Park Lane, Ist Floor, Kolkata
PH. : 98315 61251 / 033 44064982



कामयाबी की नई कहानियां लिख रही हैं महिला उद्यमी वनिता बाजोरिया

वनिता के तीन नए आउटलेट पाइपलाइन में हैं - जिसमें नाइमेरा भी शामिल है, जो अप्रैल 2026 में चौरंगी में खुलेगा। यह सफर जनवरी 2013 में पहले 7डी एडवेंचर प्लेक्स के साथ शुरू हुआ। उनकी यात्रा ग्रोथ, इनोवेशन और निडर लीडरशिप के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दिखाती है।



महिला उद्यमी की सफलता की कहानी

आज की महिला उद्यमी अब सफलता की पारंपरिक परिभाषाओं तक सीमित नहीं हैं। वे इनोवेटर, रिस्क लेने वाली और लीडर हैं, जो लचीलेपन और विजन के साथ इंडस्ट्री को फिर से परिभाषित कर रही हैं। हालांकि रास्ता शायद ही कभी आसान होता है, लेकिन प्रगति का उनका सफर इस बात की याद दिलाता है कि जब महत्वाकांक्षा को दृढ़ता के साथ जोड़ा जाता है, तो यह स्थायी प्रभाव डालता है।

एक महिला उद्यमी की यात्रा अक्सर पहला बिजनेस शुरू करने से बहुत पहले शुरू हो जाती है। शुरूआत एक मानसिकता से होती है – जिसे प्रोत्साहन, आत्मविश्वास और सीमाओं से परे सपने देखने के साहस से पोषित किया जाता है। चेन्नई में चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी होने के नाते वनिता बाजोरिया भाग्यशाली थीं कि उनका पालन-पोषण एक ऐसे परिवार में हुआ, जिसने महत्वाकांक्षा और स्वतंत्रता को महत्व दिया। अपनी मां से बहुत प्रभावित होकर, उन्होंने कम उम्र में ही आत्मविश्वास, अनुशासन और लचीलेपन के महत्व को सीखा। ये ऐसे मूल्य थे, जिन्होंने बाद में उनकी उद्यम यात्रा को आकार दिया।

कई महिलाओं की तरह, उनके शुरूआती साल आत्मविश्वास की कमी, साथियों के दबाव और अनिश्चितता से भरे थे। फिर भी, उनके परिवार के लगातार समर्थन ने उन्हें इन चुनौतियों से निपटने और मजबूत बनकर उभरने में मदद की। शादी के बाद वह कोलकाता आईं, जहां उन्होंने अपनी व्यक्तिगत और पेशेवर आकांक्षाओं को संतुलित करते हुए नई जिम्मेदारियों को अपनाया। एक कामकाजी मां के रूप में, उन्होंने समय प्रबंधन, अनुकूलनशीलता और वास्तव में क्या मायने रखता है, उसे प्राथमिकता देने के महत्व को सीधे तौर पर सीखा – ये ऐसे कौशल हैं जो उद्यमिता में अमूल्य हैं।

वाणिज्य और नवाचार के प्रति अपने जुनून से प्रेरित होकर वनिता ने शहर में नए अनुभव के साथ उद्यमिता के क्षेत्र में कदम रखा। उनकी यात्रा जनवरी 2013 में मणि स्क्वायर मॉल में कोलकाता के पहले 7डी एडवेंचर प्लेक्स के साथ शुरू हुई, जिसके बाद 2014 में क्वेस्ट मॉल में शहर का पहला 11डी एडवेंचर प्लैक्स शुरू हुआ। 2015 में, उन्होंने एक अनोखे वीआर और अनुभव के साथ क्षेत्र का पहला हॉरर हाउस लॉन्च करके सीमाओं को और आगे बढ़ाया, जिसने सभी आयु समूहों के दर्शकों को आकर्षित किया। नवंबर 2015 में, अपने पार्टनर अमित बाजोरिया के साथ, उन्होंने अमित हॉस्पिटैलिटी एलएलपी की स्थापना की, हार्ड रॉक कैफे की कट्टर प्रशंसक होने के नाते, उन्होंने प्रतिष्ठित वैश्विक ब्रांड को कोलकाता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, शहर को प्रसिद्ध रॉक कल्चर लाइव संगीत और क्लासिक अमेरिकी डाइनिंग से परिचित कराया। दिसंबर 2018 में उन्होंने साउथ सिटी मॉल में लॉर्ड ऑफ द ड्रिंक्स लॉन्च किया। 2022 में वेनेटो और द वेयरहाउस कैफे के खुलने के साथ विस्तार जारी रहा, दोनों अपनी विशिष्ट अनुभुति के लिए जाने जाते हैं। तीन नए आउटलेट पाइपलाइन में हैं – जिसमें नाइमेरा भी शामिल है, जो अप्रैल 2026 में चौरंगी में खुलेगा। उनकी यात्रा ग्रोथ, इनोवेशन और निडर लीडरशिप के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दिखाती है।

उनकी यात्रा कई महिला उद्यमियों द्वारा शेयर की गई एक सच्चाई को दिखाती है कि असफलता कोई अंत नहीं है, बल्कि सीखने का एक मौका है। महिलाएं लीडरशिप में इमोशनल इंटेलिजेंस, सहानुभूति और लचीलापन लाती हैं और अक्सर ऐसे बिजनेस गढ़ती हैं, जो कस्टमर-फोकस्ड और सबको साथ लेकर चलने वाले होते हैं। एंटरप्रेन्योरशिप महिलाओं को एक और सशक्त बनाने वाली प्रेरणा देती है, वह है फाइनेंशियल आजादी। यह उन्हें आजादी से फैसले लेने, आत्मविश्वास से लीड करने और अपनी शर्तों पर सफलता को परिभाषित कराती है। आज, उनकी कहानी उन महिलाओं के लिए प्रेरणा का काम करती है, जो संदेह और महत्वाकांक्षा के चौराहे पर खड़ी हैं। उनका संदेश साफ है: शुरू करने का कोई सही समय नहीं होता। अपने जुनून को फॉलो करना, खुद पर विश्वास करना, और डर के बावजूद पहला कदम उठाना – असाधारण परिणाम दे सकता है।

जब महिलाएं उद्यमी के रूप में आगे बढ़ती हैं, तो वे सिर्फ.बिजनेस बनाने से कहीं ज्यादा बड़ा काम करती हैं। वे आत्मविश्वास, समुदाय और एक ऐसा भविष्य बनाती हैं, जहां महत्वाकांक्षा का कोई लिंग नहीं होता।



स्वामीनारायण मंदिर

वास्तुशिल्प का चमत्कार हैं दुनिया के स्वामीनारायण मंदिर



मनीष भाई जसानी
श्री बी.ए.पी.एस स्वामीनारायण मंदिर, कोलकाता

भारत ही नहीं दुनिया के कई शहरों में भगवान स्वामीनारायण के मंदिर बने हैं। भगवान स्वामीनारायण ने स्वामीनारायण सम्प्रदाय की स्थापना की थी और लोगों को भगवान की भक्ति, धर्म और सेवा का मार्ग दिखाया। स्वामीनारायण ने भक्ति और उपासना को स्थायी रूप देने के लिए पत्थर के भव्य मंदिर बनवाए। ये मंदिर न केवल पूजा के स्थान थे, बल्कि धार्मिक शिक्षा, समाज सेवा, वेद-शास्त्रों का अध्ययन और गरीबों की मदद के केंद्र भी बने। स्वामीनारायण ने 1822 से 1828 के बीच 6 सालों में 9 मंदिर बनवाए। वे स्थान हैं अहमदाबाद, मूरी, भुज, वड़ताल, जेतलपुर, ढोलेरा, ढोलका, जूनागढ़ और गढड़ा।

दिल्ली का अक्षरधाम मंदिर एक वास्तुशिल्प चमत्कार है, जो हजारों वर्षों की समृद्ध परंपरा को दशार्ता है और भगवान स्वामीनारायण को समर्पित है। 'अक्षरधाम' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'अक्षर' यानी जो कभी नष्ट न हो, और 'धाम' अमेरिका में अक्षरधाम मंदिर का उद्घाटन 8 अक्टूबर 2023 को हुआ था। इसके अलावा अबू धाबी में बोचासनवासी श्री अक्षर पुरूषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बैप्स) की ओर से संचालित स्वामीनारायण मंदिर का उद्घाटन फरवरी 2024 में हुआ था। दिल्ली का अक्षरधाम मंदिर भारत की संस्कृति और परंपराओं की झलक दिखाने वाला एक अद्भुत मंदिर है, जो भगवान स्वामीनारायण को समर्पित है। दिल्ली के अक्षरधाम में प्रवेश करते ही 11 फुट ऊंची भगवान स्वामीनारायण की प्रतिमा के दर्शन होते हैं। यहां हर कोना आध्यात्मिकता से भरा हुआ महसूस होता है।

कोलकाता के जोका में बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर है, जो पास डायमंड हार्बर रोड पर स्थित है। यह मंदिर जोका से कुछ किलोमीटर दूर 'वासा' के पास है। आप जोका से डायमंड हार्बर रोड पर जाने वाली बस ले सकते हैं। यह मंदिर कोलकाता के सबसे उल्लेखनीय मंदिरों में से एक है। यह मंदिर भगवान स्वामीनारायण और उनकी शिक्षाओं को समर्पित है 2014 में स्थापित, यह मंदिर भगवान स्वामीनारायण की बंगाल की खाड़ी में गंगा सागर की यात्रा की याद में बनाया गया था, जब वे नीलकंठ वर्णी के रूप में इस क्षेत्र से गुजरे थे।

मंदिर में सात शिखर, दो समाधि, पांच पतली छतें, 247 स्तंभ और 400 मूर्तियां हैं। यह सफेद संगमरमर और गुलाबी राजस्थानी बलुआ पत्थर से बना है।



स्वामीनारायण ने भक्ति और उपासना को स्थायी रूप देने के लिए पत्थर के भव्य मंदिर बनवाए। ये मंदिर न केवल पूजा के स्थान थे, बल्कि धार्मिक शिक्षा, समाज सेवा, वेद-शास्त्रों का अध्ययन और गरीबों की मदद के केंद्र भी बने। स्वामीनारायण ने 1822 से 1828 के बीच 6 सालों में 9 मंदिर बनवाए।

फरवरी 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अबू धाबी (यूएई) में पहले हिंदू मंदिर का उद्घाटन किया था। इस मंदिर की कल्पना प्रमुख स्वामी महाराज ने 1997 में की थी। यह मंदिर 7 शिखरों वाला पारंपरिक हिंदू मंदिर है, जिसे नागर शैली में बनाया गया है।

यह मंदिर बैप्स स्वामीनारायण संस्था के सत्संग गतिविधियों का एक केंद्र है। यूएसए में पहला मंदिर 1987 में न्यू जर्सी में बना। आज अमेरिका में 20 से अधिक स्वामीनारायण मंदिर हैं।

अमेरिका का अक्षरधाम मंदिर : 8 अक्टूबर 2023 को न्यू जर्सी के रॉबिंसविल शहर में अक्षरधाम मंदिर का उद्घाटन हुआ। यह मंदिर महंत स्वामी महाराज के नेतृत्व में बना है और प्रमुख स्वामी महाराज की इच्छा को पूरा करता है। यह मंदिर अमेरिका का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है और ऊंचाई में 191 फीट का है। मंदिर 185 एकड़ में फैला है। इसे बनाने में 12 साल लगे। क्लीवलैंड में बना मंदिर पहले 100 साल पुराना चर्च था। इस चर्च को मंदिर में बदलने में सिर्फ दो सालों का समय लगा। स्वामीनारायण संप्रदाय ने इसे 180 करोड़ रुपये में साल 2023 में खरीदा था।

गुजरात के गांधीनगर में स्थित अक्षरधाम मंदिर : गुजरात के गांधीनगर में स्थित अक्षरधाम मंदिर सिर्फ एक मंदिर नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक परिसर है जो भारत की प्राचीन वास्तुकला, परंपराओं और आध्यात्मिकता को दशार्ता है। यह मंदिर भगवान स्वामीनारायण को समर्पित है। जैसे ही आप मंदिर के अंदर कदम रखते हैं, वहां की शांति और दिव्यता आपके मन को सुकून देती है। इसके बाहर की दीवारों और खंभों पर की गई नक्काशी राजा-महाराजाओं के जमाने के पुराने मंदिरों की याद दिलाती है। मंदिर के अंदर, गलियारों और फव्वारों पर की गई सजावट भी हिंदू धरोहर की झलक देती है। 1998 में निर्माण कार्य शुरू हुआ और 7000 से अधिक शिल्पकारों ने मिलकर 7 वर्षों में इसे पूर्ण किया। यह मंदिर लकड़ी, संगमरमर और बलुआ पत्थर से बना है। मंदिर की लंबाई 356 फीट और चौड़ाई 316 फीट है। इसकी दीवारों पर सुंदर और बारीक नक्काशी की गई है, जो भारत की प्राचीन शिल्पकला का अद्भुत उदाहरण है।



अबू धाबी का बैप्स मंदिर : फरवरी 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अबू धाबी (यूएई) में पहले हिंदू मंदिर का उद्घाटन किया था। इस मंदिर की कल्पना प्रमुख स्वामी महाराज ने 1997 में की थी। यह मंदिर 7 शिखरों वाला पारंपरिक हिंदू मंदिर है, जिसे नागर शैली में बनाया गया है। मंदिर में कई मूर्तियां और दीवारों पर कहानियां, विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों की एकता को दिखाती हैं। यह मंदिर परिसर 27 एकड़ में फैला है, जिसमें 13.5 एकड़ पर मंदिर और बाकी 13.5 एकड़ में पार्किंग है, जिसमें 1,400 कारें और 50 बसें पार्क हो सकती हैं। मंदिर की ऊंचाई 108 फीट, लंबाई 262 फीट, और चौड़ाई 180 फीट है। यूएई के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जाएद अल नाहयान ने 2019 में यह भूमि दान की थी। बाहरी हिस्सा राजस्थान के गुलाबी पत्थर से बना है, जबकि अंदरूनी हिस्सा इतालवी संगमरमर से तैयार किया गया है। इस मंदिर के निर्माण में 20,000 टन पत्थर और संगमरमर का उपयोग किया गया।

लंदन में नेसडेन अक्षरधाम मंदिर : नेसडेन अक्षरधाम मंदिर, जिसे बैप्स श्री स्वामीनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है। लंदन, यूके में स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। पहला विदेशी स्वामीनारायण मंदिर 1945 में नैरोबी, केन्या में बना।

यूके में पहला मंदिर 1973 में बोल्टन में बना, फिर लंदन, कार्डिफ, लीसेस्टर आदि में भी मंदिर का निर्माण किया गया। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, दुबई, फिजी, मॉरीशस, थाईलैंड, न्यूजीलैंड में भी स्वामीनारायण मंदिर हैं।11 नवंबर को श्री स्वामीनारायण मंदिर की 200वीं वर्षगांठ मनी थी, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हिस्सा लिया था।





महावीर जैन



वर्तमान जिनशासन नायक 1008 श्री महावीर भगवान की 2624 वीं जन्म जयंती चैत्र सुदी त्रयोदशी (31/03/2026) के दिन मनाई गयी। हम सभी भगवान महावीर की छत्रछाया में ही पलते-बढ़ते रहे हैं। अहिंसा के पुजारी के जियो और जीने दो के संदेश से पूरे संसार के प्राणी मात्र की कल्याण की भावना करने वाले हम सभी के पितामह का जन्म बिहार के छोटे से ग्राम वैशाली जिले के कुंडलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला के यहां हुआ। बालब्रह्मचारी पांच नामधारी (वीर, अतिवीर, सन्मति, वर्दमान, महावीर) महावीर भगवान का वर्ण पीत, जिनकी ऊंचाई 7 हाथ थी। भगवान महावीर के कुल 11 गणधर में मुख्य गणधर इंद्रभूति (गौतम) थे, भगवान महावीर ने पांच पापों का त्याग (हिंसा, झूठ, कुशील, चोरी, परिग्रह) कर, पांच व्रत (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) का पालन करने का संदेश दिया, हम सभी के जन जन के नायक विश्व में शांति का संदेश देने वाले सभी के आदर्श भगवान महावीर की जन्म जयंती जन जन के लिए मंगलमय, कल्याणकारी एवं शुभ हो।

महावीर जयंती
की हार्दिक शुभकामनाएं





RAKESH - SHARMILA SOGANI

RISHIT - SURBHI ✦ NIMIT - SHRISTI ✦ MIRAYA -TEERAJ

क्यों मंद पड़ गया कोलकाता का कपड़ा व्यवसाय ?



कन्हैयालाल कोठारी

आज कोलकाता का कपड़ा व्यवसाय पुराने तरीकों, आधुनिकीकरण के अभाव और उच्च परिचालन लागत के साथ साथ राजनीतिक कारणों से भी पिछड़ता गया है। 1980 के दशक से ही श्रमिक संकट और कम निवेश के कारण कपड़ा उद्योग सूरत और मुंबई जैसे आधुनिक केंद्रों की तुलना में पीछे रह गया।

कोलकाता क्यों मुम्बई से पीछे रह गया जबकि ब्रिटिश काल में दोनों की महत्ता समान थी ? तत्कालीन विधानचंद्र राय की सरकार ने कृषि क्षेत्र में भूमि सुधार की पहल की, पर उनकी मृत्यु के पश्चात यह काम ठप पड़ गया। फिर वाम दलों का शासन हुआ।

जब वो सत्ता में आये तो मिलों में हड़ताल होना सामान्य बात हो गई। प्रायः हड़ताल हिंसा का रूप ले लेती, जिसमें लोगों को जान भी गँवाना पड़ता। बड़े उद्योगपति मुम्बई, दिल्ली, कर्णावती, हैदराबाद आदि शहरों की ओर भागने लगे।

आदित्य बिड़ला को उनकी कार से बाहर खींच लिया गया, जब वो अपने और मुख्यमंत्री कार्यालय के बीच आधा किलोमीटर की दूरी तय कर रहे थे। उनके कपड़े फाड़ दिए गए और उन पर भद्दे कमेंट्स किये गए जब वो उन फटे कपड़ों और फटी जांघिया के साथ अपने कार्यालय में प्रविष्ट हुए। उस शाम के बाद वो पुनः कभी पश्चिम बंगाल नहीं गये।

उन्होंने अपने समूचे संगठन को मुंबई स्थानांतरित कर दिया। टाटा ने तुरंत अपना निर्णय बदल दिया और मुंबई से ही अपना काम चालू रखा। जेके और थापर ने भी डरकर बंगाल छोड़ दिया। छोटी और मंझोली कंपनियाँ ही बची थीं, वो भी बहुत ही कम क्षेत्र में। व्यवसायी अन्य शहरों की ओर भाग लिए। दिल्ली एवं उससे सटे कस्बे फरीदाबाद, गाजियाबाद आदि इन मंझोले उद्योगों के नए केंद्र बन गए। कर्णावती, बड़ोदरा, राजकोट ने भागे हुए गुजरातियों, मारवाड़ियों, पारसियों को आकर्षित किया। बड़ी और अंतरराष्ट्रीय स्तर की कंपनियों ने अपना सब कुछ छोड़ के भागने में भलाई समझी।

इसके अलावा कोलकाता के अधिकांश पारंपरिक करघे और चरखियां पुरानी तकनीक पर आधारित हैं, जो आधुनिक प्रतिस्पर्धी बाजार में टिक नहीं पा रही हैं। प्रोसेसिंग यूनिट्स, डाई, और रसायनों की लागत में वृद्धि के कारण कपड़ा निर्माण की लागत बढ़ गई है। 1980 के दशक का श्रमिक संकट और औद्योगिक अशांति ने निवेश को हतोत्साहित किया, जिससे उद्योग का विकास रुक गया। गुजरात के सूरत और अन्य शहरों के मुकाबले, जो आधुनिक तकनीक और तेज उत्पादन क्षमता का उपयोग करते हैं, कोलकाता के पारंपरिक उद्योग पीछे रह गए हैं।

इसके बावजूद, कोलकाता का होजरी और रेडीमेड कपड़ों का क्षेत्र अभी भी एक बड़े आपूर्तिकर्ता के रूप में बना हुआ है। हालांकि तकनीकी उन्नयन की कमी इसे आगे बढ़ने से रोक रही है। एक मोटा अनुमान है कि पिछले 10 साल से कोई व्यापारी राजस्थान या गुजरात से कोलकाता आकर बड़े पैमाने पर कपड़ा व्यवसाय शुरू करने नहीं आया। अब तो यूपी, बिहार और ओडिशा से कर्मचारी या सेल्समैन भी कोलकाता नहीं आ रहे हैं।

वसूली, रंगदारी और भय के माहौल ने लोगों को तनावग्रस्त कर दिया है और नयी पीढ़ी के किशोर भी यहां की कम सेलरी वाली नौकरी के प्रति रुचि कम दिखा रहे हैं। बंगाल में उद्योगों का माहौल अब रह ही नहीं गया है।



स्व. निर्मल कुमार जैन (सेठी)

जन्म -18 जुलाई 1938-देहावसान 27 अप्रैल, 2021)





के पंचम स्मृति दिवस पर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा की ओर से

जैन धरोहर दिवस

का आयोजन

प्रथम दिवस

दिनांक - 26 अप्रैल 2026 रविवार

समय : दोपहर 1:00 बजे से शाम 5:00 तक

स्थान : घोनो धान्यो ऑडिटोरियम, अलीपुर, कोलकाता

अध्यक्षता
श्रीमान कमल सिंह रामपुरिया

मुख्य अतिथि
श्रीमान गजराज गंगवाल

द्वितीय दिवस

दिनांक - 27 अप्रैल 2025 सोमवार

समय :दोपहर 1:00 बजे से शाम 5:00 तक

स्थान :चारुलता रिसॉर्ट, पंचकोट (पंचेत पहाड) जिला पुरुलिया (WB)

अध्यक्षता
श्रीमान डा. शुभा मजमूदार

मुख्य अतिथि
श्रीमान प्रदीप चौपडा

संस्था के बारे में तथ्य : मुख्य बिंदु

- 27 अप्रैल 2022 को पहली बार स्व निर्मल कुमार जैन सेठी की स्मृति में मना था जैन धरोहर दिवस
- सभी जैन स्मारकों और स्थलों की सुरक्षा और संरक्षण का लक्ष्य रखा गया।
- जैन धरोहर दिवस का आयोजन वर्ष 2022 में दिल्ली एवं मथुरा में वर्ष 2023 में गुवाहाटी एवं सूर्यपहाड़ में, वर्ष 2024 में श्रवणबेलगोला एवं बंगलोर में, वर्ष 2025 में पूणे एवं मुम्बई में मनाया गया था।
- स्व निर्मल कुमार जैन सेठी की प्रथम पुण्य तिथि पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में 27 अप्रैल 2022 को भव्य आयोजन
- भारत के वरिष्ठ आर्कियोलॉजिस्ट शुभ मजुमदार ने प्रतिवर्ष 27 अप्रैल को जैन धरोहर दिवस मनाने की घोषणा की

- इसकी अनुमोदना समस्त दिगम्बर, श्वेताम्बर एवं अन्य समाज से जुड़ी संस्थाओं के 1 हजार से अधिक की संख्या में उपस्थित महानुभावों ने की।
- पिछले 5 वर्षों से सम्पूर्ण भारतवर्ष में वर्ष 2022 में 90, वर्ष 2023 में 150, वर्ष 2024 में 200 एवं वर्ष 2025 में 490 स्थानों पर जैन धरोहर दिवस का पालन
- इस बार सम्पूर्ण भारतवर्ष में 600 स्थानों पर जैन धरोहर दिवस मनाये जाने का लक्ष्य

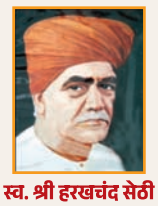
आइये, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अंतर्गत नौ संस्थाएं नवरत्न के रूप में समाज को देने वाले और देश एवं विश्व के लगभग 40 से अधिक देशों में जैन पुरातत्त्व व धरोहरों के संरक्षण व जागरुकता कार्यक्रमों के जरिये अपना अविस्मरणीय योगदान देने वाले महापुरुष की स्मृति में पूरे उत्साह से धरोहर दिवस मनायें।

आप सभी से अनुरोध है कि इस अवसर पर अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें।

आयोजक :
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
नई दिल्ली

विनीत :
सेठी ट्रस्ट
नई दिल्ली । गुवाहाटी । सिलचर

संयोजक :
श्री दिगम्बर जैन समाज
कोलकाता


स्व. श्री हरखचंद सेठी


स्व. श्री निर्मल कुमार सेठी


स्व. दिनेश कुमार सेठी


स्व. सोहनी देवी सेठी


श्री हुलासचंद सेठी, तिनसुकिया


श्री महावीर प्रसाद सेठी, सिल्चर


श्री धर्मेन्द्र सेठी, दिल्ली



रश्मि अग्रवाल

समग्र स्वास्थ्य बहाल रखता है आयुर्वेद

अधुनिक युग में आयुर्वेद का महत्व बढ़ गया है। क्योंकि यह केवल बीमारी का इलाज ही नहीं, बल्कि जीवन शैली में बदलाव, जड़ी-बूटी, योग और ध्यान के माध्यम से समग्र स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देता है। इसी संदर्भ में हमारा सौभाग्य था कि हमें 30 साल पहले आयुवेर्दाचार्य राधेश्याम श्रीवास्तव मिले। उन्होंने आज हमें इतना पारंगत कर दिया है कि हमलोग छोटी - मोटी बीमारियों खुद ठीक कर लेते हैं। हर मौसम में अपने वायु, पित्त और कफ को नियंत्रण में रख सकते हैं। अद्भुत जड़ी बूटियों की पहचान में हम



सक्षम हैं। 30 सालों से हर महीने हम 50 महिलाएं आयुर्वेद का क्लास करती हैं। हर ऋतु के हिसाब से साग वगैरह लेते हैं. वसंत की नवरात्र में नीम की गोलियां बनाकर दिन में लेते हैं। दशमूल काढा, वसंत और शरद ऋतु में दिन में दो बार लेते हैं। सितोप्लादी, हिंग्वाष्टक व हरड़ चूर्ण, श्रीफला अमृत गोली, अमृत धारा जैसी अनेक तरह की दवाइयां बनाना हमलोगों ने सीखा है। ये दवाएं हम घर पर ही बनाते हैं। जो लोग आयुर्वेदिक द वाइयों का नियमित सेवन करते हैं, उन्हे ये दवाएं असरदार लगती हैं। हम लोग यौगिक तरीके से शुद्ध च्यवनप्राश भी बनाते हैं। अंत में मेरा सबसे विनम्र निवेदन है कि सबको आयुर्वेद के बारे में कम से कम बुनियादी जानकारी रखनी चाहिए और दवाएं घर पर ही बनाना सीखना चाहिए, जिससे कि ताजा दवाइयां मिल सकें।

मानवता का उपकार करने वाले हिमालय के ऋषि

प्राचीन काल में, ऋषिगण दीघार्यु की कामना करते थे ताकि वे धार्मिक अनुष्ठान, ब्रह्मचर्य, पवित्र अध्ययन, उपवास, यम और नियम (शुभ जीवन के नियम), होम आदि आध्यात्मिक क्रियाएँ कर सकें। ऋषिगण लोगों के रोगों को दूर करके उनकी सहायता भी करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से, ऋषिगण हिमालय में एकत्रित हुए।

उन ऋषियों में अंगिरस, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप, भृगु, आत्रेय, गौतम, सांख्य, पुलस्त्य, नारद, असित, अगस्त्य, वामदेव, मार्कंडेय, अश्वलायन, परीक्षी, भिक्षु, आत्रेय, भारद्वाज, कपिंजल, विश्वामित्र, अश्मरथ्य, भार्गव, च्यवन (जिनके नाम पर च्यवनप्राश का नाम रखा गया है), अभिजीत, गार्ग्य शामिल थे। शांडिल्य, कौंडिल्य, वीं, देवल, गालव, सांकृत्य, बैजवापि, कुशिका, बदरायण, बादिशा, सरलोमन, काप्य, कात्यायन, कंकायन (जिनके नाम पर कंकायन वटी टेबलेट का नाम रखा गया है), कैकशेय, धौम्य, मारीच, कश्यप, शरकाराक्ष, हिरण्याक्ष, लोकाक्ष, पेंगी, शौनक शकुनेय, मैत्रेय, मैमतयानी, वैखानस और वलाखिल्य।



raProcure®
RAPID API PROCUREMENT



DEDICATED B2B PROCUREMENT PORTAL WITH INVENTORY MANAGEMENT

at raProcure Industries directly connect with Vendors of

- Raw Materials, Consumables
- Stores and Spares
- Tools and Tackles
- Fasteners
- Electricals
- Mechanicals
- Refractories
- And all other items used in manufacturing process

- Multiple inquiries in one click
- Price Discovery and Auto Price Comparatives in the Portal itself

REGISTER NOW
www.raprocure.com
+91 90888 80077

• Advanced Technology • Easy to Use

With best compliments from:

PARAS KOCHAR
CONSULTANCY SERVICES PVT LTD

10, Princep Street, 1st Floor, Kolkata - 700072 | 9831024563 / 9831155534

OUR SERVICES

- Income Tax
- Goods & Service Tax
- Book Keeping & Accounting Related Services
- ROC Compliances
- Financial Planning
- Benami Transaction Consultancy & Representation
- Digital Signature Certificate
- Other Allied Professional Services



ACCURACY RELIABILITY PROFESSIONALISM TRUST

Your Trusted Partner in Financial & Compliance Solutions



भगवान
महावीर जयंती
की हार्दिक शुभकामनाएं



नरेंद्र पांड्या- प्रिया पांड्या, अक्षय पांड्या - जेनिश पांड्या (पुत्र- पुत्र वधू)
निकिता बिनायकिया- राहुल बिनायकिया (बेटी - दामाद)
श्रेष्ठ पांड्या एवं हृदय पांड्या (पोत्र) आगम बिनायकिया (दोयता)

MOHANLAL NARENDRA KUMAR AKSHAY KUMAR PANDYA

CG-10, Salt Lake, Kolkata ✦ Jain Temple Road, Dimapur Nagaland



हिंदू नववर्ष

(विक्रम संवत 2083)

भारत में आज के दौर में हिंदू नववर्ष को लेकर उत्साह बढ़ रहा है, जो पश्चिमी कैलेंडर के बजाय अपनी पारंपरिक संस्कृति (भारतीय नववर्ष) के प्रति गौरव और आत्म-चेतना को दशार्ता है.

सनातन धर्म की आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक



संतोष कुमार सराफ

हिंदू नववर्ष (विक्रम संवत 2083) का आगमन केवल कैलेंडर बदलने की घटना नहीं है, बल्कि यह सनातन धर्म की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना को पुनर्जीवित करने का एक अवसर है। वर्तमान वैश्विक और सामाजिक परिवेश में इसे हर्षोल्लास के साथ मनाना निम्नलिखित कारणों से मनाया जाता है।

सांस्कृतिक पहचान और गौरव

हिंदू नववर्ष 'चैत्र शुक्ल प्रतिपदा' से शुरू होता है, जिसका संबंध सीधे हमारी जड़ों और प्रकृति से है। इसे मनाना इस बात का प्रतीक है कि हम अपनी गौरवशाली विरासत और कालगणना को विस्मृत नहीं कर रहे हैं। जब समाज अपनी परंपराओं को सम्मान देता है, तो उसकी नींव और अधिक मजबूत होती है।

प्रकृति और खगोल विज्ञान से जुड़ाव

पाश्चात्य नववर्ष के विपरीत, हिंदू नववर्ष वैज्ञानिक और प्राकृतिक है। इस समय वसंत ऋतु का आगमन होता है, पेड़ों पर नए पत्ते आते हैं और फसलें पकती हैं। मान्यता है कि इसी दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी। इन तथ्यों को समझकर पर्व मनाना आने वाली पीढ़ी को सनातन धर्म की वैज्ञानिकता से जोड़ता है।

सामाजिक एकजुटता

किसी भी धर्म की मजबूती उसके अनुयायियों की एकजुटता में होती है। जब पूरा समाज एक साथ घरों पर 'भगवा ध्वज' फहराता है, शोभायात्राएं निकालता है और सामूहिक पूजन करता है, तो इससे सामाजिक समरसता और एकता का संदेश जाता है। यह सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन अधर्म और वैचारिक हमलों के विरुद्ध सुरक्षा कवच का काम करता है।

युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन

आज के डिजिटल युग में युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति की ओर तेजी से आकर्षित हो रही है। यदि हम विक्रम संवत 2083 जैसे पर्वों को भव्यता से मनाते हैं, तो युवाओं में अपनी संस्कृति के प्रति जिज्ञासा और सम्मान पैदा होता है। यह उन्हें "विदेशी प्रभाव" से बचाकर "स्वदेशी गौरव" की ओर ले जाने का सशक्त माध्यम है।

संकल्प और आत्मचिंतन का समय

नववर्ष का आरंभ आत्म-निरीक्षण का अवसर है। सनातन धर्म की मजबूती के लिए हर व्यक्ति को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह अपनी भाषा, संस्कृति और संस्कारों की रक्षा करेगा।

निष्कर्ष : चैत्र प्रतिपदा का स्वागत करना केवल एक रस्म नहीं, बल्कि सनातन के पुनर्जागरण का शंखनाद है। यह हमें याद दिलाता है कि हम उस सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं जो काल की गणना 'क्षण' से लेकर 'कल्प' तक करना जानती है। यह वसंत ऋतु में शुरू होकर नई ऊर्जा, फसल की कटाई और ब्रह्मा जी द्वारा सृष्टि रचना से जुड़ा है. गुड़ी पड़वा, उगादी, और नवरेह के रूप में मनाया जाने वाला यह पर्व भारत में सांस्कृतिक एकता और हिंदू चेतना को मजबूती प्रदान करता है.

यह दिन सम्राट विक्रमादित्य द्वारा शक राजाओं पर विजय (विक्रम संवत) की याद दिलाता है, जो आत्म-सम्मान और राष्ट्र की सुरक्षा की प्रेरणा देता है. यह नववर्ष ऋतु परिवर्तन (वसंत) और रबी की फसल के समय आता है, जो हमें प्रकृति के चक्रों और पर्यावरण के महत्व की याद दिलाता है. भारत में आज के दौर में हिंदू नववर्ष को लेकर उत्साह बढ़ रहा है, जो पश्चिमी कैलेंडर के बजाय अपनी पारंपरिक संस्कृति (भारतीय नववर्ष) के प्रति गौरव और आत्म-चेतना को दशार्ता है. नववर्ष के अवसर पर आयोजित होने वाली शोभा यात्राएं, रामनवमी, और नव संवत्सर के उत्सव विभिन्न क्षेत्रों के हिंदुओं को एकजुट करते हैं. इस दिन से चैत्र नवरात्रि शुरू होती है, जो आध्यात्मिक ऊर्जा, नए संकल्प और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देती है.

हिंदू धर्म में यह दिन नई शुरूआत, शुभ संकल्प और पूजा-पाठ के लिए बेहद पवित्र माना जाता है. मान्यता है कि नव वर्ष के दिन भगवान गणेश की पूजा करने से सभी बाधाएं दूर होती हैं और साल भर सुख-समृद्धि बनी रहती है. हिंदू नव वर्ष या किसी भी नई शुरूआत पर भगवान गणेश की पूजा का विशेष महत्व माना जाता है. गणेश जी को विघ्नहर्ता यानी सभी बाधाओं को दूर करने वाले और ज्ञान-बुद्धि के देवता कहा जाता है. मान्यता है कि नए वर्ष की शुरूआत में उनकी पूजा करने से जीवन में आने वाली परेशानियां कम होती हैं और कार्यों में सफलता प्राप्त होती है. यह पूजा सालभर सुख-समृद्धि, सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास बनाए रखने के लिए भी शुभ मानी जाती है.

भारत का हृदय पुराणों में, राम और सीता के युग में, कृष्ण और पांडवों के युग में बसा हुआ है. इन आध्यात्मिक महापुरुषों ने अपने विचारों और छाप को भारत पर इस कदर उकेरा है कि न तो समय और न ही विदेशी विजय उन्हें भारतीय मानस से पूरी तरह मिटा पाई हैं. आज भी महाभारत और रामायण पर आधारित टीवी शो अन्य धारावाहिकों से कहीं अधिक दर्शक पाते हैं. इसका कारण यह है कि भारतीय मानस उन विचारों में डूबा हुआ है जो सदियों पुरानी परंपराओं से जुड़े हैं, जिनमें से कुछ वेदों जितनी ही प्राचीन हैं. इस प्रकार हम सचमुच कह सकते हैं कि भारत की अधिकांश आबादी आज भी पुराण युग में जी रही है, जब देवता पृथ्वी पर विराजमान थे और दिव्य प्राणी मनुष्यों के साथ स्वतंत्र रूप से घुलमिल जाते थे.



महावीर जयंती पर विशेष

मनुष्य कर्मों से महान बनता है, जन्म से नहीं

अनेकांतवाद महावीर स्वामी का सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक उपदेश है। इसका अर्थ है कि सत्य के कई पहलू होते हैं। किसी भी विषय को केवल एक दृष्टिकोण से देखना अधूरा ज्ञान है। हमें दूसरों के विचारों और मतों का भी सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वे भी अपने नजरिए से सही हो सकते हैं।



पवन जैन सरावगी

भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उनके उपदेश न केवल आध्यात्मिक शांति के लिए हैं, बल्कि एक आदर्श और अहिंसक समाज के निर्माण के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। हाल ही में हमने उनकी जयंती मनायी है। महावीर स्वामी के मुख्य उपदेशों को हम इन प्रमुख स्तंभों में समझ सकते हैं:

पंच महाव्रत : महावीर जी ने जीवन को शुद्ध बनाने के लिए पाँच सिद्धांतों पर चलने की प्रेरणा दी।

अहिंसा : केवल किसी को मारना ही हिंसा नहीं है, बल्कि मन, वचन या कर्म से किसी को दुःख पहुँचाना भी हिंसा है। "जियो और जीने दो" उनका मूल मंत्र था।

सत्य: हमेशा सत्य बोलें और सत्य का साथ दें।

अचौर्य : बिना अनुमति के किसी की वस्तु को ग्रहण न करना।

ब्रह्मचर्य : अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना और पवित्र जीवन जीना।

अपरिग्रह: भौतिक वस्तुओं और धन का अनावश्यक संग्रह न करना।

मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त करने के लिए उन्होंने तीन मार्ग बताए: सम्यक दर्शन: सही श्रद्धा और विश्वास। सम्यक ज्ञान का अर्थ है वास्तविक और सच्चा ज्ञान। सम्यक चरित्र का अर्थ है सही आचरण और व्यवहार। कर्म और आत्मा की स्वतंत्रता पर महावीर ने सिखाया कि मनुष्य अपने भाग्य का निमार्ता स्वयं है। आपके सुख और दुःख आपके अपने कर्मों का फल हैं, किसी दैवीय शक्ति का नहीं।

समानता: सभी आत्माएं समान हैं— चाहे वह राजा हो, रंक हो या छोटा सा कीट। जाति-पाति का भेदभाव व्यर्थ है।

भगवान महावीर के कुछ अनमोल वचन

भगवान महावीर ने कहा कि "मनुष्य अपने ही कर्मों से महान बनता है, जन्म से नहीं।" —

स्वयं पर विजय: दूसरों पर विजय प्राप्त करने से बेहतर है कि आप स्वयं पर विजय प्राप्त करें।

क्षमा: क्षमा वीर पुरुषों का आभूषण है। जो क्षमा करना जानता है, वही सच्चा साहसी है।

आत्मसंयम: अपनी इच्छाओं को वश में करना ही सबसे बड़ी तपस्या है।

भगवान महावीर के ये उपदेश आज के दौर में मानसिक तनाव को कम करने और आपसी भाईचारा बढ़ाने में बहुत मददगार साबित हो सकते हैं।

अनेकांतवाद

यह महावीर स्वामी का सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक उपदेश है। इसका अर्थ है कि सत्य के कई पहलू होते हैं। किसी भी विषय को केवल एक दृष्टिकोण से देखना अधूरा ज्ञान है। हमें दूसरों के विचारों और मतों का भी सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वे भी अपने नजरिए से सही हो सकते हैं। 'अनेकांतवाद' जैन दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण और वैज्ञानिक सिद्धांत है। सरल शब्दों में इसका अर्थ है— "सत्य के अनेक पहलू होते हैं।" यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि किसी भी वस्तु या विचार को केवल एक दृष्टिकोण से देखना अधूरा है।'अनेकांतवाद' दो शब्दों से बना है: अनेकांत (एक से अधिक अंत या गुण) और वाद (सिद्धांत)। महावीर स्वामी के अनुसार, संसार की हर वस्तु अनंत गुणों से युक्त है। हमारी बुद्धि सीमित है, इसलिए हम एक समय में किसी वस्तु का केवल एक ही पक्ष देख पाते हैं। पूर्ण सत्य को केवल 'केवली' (जिन्होंने सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त कर लिया हो) ही देख सकते हैं।

हाथी और छह अंधों का उदाहरण (प्रसिद्ध दृष्टांत)

अनेकांतवाद को समझाने के लिए अक्सर छह अंधों और एक हाथी की कहानी का उदाहरण दिया जाता है: एक अंधा हाथी के पैर को छूकर कहता है कि हाथी खंभे जैसा है।दूसरा उसकी पूंछ पकड़कर कहता है कि हाथी रस्सी जैसा है। तीसरा उसके कान को छूकर उसे सूप (छाज) जैसा बताता है। यहाँ कोई भी पूरी तरह गलत नहीं है, लेकिन कोई भी पूरी तरह सही भी नहीं है। वे सभी सत्य के केवल एक 'अंश' को देख रहे हैं। जब इन सभी अनुभवों को जोड़ा जाता है, तब हाथी का वास्तविक स्वरूप सामने आता है।

स्याद्वाद बोलने की कला

अनेकांतवाद विचार करने का तरीका है, तो 'स्याद्वाद' उसे व्यक्त करने का तरीका है। स्याद्वाद के अनुसार, हमें अपनी बात के साथ 'स्यात' (शायद या किसी अपेक्षा से) शब्द का प्रयोग करना चाहिए। उदाहरण: "यह गुलाब लाल है" कहने के बजाय "किसी अपेक्षा से यह गुलाब लाल है" कहना अधिक सटीक है, क्योंकि अंधेरे में वह काला दिख सकता है या किसी अन्य जीव की दृष्टि में उसका रंग अलग हो सकता है।

अनेकांतवाद की आज के समय में प्रासंगिकता

आज के दौर में, जहाँ वैचारिक मतभेद और कट्टरता बढ़ रही है, यह सिद्धांत बहुत प्रभावी है। सहिष्णुता हमें दूसरों के विचारों को समझने और उनका सम्मान करने की शक्ति देता है।

विवादों का अंत: जब हम यह मान लेते हैं कि सामने वाला भी अपनी जगह सही हो सकता है, तो अहंकार और टकराव खत्म हो जाते हैं।

खुला मस्तिष्क: यह हमें मानसिक रूप से लचीला बनाता है ताकि हम नए तथ्यों को स्वीकार कर सकें।

निष्कर्ष : अनेकांतवाद कट्टरता का विरोध करता है। यह बताता है कि सत्य 'निरपेक्ष' नहीं बल्कि 'सापेक्ष' होता है।

जीतो ने सारे जैन समाज को एक प्लेटफार्म पर लाया : धर्मेंद्र जैन



देश में जैन समुदाय के लोगों की सही संख्या का पता लगाने के लिए एक डायरेक्टरी बननी चाहिए और धर्मेंद्र जी इस कार्य को सितंबर तक अपने कार्यकाल में ही पूरा करना चाहते हैं।

धर्मेंद्र जैन, अध्यक्ष जीतो कोलकाता व चेयरमैन अनेकांत ग्रुप से अमित सेठ की विशेष बातचीत

जीतो : एक परिचय

जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन अर्थात जीतो एक ऐसा वैश्विक संगठन है जो जैन समुदाय के व्यापारियों, उद्योगपतियों और पेशेवरों को एकसूत्र में पिरोकर समाज के सर्वांगीण उत्थान में सहयोग देता है। संगठन अनेकांतवाद की दर्शन-भूमि पर खड़ा है। जैन दर्शन की यह अवधारणा सिखाती है कि कोई एक दृष्टिकोण अंतिम सत्य नहीं होता। दो भिन्न विचारों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना ही सच्चा ज्ञान है। यही दर्शन जीतो की कार्यशैली का आधार है।

दिगंबर-श्वेतांबर के बीच वर्षों से चले आ रहे मतभेदों को इसी उदार दृष्टिकोण से पाटने का प्रयास जीतो कर रहा है। धर्मेंद्र जी का कहना है – "आप जैनिज्म के विचार का सम्मान करें, हो सकता है एक ही विषय पर दो नजरिए हों, परन्तु दोनों अपनी जगह सही हो सकते हैं।"

एकता का महाआयोजन

कोलकाता में दिगंबर, श्वेतांबर और गुजराती जैन समाज की कुल 240 संस्थाओं को एक मंच पर लाना जीतो की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रत्येक सम्प्रदाय से एक-एक कोऑर्डिनेटर नियुक्त किया गया और तत्पश्चात नवकार मंत्र का महाआयोजन संपन्न हुआ जिसमें सर्वसम्प्रदाय के अनुयायी एकसाथ उपस्थित हुए।

धर्मेंद्र जी का स्पष्ट मत है कि जैन धर्म के सभी अनुयायियों को "जैन" टाइटल ही धारण करना चाहिए ताकि समुदाय की पहचान में एकरूपता और अखण्डता बनी रहे।

जैन डायरेक्टरी की योजना

देश में जैन समुदाय की वास्तविक जनसंख्या को लेकर अभी तक कोई प्रामाणिक आँकड़ा उपलब्ध नहीं है। इस रिक्तता को पूरा करने के लिए धर्मेंद्र जी एक व्यापक जैन डायरेक्टरी तैयार करने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने संकल्प लिया है कि यह कार्य सितंबर तक अपने वर्तमान कार्यकाल में ही पूर्ण कर लिया जाएगा।

नेटवर्किंग एवं व्यापार

जीतो केवल एक धार्मिक मंच नहीं, बल्कि एक सुदृढ़ नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म भी है। "जैन टू जैन रेफरल बिजनेस" की अवधारणा के माध्यम से समुदाय के भीतर व्यापारिक सम्बन्धों को नई गहराई दी जा रही है। मैट्रीमोनियल सेवाएँ भी इसी व्यापक ढाँचे के अंतर्गत संचालित हो रही हैं।

धर्मेंद्र जी एक महत्वपूर्ण बात कहते हैं – "पहले लोग कहते थे कि सरस्वती और लक्ष्मी एक साथ नहीं रह सकतीं, परन्तु आज बिना सरस्वती के लक्ष्मी अर्जित करना सम्भव ही नहीं।" यही सोच जीतो की शिक्षा-समर्थन नीति का प्रेरणास्रोत है।

समाज-सेवा के आयाम

जीतो की ओर से एक डे-केयर सेंटर और केयर सेंटर की स्थापना की गई है। एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रेनिंग फाउंडेशन के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। उच्च शिक्षा एवं प्रबंधन के इच्छुक विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है।

धर्मेंद्र जैन : व्यक्तित्व

अनेकांत ग्रुप के चेयरमैन और जीतो कोलकाता के अध्यक्ष धर्मेंद्र जैन 58 वर्ष की आयु में भी अपनी ऊर्जा और संकल्प के लिए जाने जाते हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में गहरी आस्था रखने वाले एक साधारण परिवार में जन्मे धर्मेंद्र जी ने बचपन से ही माता-पिता के त्याग और संघर्ष को निकट से देखा। मात्र 15 वर्ष की आयु से शिक्षा के साथ-साथ पारिवारिक व्यवसाय में सहयोग देना आरम्भ किया। बोकारो में स्टील व्यवसाय की नींव रखी, फिर धनबाद और अंततः कोलकाता – इन तीनों शहरों में जैन समाज से सम्पर्क बनाते हुए उन्होंने अपने उद्यम को निरन्तर विस्तार दिया।

कोलकाता से विशेष अनुराग

धर्मेंद्र जी कोलकाता को दिल्ली और मुंबई की तुलना में देश का सबसे शांत और सुरक्षित महानगर मानते हैं। उनके शब्दों में – "यहाँ के लोग सुसंस्कृत और कलाप्रेमी हैं, इसीलिए उनका स्वभाव भी शालीन और सहयोगी होता है।" गरियाघाट स्थित उनके आवास से वे देर रात्रि भी निर्भय होकर आते-जाते हैं।

उन्होंने बताया कि कोलकाता एक ऐसा महानगर है जहाँ अन्य बड़े शहरों की तुलना में जैन साधु-सन्तों के चातुर्मास सबसे कम होते हैं, जबकि मुंबई, बेंगलूरू और अहमदाबाद में यह संख्या कहीं अधिक है।

विश्वास एवं दर्शन

धर्मेंद्र जी का अटल विश्वास है कि ईश्वर पर आस्था व्यक्ति को नैतिक बल प्रदान करती है। व्यापार और विश्वास उनकी दृष्टि में एक-दूसरे के पूरक हैं। "जहाँ विश्वास है, वहाँ व्यापार कभी विफल नहीं होता।"

कॉर्पोरेट और सामुदायिक नेतृत्व को वे एक ही सिक्के के दो पहलू मानते हैं। उनकी सफलता के पीछे उनकी धर्मपत्नी और उनके सहयोगियों का अमूल्य योगदान है जिसे वे सदैव स्वीकार करते हैं।

संस्कार एवं शिक्षा

जैन समाज में बच्चों को बचपन से धार्मिक शिक्षा देने की परम्परा को वे अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते हैं। इससे बड़े होने पर उनमें नैतिकता और सेवा के संस्कार स्वतः विकसित होते हैं।

राजस्थान की भौगोलिक विषमता – जहाँ जल, प्रकाश और कृषि योग्य भूमि का अभाव था – ने वहाँ के लोगों में परिश्रम और उद्यमशीलता का स्वाभाविक गुण भर दिया। यही कारण है कि राजस्थानी समाज व्यापार में कभी हार नहीं मानता।

पर्यावरण की चिन्ता

सामाजिक सरोकारों के साथ-साथ धर्मेंद्र जी पर्यावरण संरक्षण, जैविक खेती और वर्षा जल संचयन के लिए भी सक्रिय रूप से प्रयासरत हैं। ईस्ट जोन द्वारा आयोजित नेशनल जॉब फेयर 2.0 में उनकी सक्रिय भागीदारी ने युवाओं को रोजगार के नए अवसरों से जोड़ा।

With best compliments from:

Shree Vishudhanand Hospital

35-37, BURTOLLA STREET, BURRABAZAR KOLKATA - 700 007

सेवा समर्पण

CT Scan facility available

Advance ICU UNIT

Special care on dylesis unit

- Medicine Doctors
- Pulmonologist
- Orthopaedic
- Cardiologist
- General Surgeon
- Dermatologist
- ENT Surgeon
- Nephrologist
- Neurologist
- Gynecologist
- Onco Surgeon
- Urologists
- Eye Surgery
- Gastrologist
- Dietician Urologists
- Pain clinic

SWASTHA SATHI CARD FACILITIES AVAILABLE

Call to book an appointment : 40233030

With Best Compliments From

TIRUPATI INTERNATIONAL ELECTRO - CRAFT

- Manufacturer & Stockist of Jute,
- Textiles & industrial Machinery,
- A.C. Service Motor,
- Auto Variable Transformers,
- A.C. Synchrnous Motor & Spare Parts.
- Surgical Instruments



सुरेश खंडेलवाल

Regd.- Office - 11A & 20, Bhupen Roy Road, Kolkata 700 034
City Office - 17, Gauranga Mandir Road, Kusum Kanan, Kolkata 700 086
Mob.: 9830196461, 9883368888, 9830058257



श्री केड सती दादी-मां का दरबार अत्यंत आकर्षक और अलौकिक



आयोजन का नेतृत्व समाजसेवी विनोद केडिया ने किया



सफल आयोजन प्रदीप - मनोज संघई एवं समस्त संघई परिवार की ओर से किया गया।

पूरे फागुन में श्याम बाबा के भक्तों ने मनाया विराट आध्यात्मिक महापर्व

चरम पर रहा उत्साह, ज्योत जलाई गई,निशान यात्रा, हुए भजन कार्यक्रम



पूजा मिश्रा

कोलकाता। कोलकाता में फागुन का महीना आते ही भक्ति का रंग और गहरा हो जाता है। यह समय खाटू श्याम जी के भक्तों के लिए केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक महापर्व जैसा होता है। इस वर्ष भी शहर में श्याम भक्तों का उत्साह चरम पर रहा, जिसकी झलक कोलकाता की गलियों और मंदिरों में साफ दिखाई दी।

फागुन के इस पावन अवसर पर पूरे महानगर व उपनगरीय क्षेत्रों में भक्ति की लहर दौड़ गई। विभिन्न संस्थाओं ने बढ़-चढ़कर भजन संध्याओं और कीर्तन का आयोजन किया, जिससे वातावरण श्याममय हो गया। कोलकाता के श्याम प्रेमियों की निष्ठा और समर्पण का ही परिणाम है कि शहर के कोने-कोने में बाबा की ज्योत जलाई गई और भजनों के माध्यम से उन्हें रिझाया गया। इस आयोजन में कई प्रमुख संस्थाओं का सराहनीय योगदान रहा। श्री श्याम मंडल (नूतनबाजार) और श्री श्याम प्रेम मंडल (कोलकाता) ने भक्ति भाव से भरे कार्यक्रमों का आयोजन कर माहौल को संगीतमय बनाया। श्री खाटू श्याम दादी-मां के भक्तों की तत्परता और सेवा-भाव विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा, जिन्होंने पूरी श्रद्धा के साथ व्यवस्थाएं संभालीं। इसके अलावा श्री श्याम परिवार व्योम, श्री श्याम मंदिर (आलमबाजार) और श्री 108 रानीसती श्याम मंदिर के तत्वावधान में हुए भव्य कार्यक्रमों ने भक्तों के उत्साह को दोगुना कर दिया। इन सभी आयोजनों की सबसे बड़ी विशेषता थी—भक्तों की अगाध आस्था। मंदिर परिसर हों या भजन मंडलियां, हर जगह "जय श्री श्याम" का उद्घोष गूँज रहा था। यह फाल्गुनी उत्सव केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज में भाईचारे, सेवा और भक्ति के संदेश को प्रसारित करने का एक सशक्त माध्यम बन गया।

श्री केड सती दादी-मां मंगल पाठ

कोलकाता के साल्टलेक स्थित सीएफ-83, सेक्टर-1 में श्री केड सती दादी-मां के पावन अवसर पर आयोजित मंगल पाठ एवं भजन-कीर्तन ने पूरे क्षेत्र को भक्तिमय बना दिया. मंगल पाठ के मंत्रोच्चार और भजनों की मधुर धुनों ने उपस्थित श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक भाव में डुबो दिया.इस भव्य आयोजन का नेतृत्व समाजसेवी एवं उद्योगपति विनोद केडिया ने किया. कार्यक्रम में पंडित श्रीकांत शर्मा बाल व्यास ने मंगल पाठ किया. इस अवसर पर भूतनाथ मंदिर के गणेश पुजारी के अलावा मशहूर कथावाचक मालीराम शास्त्री,मुरारी लाल खेतान, दिनेश बजाज, मनमोहन बागड़ी और विक्कीराज सिकरिया सहित समाज के कई प्रतिष्ठित लोग भी उपस्थित रहे. आगंतुकों की सेवा में समस्त केडिया परिवार जुटा रहा. पत्नी अनीता केडिया, बेटी श्रेया और सृष्टि के अलावा विनोद केडिया की माताजी भी पूरी भक्ति में लीन थी. इसके अलावा केडिया परिवार में मनोज केडिया, शिवम केडिया ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया. श्री केड सती दादी-मां का यह मंगल पाठ एवं भजन-कीर्तन आयोजन भक्ति, आस्था और सामाजिक सौहार्द का अनुपम उदाहरण बना, जिसने हर भक्त के हृदय में दादी-मां के प्रति अटूट विश्वास और श्रद्धा को और प्रगाढ़ कर दिया.

संघई निवास में भक्ति संगीत की अलौकिक संध्या

महानगर के कांकुड़गाछी स्थित संघई निवास में भव्य भजन संध्या में खाटू श्याम बाबा का भाव दरबार सजा और सैकड़ों श्रद्धालु भक्ति रस में डूबे नजर आए. पूरा माहौल ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वयं खाटू धाम कोलकाता में उतर आया हो. भजन गायकों ने भी बाबा श्याम की महिमा का गुणगान किया, जिससे भजन संध्या भक्ति की अमृत वर्षा में तब्दील हो गई. इस पावन आयोजन का सफल आयोजन प्रदीप संघई, मनोज संघई, रौनक-स्पर्श एवं समस्त संघई परिवार की ओर से किया गया.

व्योम परिसर में श्याम बाबा का तृतीय फाल्गुन उत्सव

फाल्गुन मास के पावन अवसर पर न्यू अलीपुर स्थित व्योम परिसर में श्री श्याम परिवार व्योम द्वारा श्री श्याम



संघई निवास में खाटू श्याम बाबा के भव्य दरबार



मौके पर सुप्रसिद्ध भजन गायक रवि बेरीवाला और मोनू सुल्तानिया



न्यू अलीपुर के व्योम परिसर में श्री श्याम बाबा का भव्य दरबार



चंडीतल्ला मंदिर में पहुंचकर लोग अपने-अपने निशान खाटू श्याम बाबा को चढ़ाएं सीमा भावसिंहका ने बाबा को गजरा भी अर्पित किया ।



फाल्गुन में श्याम भजनवर्षा से सराबोर हुआ आलमबाजार श्री श्याम मंदिर, भक्तिमय वातावरण में डूबे श्यामप्रेमी



समाजसेवी चंद्रकांत सराफ अपनी पत्नी ज्योति सराफ के साथ मंदिर पहुंचे



फाल्गुन एकादशी में सिंघीबागानधाम में लगे बाबा श्याम के जयकारे

बाबा का तृतीय फाल्गुन उत्सव अत्यंत भव्य और श्रद्धामय वातावरण में मनाया गया. निशान यात्रा सीमा भावसिंहका की अगुवाई में व्योम परिसर से निकाली गई। फिर फागुन उत्सव मना. 21 और 22 फरवारी को दो दिवसीय इस उत्सव में व्योम परिसर के परिवारों के साथ-साथ शहर की विभिन्न श्याम मंडलियों की भी उपस्थिति रही. बाबा के दरबार में छप्पन भोग, रबड़ी, पान का बीड़ा, फल, मेवा और माखन का भोग लगाया गया. सेवा कार्यों में सीमाझअशोक भावसिंहका, शिल्पी-निखिल टिबड़ेवाल, प्रतिभा-निकुंज बेरीवाल, श्वेता-निखिल सुरेका, मंजू-दीपक गुप्ता, सुरेश-पूनम अग्रवाल, अंजू-अनूप टिबड़ेवाल सहित कई परिवारों ने अपने-अपने निमित्त सेवा अर्पित की. भजन संध्या में पंकज अग्रवाल, ललित शर्मा, विकास गोरीया, नीतू शर्मा और विशाल ने अपनी प्रस्तुतियों से भक्तों को भाव-विभोर कर दिया. दूसरे दिन 22 फरवरी, रविवार को भव्य एवं रंगारंग निशान यात्रा निकाली गयी। यह यात्रा श्याम से चंडिका मंदिर होते हुए वीआईए विवेकानंद स्टैच्यू गोल चक्कर तक गयी। संजय अग्रवाल, निकुंज बेरीवाल, अशोक भावसिंहका का विशेष योगदान रहा। पवन मित्तल ने कहा कि श्याम बाबा की भक्ति से समाज में सकारात्मक ऊर्जा आती है. मनोज चेतानी ने कहा कि निशान यात्रा श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक है।

आलमबाजार श्री श्याम मंदिर में बही भक्ति की गंगा

कोलकाता के आलमबाजार स्थित श्री श्याम मंदिर आलमबाजार में एकादशी के पावन अवसर पर आयोजित भव्य भजन संध्या में आस्था का अद्भुत सैलाब उमड़ पड़ा। फाल्गुन माह के रंग में सजा मंदिर परिसर फूलों, आकर्षक रोशनी और श्याम धुनों से गूंज उठा. सुबह अखंड ज्योति पाठ और विशेष पूजा-अर्चना के साथ कई कार्यक्रम हुए। भजन संध्या में सुप्रसिद्ध भजन गायक श्यामसुंदर शर्मा (नागपुर), हेमंत वर्मा, विशाल शर्मा ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। मंदिर के मुख्य कर्ताधर्ता गोविंद मुरारी अग्रवाल थे। मंदिर के सहसंयोजक बाल मुकुंद अग्रवाल भी सक्रिय रहे।

सिंघीबागानधाम में लगे बाबा श्याम के जयकारे

कोलकाता के सिंघी बागान स्थित श्री 108 रानी सती श्याम मंदिर में फाल्गुन एकादशी के पावन अवसर पर भक्ति और आस्था का अद्भुत संगम देखने को मिला। मंदिर परिसर जय श्री श्याम के जयकारों से गूंज उठा। आयोजन श्री 198 रानी सती श्याम मंदिर द्वारा किया गया। पंडित प्रदीप शर्मा और पंडित राजेश शर्मा के वैदिक मंत्रोच्चार के बीच श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से पूजा संपन्न की। इस अवसर पर प्रेम मिलन के मुख्य कर्ताधर्ता एवं प्रसिद्ध समाजसेवी चंद्रकांत सराफ अपनी पत्नी ज्योति सराफ के साथ मंदिर पहुंचे. दंपति ने बाबा श्याम की ज्योत ग्रहण की और दर्शन कर स्वयं को कृतार्थ बताया. मंदिर के पुजारी पंडित प्रदीप शर्मा ने कहा, फाल्गुन एकादशी पर बाबा श्याम की आराधना करने से भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं.

लेक डिस्ट्रिक्ट परिसर में श्याम बाबा की निशान यात्रा

महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर श्री श्याम भक्तों द्वारा इस वर्ष की तीसरी भव्य निशान यात्रा श्रद्धा और उल्लास के साथ निकाली गई. निशान यात्रा लेक डिस्ट्रिक्ट से प्रारंभ होकर फूलबागान, कांकुड़गाछी, मानिकतला और गिरीश पार्क होते हुए भूतनाथ के समीप स्थित काठगोला मंदिर पहुंची. पूरे कार्यक्रम को सफल बनाने में राकेश अग्रवाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही। लेक डिस्ट्रिक्ट हनुमान चालीसा टीम ने भी आयोजन में सक्रिय सहयोग दिया। इस अवसर पर देवकिशन मोहता, विनोद अग्रवाल, आशुतोष शर्मा, पंकज टिबड़ेवाल, राकेश अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, प्रियंका गोयल, लक्ष्मी टिबड़ेवाल, सुमन शर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे. कोलकाता के सॉल्टलेक के एफसी ब्लॉक स्थित श्री श्याम मंदिर नरेश देवालय में श्याम बाबा का भव्य फाल्गुन महोत्सव का आयोजन हुआ। फूलों की होली से पूरा मंदिर प्रांगण भक्ति और आनंद के रंगों में सराबोर हो गया। 56 भोग लगाये गये। देश के प्रसिद्ध भजन गायकों ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। सॉल्टलेक नरेश देवालय श्रीश्याम मंदिर से निकली भव्य निशान यात्रा भी निकली। साल्टलेक के सीजे ब्लाक से शुरू यात्रा के दौरान पूजन और जय श्रीश्याम के गगन भेदी जयकारे लगे। निशान यात्रा में श्याम भक्तों का अपार जनसैलाब देखने को मिला। पारंपरिक भजनों, ढोल-नगाड़ों और शंखनाद से वातावरण भक्तिमय हो उठा। कई स्थानों पर श्रद्धालु गुलाल खेलते नजर आए, जिससे यात्रा का माहौल होलियाना हो गया। निशान यात्रा के साथ श्रद्धा और शान के साथ श्यामबाबा की भव्य रथ यात्रा भी निकाली गई। सजे-धजे रथ पर विराजमान श्यामबाबा के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। इस मौके पर धर्मेंद्र अग्रवाल ने भी भव्य निशान यात्रा की सराहना की। गोपाल बंका को भी निशान यात्रा में लोगों में काफी उत्साह दिखा। संदीप सुल्तानिया, बाबूलाल बंका, सुरेश मित्तल, सत्यनारायण बंसल, पप्पू गुप्ता, स्वीटी अग्रवाल ने स्पष्टता न्यूज से बात की। इस पावन यात्रा में महेंद्र बंसल, रामकिशोर लुहारीवला, नरेंद्र गोयल, शंकर कारीवाल पूरे उत्साह के साथ शामिल हुए निशान और रथ यात्रा ने सॉल्टलेक में न सिर्फ भक्ति का उत्सव रचा, बल्कि आस्था, एकता और सनातन संस्कृति का सशक्त संदेश भी दिया।



सॉल्टलेक के श्री श्याम मंदिर में फाल्गुन महोत्सव की धूम,सजा बाबा का भव्य दरबार



श्री श्याम की भव्य निशान यात्रा भक्ति और उत्साह से सराबोर हुआ लेक डिस्ट्रिक्ट परिसर



श्री श्याम की भव्य निशान यात्रा भक्ति और उत्साह से सराबोर हुआ लेक डिस्ट्रिक्ट परिसर



सॉल्टलेक नरेश देवालय से निशान यात्रा में श्याम भक्तों का अपार जनसैलाब



समाजरत्न- देवदूत है चंद्रकांत सराफ



चंद्रकांत जी की निःस्वार्थ सेवा ने बदली हजारों जिंदगियां

'प्रेम मिलन' बना कोलकाता में उम्मीद का सबसे बड़ा केंद्र

स्पष्टता न्यूज

आज के समय में जब स्वास्थ्य सेवाएं आम लोगों की पहुंच से दूर होती जा रही हैं और इलाज एक महंगा सौदा बनता जा रहा है, ऐसे दौर में एक नाम ऐसा है जो न केवल उम्मीद जगाता है, बल्कि हजारों लोगों की जिंदगी में नई रोशनी भी भर रहा है—चंद्रकांत सराफ। उनके नेतृत्व में संचालित "प्रेम मिलन" संस्था आज कोलकाता में निःस्वार्थ सेवा, करुणा और मानवता की जीवंत मिसाल बन चुकी है।



समाज के लोग चंद्रकांत सराफ को केवल एक समाजसेवी नहीं मानते, बल्कि उन्हें "देवदूत" और समाजरत्न का दर्जा देते हैं। कारण भी स्पष्ट है जहां एक ओर लोग अपने लिए जीते हैं, वहीं चंद्रकांत सराफ ने अपना पूरा जीवन दूसरों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है। बिना किसी प्रचार, बिना किसी स्वार्थ और बिना किसी भेदभाव के वे वर्षों से जरूरतमंदों की मदद कर रहे हैं।

"प्रेम मिलन" संस्था के कार्यों पर नजर डालें तो यह केवल एक संगठन नहीं, बल्कि हजारों लोगों के लिए जीवनदान देने वाला केंद्र बन चुका है। 20 मार्च 2026 तक अगर गौर फरमाए तो संस्था द्वारा 42,270 निःशुल्क नेत्र (आंख) ऑपरेशन किए जा चुके हैं। यह आंकड़ा केवल संख्या नहीं, बल्कि उन हजारों लोगों की कहानी है जिन्हें फिर से दुनिया देखने का अवसर मिला। जिनकी आंखों में अंधेरा था, वहां रोशनी लाने का श्रेय चंद्रकांत सराफ को जाता है।

इसी तरह, प्रेम मिलन नर्सिंग होम में हर्निया और हाइड्रोसील के 256 सफल ऑपरेशन किए गए हैं। ये सभी ऑपरेशन पूरी तरह निःशुल्क हैं। इसके अलावा किडनी से संबंधित गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों के लिए यहां अब तक 303 डायलिसिस भी मुफ्त में किए जा चुके हैं। हाल ही में दो नई डायलिसिस मशीनों के उद्घाटन के बाद अब यहां कुल चार मशीनें उपलब्ध हैं, जिससे अधिक से अधिक मरीजों को जीवनरक्षक सुविधा मिल रही है।

सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि प्रेम मिलन में कोई कैश काउंटर ही नहीं है। यहां आने वाले किसी भी मरीज से एक रुपया तक नहीं लिया जाता। यह व्यवस्था आज के समय में लगभग असंभव सी लगती है, लेकिन चंद्रकांत सराफ ने इसे संभव कर दिखाया है। उनके लिए सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है और इसी सोच ने इस संस्था को एक अनोखी पहचान दी है।

हाल ही में संस्था द्वारा एक और महत्वपूर्ण पहल की गई है। नर्सिंग होम परिसर में एक नई स्वास्थ्य जांच सेवा शुरू की गई है, जिसके तहत आम लोगों को ईसीजी, ब्लड प्रेशर, पल्स रेट, रेंडम ब्लड शुगर और एसपीओ2 जैसी जरूरी जांचें पूरी तरह मुफ्त में उपलब्ध कराई जा रही हैं। इस पहल का उद्देश्य है कि लोग समय रहते अपनी सेहत की जांच करवा सकें और गंभीर बीमारियों से बचाव कर सकें। यह पहल खास तौर पर उन लोगों के लिए वरदान साबित हो रही है, जो आर्थिक तंगी के कारण नियमित जांच नहीं करवा पाते।



लेकिन चंद्रकांत सराफ की सेवा केवल अस्पताल तक सीमित नहीं है। वे समाज के हर उस व्यक्ति तक मदद पहुंचाने का प्रयास करते हैं, जिसे इसकी जरूरत है। जरूरतमंदों को व्हीलचेयर देना, गरीबों को चश्मा उपलब्ध कराना, ठंड के मौसम में कंबल वितरण करना, जरूरतमंदों को कपड़े देना ये सब कार्य उनके लिए सामान्य दिनचर्या का हिस्सा हैं।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे बिना किसी दिखावे के सेवा करते हैं। न कोई प्रचार, न कोई प्रसिद्धि की इच्छा सिर्फ और सिर्फ लोगों की मदद करने का जज्बा। यही कारण है कि समाज के हर वर्ग के लोग उनका सम्मान करते हैं और उन्हें एक सच्चे सेवाभावी व्यक्तित्व के रूप में देखते हैं।

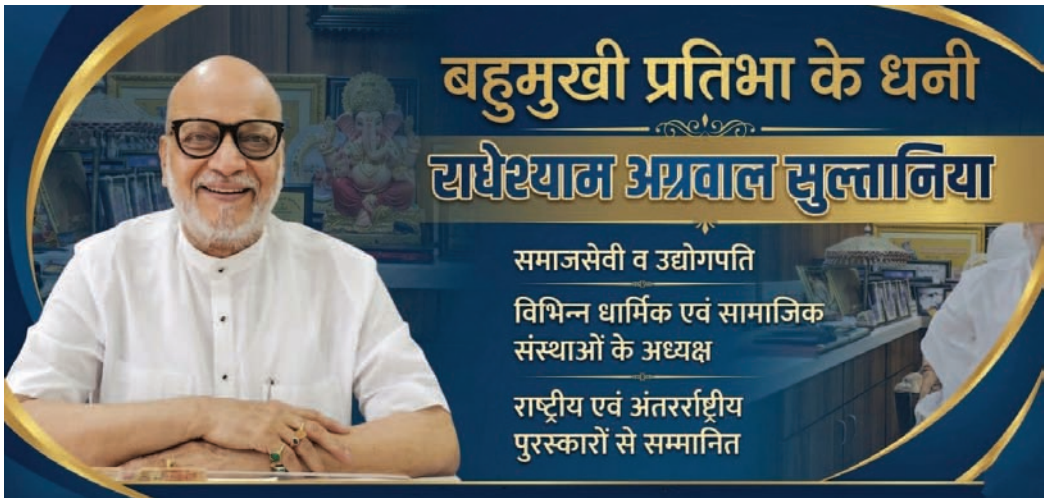
चंद्रकांत सराफ का मानना है कि समाज में सबसे कमजोर व्यक्ति तक सहायता पहुंचाना ही असली सेवा है। वे कहते हैं कि यदि किसी जरूरतमंद की मदद करके उसके चेहरे पर मुस्कान लाई जा सके, तो इससे बड़ा कोई पुण्य नहीं हो सकता। इसी विचारधारा के कारण प्रेम मिलन आज एक भरोसेमंद और सम्मानित संस्था बन चुकी है।

उनके नेतृत्व में संस्था लगातार आगे बढ़ रही है और नई-नई सेवाओं को जोड़ रही है। आने वाले समय में यहां अल्ट्रासोनोग्राफी मशीन की सुविधा भी शुरू करने की योजना है, जिससे मरीजों को और अधिक व्यापक चिकित्सा सेवाएं एक ही स्थान पर मिल सकेंगी। यह पहल भी चंद्रकांत सराफ की दूरदर्शिता और समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दशार्ती है।

आज जब दुनिया तेजी से बदल रही है और लोग अपने स्वार्थ में उलझे हुए हैं, ऐसे समय में चंद्रकांत सराफ जैसे लोग समाज के लिए प्रेरणा बनकर सामने आते हैं। उन्होंने यह साबित कर दिया है कि अगर नीयत साफ हो और सेवा का भाव सच्चा हो, तो एक व्यक्ति भी हजारों लोगों की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

प्रेम मिलन आज केवल एक संस्था नहीं, बल्कि एक भावना बन चुकी है मानवता की भावना, सेवा की भावना और करुणा की भावना। और इस भावना के केंद्र में हैं चंद्रकांत सराफ, जिनका जीवन सच में समाज के लिए समर्पित है। निस्संदेह, कोलकाता की धरती पर चंद्रकांत सराफ जैसे व्यक्तित्व का होना पूरे समाज के लिए गर्व की बात है। उनके कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे और यह संदेश देंगे कि सच्ची सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है।





नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर (राज.) द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेवा सम्मान समारोह-2014 में पीडित मानवता एवं विकलांगजनों के कल्याणार्थ उत्कृष्ट सेवाओं एवं समाज को बहुमूल्य योगदान के लिए उनहें राष्ट्रीय सेवा विभूषण अवार्ड दिया गया।

संगम साड़ी के निदेशक राधेश्याम अग्रवाल सुल्तानिया बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। बिहार के झाझा में जन्मे सुल्तानिया जी के पिता रामअवतार अग्रवाल (सुल्तानिया) की एक किराने की दुकान थी। फिर वे कोलकाता आये। एक परिचित के यहां काम सीखकर उनके पिताजी ने साड़ी प्रिंटिंग का एक कारखाना खोला। पिताजी के श्याम भक्ति में लीन होने के बाद उनके सभी 6 भाई इसी काम में लग गये। राधेश्याम जी ने एलएलबी की है।

जब उनकी उम्र 24 साल की थी तब से वे नूतन बाजार अशोक संघ से जुड़े हैं और लगातार 50 साल तक नूतन बाजार अशोक संघ के जनरल सेक्रेटरी थे और आज वे संघ के प्रेसिडेंट है। विशुद्ध भारतीय खेल कबड्डी के प्रचार-प्रसार में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने इस पद पर रहते हुए लगभग 300 लड़के और लड़कियों को नौकरी दिलवाई। कबड्डी में ट्रेनिंग देकर बच्चों को पारंगत किया और इससे खेल कोटे से उन्हें नौकरियां मिलीं। इनमें दो अर्जुन अवार्ड प्राप्त खिलाड़ी हैं, जिनके नाम विश्वजीत पालीत और मोनिका नाथ हैं। दोनों कबड्डी की इंडियन टीम के कैप्टन भी बने।

राधेश्याम जी मोहन बागान ऑथेंटिक क्लब के 13 साल तक वॉइस प्रेसिडेंट और 13 साल ही वेस्ट बंगाल कबड्डी एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी रहे। सामाजिक और धार्मिक सेवा कार्यों के लिए श्री श्याम मंदिर आलम बाजार की ओर से उन्हें श्याम रतन की उपाधि 2018 में मिली। इस मौके पर कथा वाचिका जया किशोरी भी साथ में थीं। 2014 से अभी तक वे भारत रिलीफ सोसायटी के लगातार वाइस प्रेसिडेंट है। मोहन बागान क्लब से भी जुड़े रहे। उस समय वाइचुंग भूटिया इंडिया टीम के कैप्टन थे। राधेश्याम जी मोहन बागान फुटबॉल क्लब के सेक्रेटरी रह चुके हैं। के आर के प्रोडक्शन से जुड़े राधेश्याम जी को 2025 में उन्हें एक बांग्ला चैनल की ओर से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड मिला। नेताजी इंडोर स्टेडियम में ऑल इंडिया कबड्डी के प्रीमियर लीग के दौरान अभिषेक बच्चन भी आये थे।

राधेश्याम जी लगातार काफी वर्षों से धार्मिक, मेडिकल, सोशल, व्यापारिक क्षेत्रों में काम किया है। आईसीआ-ईसीआई बैंक की ओर से आयोजित एक प्रतियोगिता में भी राधेश्याम अग्रवाल ने हिस्सा लेकर प्रशंसा बटोरी। उसमें अभिनेता प्रोसेनजीत चटर्जी भी शामिल थे।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर (राज.) द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेवा सम्मान समारोह-2014 में पीडित मानवता एवं विकलांगजनों के कल्याणार्थ उत्कृष्ट सेवाओं एवं समाज को बहुमूल्य योगदान के लिए उनहें राष्ट्रीय सेवा विभूषण अवार्ड दिया गया। एमेच्योर कबड्डी फेडरेशन ऑफ इंडिया की बंगाल स्टेट यूनिट की ओर से 23 फरवरी 2026 को राधेश्याम अग्रवाल को एकेएफआई-वेस्ट बंगाल की एग्जीक्यूटिव कमेटी ने वाइस-चेयरमैन चुना गया। इस संस्था के विकास में उनके कीमती योगदान को देखते हुए उन्हें यह पद दिया गया।

इस तरह समाज के कई क्षेत्रों में काम कर चुके और आज भी सक्रिय राधेश्याम जी सेवा को परम धर्म मानते हैं।









साक्षात्कार



जीवन में भगवान महावीर के सिद्धांतों को लागू करें : आचार्य श्री 108 प्रमुख सागर

आचार्य श्री 108 प्रमुख सागर जी महाराज एक प्रमुख जैन संत हैं, जो अहिंसा तीर्थ प्रणेता के रूप में जाने जाते हैं। इस साल जनवरी में वे झारखंड के तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी से मुंगेर की ओर विहार कर रहे थे, जहां उन्होंने आचार्य श्री संभव सागर जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। वे जैन धर्म के अनुयायियों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करते रहे हैं। उन्हें अहिंसा तीर्थ प्रणेता के रूप में पहचाना जाता है, जो जैन सिद्धांतों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। वे अपने संघ के साथ विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हैं, जहां अनुयायी उनकी चरण वंदना और दर्शन करते हैं। मुंगेर, बिहार में जैन धर्म का हालिया सबसे बड़ा आयोजन जनवरी में संपन्न हुआ, जिसमें आचार्य श्री 108 प्रमुख सागर जी महाराज के सान्निध्य में 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के 200 वर्ष पुराने जीर्णोद्धारित मंदिर में पंचकल्याणक प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया। इस दौरान उनसे साक्षात्कार लिया स्पष्टता न्यूज के संपादक अमित कुमार ने। प्रस्तुत है साक्षात्कार का संपादित अंश : -

स्पष्टता न्यूज़ : महाराज जी सबसे पहले स्पष्टता न्यूज़ के डिजिटल चैनल की ओर से में आपका स्वागत है।

प्रमुख सागर : जिन बातों की स्पष्टता से लोगों का कल्याण होता हो, जिन बातों से लोगों के अंदर आत्म शांति का वातावरण बनता हो, तो उन बातों को पत्रकार भाइयों और हमारे सरस्वती पुत्रों को लोगों तक पहुंचाना चाहिए। तो आपका चैनल का नाम ही स्पष्टता है। वैसे, विवाद पैदा करने वाली स्पष्टता से परहेज करना चाहिए।

स्पष्टता न्यूज़ : वर्तमान जीवन में धर्म की क्या भूमिका है? आज के तकनीकी युग में लोगों के जीवन में धर्म का प्रभाव कम हो रहा है, क्यों?

प्रमुख सागर जी : वर्तमान हो या भविष्य या अतीत, धर्म है तो सब कुछ है। धर्म के बिना कुछ भी नहीं है। जो हम सांस ले रहे हैं, वो धर्म है और जिस दिन सांस बंद हो जायेगी, उस दिन धर्म खत्म हो जायेगा।

लोगों में भौतिकता या पाश्चात्य संस्कृति इतना प्रभाव डाल रही है कि जिससे हमें लगता है कि धार्मिकता कम हो रही है। अभी मुंगेर में पंच कल्याणक चल रहा है। धार्मिकता देखनी है तो यहां आकर देखो। हजारों लोग लाभ ले रहे हैं।

तो मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि आप उन लोगों तक मेरी बात पहुंचाएं कि धर्म है तो सब कुछ है। मां-बाप हैं, गुरु हैं, यही सब कुछ है। धर्म को भूलकर कुछ भी करने के लिए जाएंगे तो हो नहीं सकता है। हम अपने जीवन में जिस धर्म को भी मानते हो, उस धर्म में अपने भगवान, अपने गुरु, अपने प्रभु को स्वीकार कर उनके प्रति आस्था पैदा करें तो जीवन में सफलता मिलेगी।

स्पष्टता न्यूज़ : महाराज जी जैन धर्म के जो सिद्धांत है, उसके प्रति आज की युवा पीढ़ी का आकर्षण कैसे बढ़ायें? उन्हें कैसे प्रेरित कर सकते हैं?

प्रमुख सागर जी : जैन धर्म के सिद्धांत सिर्फ जैनियों के नहीं हैं, जन जन के हैं। क्योंकि जैन धर्म के पांच सिद्धांत हैं - अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय व ब्रह्मचर्य। सत्य बोलना, झूठ नहीं बोलना। आज हर कोई ये चाहता है कि हम सही सुनें, सत्य ही सुनें। तो जब वो सत्य सुनना चाहता है, तो सत्य बोलना भी सीखना चाहिए। हम हिंसा के माध्यम से कभी विजय नहीं प्राप्त कर सकते। आज अगर अहिंसा धर्म का पालन होता है, ये बात मैंने देवबंद में भी कही थी कि अहिंसा धर्म का पालन होता है तो हमारे देश को बहुत बड़ी चुनौती स्वीकारनी पड़ती है। सीमा पर सैनिक खड़े हैं वो एक तरह से 'हिंसा' के लिए खड़े हैं। आज हर कोई घर परिवार वाला यही चाहता है कि मेरे को कोई नुकसान नहीं पहुचाये। मेरे बच्चों को सताए नहीं। हर कोई चाहता है मुझसे कोई झूठ ना बोले। तो जब आप दूसरे से अपेक्षा रखते हों कि हमारा सामान कोई चोरी नहीं करे तो आप भी ऐसी अपेक्षा अपने से रखें कि हम भी दूसरे के सामान पर बुरी नजर न डालें। कोई नहीं चाहता कि उसकी मां, बहन, बेटी को कोई गलत निगाह से देखे। तो आपको भी यह विचार करना है कि आप भी अगर दूसरे की मां, बहन, बेटी को गलत निगाह से देखेंगे तो कैसे आप जीवन की नौका को कैसे पार लगा पाएंगे। इसलिए अपने जीवन में भगवान महावीर के सिद्धांतों को लागू करें व व्यावहारिक जीवन को समरसता से जिएं और यह विचार बनाएं कि जो हम दूसरों से अपने लिए अपेक्षा कर रहे हैं वैसी अपेक्षा दूसरे भी हमसे करते हैं।

स्पष्टता: महाराज जी, अभी सोशल मीडिया का जमाना है। क्या जैन धर्म के प्रचार प्रसार के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करना चाहिए?

प्रमुख सागर जी : देखो, क्या होता है, जो दिखता है वो बिकता है। आजकल क्या हो रहा है? आजकल हर कोई, 5 साल के बच्चे से लेकर बड़े तक सोशल मीडिया से जुड़ गया है। इसलिए हम उन्हें अगर अच्छी चीजें नहीं दिखाएंगे तो बुरी चीजें जल्दी प्रभावकारी होंगी। आप विचार करके रखना कि जैन धर्म को भी बहुत जरूरी है मीडिया से जुड़ना। आत्म कल्याण के लिए ये सब आडंबर है, लेकिन आत्म कल्याण तो हमें अकेले ही करना है लेकिन इस धर्म में जो अच्छी बातें हैं, उन्हें लोगों तक पहुंचाना चाहिए। वैसे आज सबकुछ उल्टा हो चुका है। ...

आज आदमी शराब लेने के लिए मार्केट में जाता है और दूधवाले को दूध बेचने घर-घर जाना पड़ता है। आज मांस लेने के लिए आदमी मार्केट में जाता है, लेकिन सब्जी बेचने वाले को घर-घर जाना पड़ रहा है। आज जूता, चप्पल शोरूम में सजे हैं और हमारी पुस्तकें सब फुटपाथ पर रखी गयी हैं। ये क्रम अगर उल्टा रहेगा, तो हम और नीचे गिरते चले जाएंगे। लेकिन हमें भी आज उन बातों को घर-घर पहुंचाना चाहिए, जिनसे लोगों का मन अच्छा हो। ...

....शेष अगले पेज पर



साक्षात्कार



जीवन में भगवान महावीर .....

चार्य श्री 108 प्रमुख सागर जी महाराज एक प्रमुख जैन संत हैं, जो अहिंसा तीर्थ प्रणेता के रूप में जाने जाते हैं। इस साल जनवरी में वे झारखंड के तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी से मुंगेर की ओर विहार कर रहे थे, जहां उन्होंने आचार्य श्री संभव सागर जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। वे जैन धर्म के अनुयायियों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करते रहे हैं। उन्हें अहिंसा तीर्थ प्रणेता के रूप में पहचाना जाता है, जो जैन सिद्धांतों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। वे अपने संघ के साथ विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हैं, जहां अनुयायी उनकी चरण वंदना और दर्शन करते हैं। मुंगेर, बिहार में जैन धर्म का हालिया सबसे बड़ा आयोजन जनवरी में संपन्न हुआ, जिसमें आचार्य श्री 108 प्रमुख सागर जी महाराज के सान्निध्य में 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के 200 वर्ष पुराने जीर्णोद्धारित मंदिर में पंचकल्याणक प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया। इस दौरान उनसे साक्षात्कार लिया स्पष्टता न्यूज के संपादक अमित कुमार ने। प्रस्तुत है साक्षात्कार का संपादित अंश :

स्पष्टता न्यूज़ : महाराज जी सबसे पहले स्पष्टता न्यूज़ के डिजिटल चैनल की ओर से में आपका स्वागत है।

प्रमुख सागर : जिन बातों की स्पष्टता से लोगों का कल्याण होता हो, जिन बातों से लोगों के अंदर आत्म शांति का वातावरण बनता हो, तो उन बातों को पत्रकार भाइयों और हमारे सरस्वती पुत्रों को लोगों तक पहुंचाना चाहिए। तो आपका चैनल का नाम ही स्पष्टता है। वैसे, विवाद पैदा करने वाली स्पष्टता से परहेज करना चाहिए।

स्पष्टता न्यूज़ : वर्तमान जीवन में धर्म की क्या भूमिका है? आज के तकनीकी युग में लोगों के जीवन में धर्म का प्रभाव कम हो रहा है, क्यों?

प्रमुख सागर जी : वर्तमान हो या भविष्य या अतीत, धर्म है तो सब कुछ है। धर्म के बिना कुछ भी नहीं है। जो हम सांस ले रहे हैं, वो धर्म है और जिस दिन सांस बंद हो जायेगी, उस दिन धर्म खत्म हो जायेगा।

लोगों में भौतिकता या पाश्चात्य संस्कृति इतना प्रभाव डाल रही है कि जिससे हमें लगता है कि धार्मिकता कम हो रही है। अभी मुंगेर में पंच कल्याणक चल रहा है। धार्मिकता देखनी है तो यहां आकर देखो। हजारों लोग लाभ ले रहे हैं।

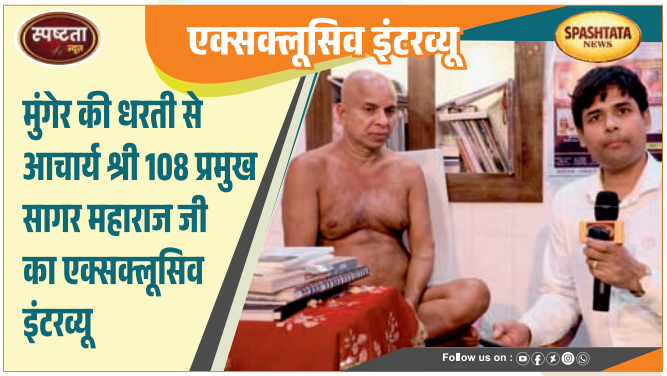
तो मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि आप उन लोगों तक मेरी बात पहुंचाएं कि धर्म है तो सब कुछ है। मां-बाप हैं, गुरु हैं, यही सब कुछ है। धर्म को भूलकर कुछ भी करने के लिए जाएंगे तो हो नहीं सकता है। हम अपने जीवन में जिस धर्म को भी मानते हो, उस धर्म में अपने भगवान, अपने गुरु, अपने प्रभु को स्वीकार कर उनके प्रति आस्था पैदा करें तो जीवन में सफलता मिलेगी।

स्पष्टता न्यूज़ : महाराज जी जैन धर्म के जो सिद्धांत है, उसके प्रति आज की युवा पीढ़ी का आकर्षण कैसे बढ़ायें? उन्हें कैसे प्रेरित कर सकते हैं?

प्रमुख सागर जी : जैन धर्म के सिद्धांत सिर्फ जैनियों के नहीं हैं, जन जन के हैं। क्योंकि जैन धर्म के पांच सिद्धांत हैं - अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय व ब्रह्मचर्य। सत्य बोलना, झूठ नहीं बोलना। आज हर कोई ये चाहता है कि हम सही सुनें, सत्य ही सुनें। तो जब वो सत्य सुनना चाहता है, तो सत्य बोलना भी सीखना चाहिए। हम हिंसा के माध्यम से कभी विजय नहीं प्राप्त कर सकते। आज अगर अहिंसा धर्म का पालन होता है, ये बात मैंने देवबंद में भी कही थी कि अहिंसा धर्म का पालन होता है तो हमारे देश को बहुत बड़ी चुनौती स्वीकारनी पड़ती है। सीमा पर सैनिक खड़े हैं वो एक तरह से 'हिंसा' के लिए खड़े हैं। आज हर कोई घर परिवार वाला यही चाहता है कि मेरे को कोई नुकसान नहीं पहुचाये। मेरे बच्चों को सताए नहीं। हर कोई चाहता है मुझसे कोई झूठ ना बोले। तो जब आप दूसरे से अपेक्षा रखते हों कि हमारा सामान कोई चोरी नहीं करे तो आप भी ऐसी अपेक्षा अपने से रखें कि हम भी दूसरे के सामान पर बुरी नजर न डालें। कोई नहीं चाहता कि उसकी मां, बहन, बेटी को कोई गलत निगाह से देखे। तो आपको भी यह विचार करना है कि आप भी अगर दूसरे की मां, बहन, बेटी को गलत निगाह से देखेंगे तो कैसे आप जीवन की नौका को कैसे पार लगा पाएंगे। इसलिए अपने जीवन में भगवान महावीर के सिद्धांतों को लागू करें व व्यावहारिक जीवन को समरसता से जिएं और यह विचार बनाएं कि जो हम दूसरों से अपने लिए अपेक्षा कर रहे हैं वैसी अपेक्षा दूसरे भी हमसे करते हैं।

स्पष्टता न्यूज : महाराज जी, अभी सोशल मीडिया का जमाना है। क्या जैन धर्म के प्रचार प्रसार के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करना चाहिए?

प्रमुख सागर जी : देखो, क्या होता है, जो दिखता है वो बिकता है। आजकल क्या हो रहा है? आजकल हर कोई, 5 साल के बच्चे से लेकर बड़े तक सोशल मीडिया से जुड़ गया है। इसलिए हम उन्हें अगर अच्छी चीजें नहीं दिखाएंगे तो बुरी चीजें जल्दी प्रभावकारी होंगी। आप विचार करके रखना कि जैन धर्म को भी बहुत जरूरी है मीडिया से जुड़ना। आत्म कल्याण के लिए ये सब आडंबर है, लेकिन आत्म कल्याण तो हमें अकेले ही करना है लेकिन इस धर्म में जो अच्छी बातें हैं, उन्हें लोगों तक पहुंचाना चाहिए। वैसे आज सबकुछ उल्टा हो चुका है। ...



....शेष अगले पेज पर



साक्षात्कार



जीवन में भगवान महावीर .....

आज आदमी शराब लेने के लिए मार्केट में जाता है और दूधवाले को दूध बेचने घर-घर जाना पड़ता है। आज मांस लेने के लिए आदमी मार्केट में जाता है, लेकिन सब्जी बेचने वाले को घर-घर जाना पड़ रहा है। आज जूता, चप्पल शोरूम में सजे हैं और हमारी पुस्तकें सब फुटपाथ पर रखी गयी हैं। ये क्रम अगर उल्टा रहेगा, तो हम और नीचे गिरते चले जाएंगे। लेकिन हमें भी आज उन बातों को घर-घर पहुंचाना चाहिए, जिनसे लोगों का मन अच्छा हो।

स्पष्टता न्यूज : समाज का नैतिक पतन भी हो रहा है। इसके मुख्य कारण क्या है?

प्रमुख सागर जी : आज समाज के लोग एक साथ बैठ कर अच्छी बातें नहीं कर रहे। परिवार के लोग अच्छी बातें नहीं कर रहे। आजकल किसी को किसी से मतलब नहीं। और जब तक दूसरों के साथ अपना प्रेम आत्मीयता का व्यवहार नहीं होगा, तब तक पतन निश्चित है। मैं उन परिवारों को जानता हूं, जो एक साथ बैठते नहीं है। एक साथ खाते पीते नहीं हैं। बाद में जब उनके बच्चे आउट ऑफ कंट्रोल हो जाते हैं, तब वो जगह-जगह जाते हैं। तो मैं हर परिवार से कहूंगा कि आप रोज ना बैठ पाओ, तो हफ्ते में एक दिन जरूर बच्चों के साथ बैठो। महीने में एक साथ अपने परिवार के साथ भोजन करने का प्रयास करो। आपके बच्चे दूर हों, परिवार के लोग दूर हों, तो उनके साथ एक साल में एक बार मीटिंग करो या उनके साथ कोई प्लानिंग करो, तीर्थ घूमने की प्लानिंग करो, तब कहीं जाकर हम अपने परिवार को बचा पाएंगे। मैं समाज के लोगों से भी कहना चाहता हूं कि इगो छोड़ें, सबके सर पर इगो चढ़ के बोल रहा है। इगो के दो अक्षर हैं- ई और गो। ई माने ईश्वर और गो माने गया। इसलिए जहां अहंकार है, वहां समाज में आत्मीयता नहीं आ सकती है। इसलिए समाज के लोगों को बड़ों का सम्मान करना चाहिए। छोटों को प्यार देना चाहिए। आपस में बैठकर एक- दूसरों की भावनाओं को समझना चाहिए। तभी समाज में सामंजस्य बहाल होगा। परिवार में आत्मीयता बहाल होगी। तभी कल्याण होगा। एक दूसरे से मिलेंगे नहीं, बात नहीं करेंगे तो समाधान कैसे होगा?

स्पष्टता न्यूज : महाराज जी, एक महत्वपूर्ण सवाल यह है कि आजकल की राजनीति में धर्म का दखल कहां तक यह उचित रहेगा?

प्रमुख सागर जी : आए दिन सोशल मीडिया में यह हमेशा सवाल उठता रहता है। पहले हमारे यहां राजा होते थे तो उनके यहां एक राज ऋषि होता ही होता था। जब तक राजा राज ऋषियों से सलाह- मशवरा नहीं करता था, परामर्श नहीं करता था, तब तक सही नीतियां, सही राजनीति नहीं हो पाती थी। राजनीति को धर्म का सहारा मिल जाए तो राजनीति सद हो जाती है। साधु संत में अगर राजनीति आ जाएं तो साधु संत विधवा जैसे हो जाते हैं। साधु संतों को धर्मनीति करनी चाहिए। राजनीतिक लोगों को संदेश देना है कि आपको कैसे हर जीव के प्रति कल्याण का भावना रखें। संत के लिए सब जीव बराबर हैं। हर किसी के कल्याण की भावना रखनी चाहिए। पुण्य आत्मा का तो सब साथ देते हैं। संत के लिए सब बराबर हैं। कबीर दास ने कहा है, 'राम न मारे काहू को, पापी होय ना राम।

आपहु ही मर जात है, कर कर खोटे काम।।' तो हमें किसी का बुरा नहीं सोचना है तभी हमारा जीवन सार्थक होगा।

स्पष्टता न्यूज : एक अंतिम सवाल, गौ रक्षा और पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या किया जाना चाहिए?

प्रमुख सागर जी : गौ रक्षा बहुत जरूरी है। नारायण श्री कृष्ण के तीन ही संदेश थे- गाय, गीता और गोपी। गाय उनके जीवन का आधार है, गीता जीवन का सार है और गोपी उनके जीवन का प्यार है। अगर गोपी की रक्षा होती है तो हमारी नारी शक्ति की रक्षा होती है। गीता की रक्षा होती है तो हमारे सामने हमारा कोई भी हो, हम उसे समझ सकते हैं। धर्म की रक्षा होती है और गाय की रक्षा होती है तो हमारी भारतीय संस्कृति की रक्षा होती है। तो गाय के लिए मैं इतना ही कहना चाहूंगा आज जो लोग गाय पूजा करते हैं और बाद में गाय का मांस खाते हैं तो या तो गाय की पूजा बंद कर दें या मांस खाना छोड़ दें। जो लोग गौशाला खोलते हैं, वे अगर चमड़े की वस्तु पहनते हैं, तो या तो चमड़े की वस्तु पहनना छोड़ दें या गौशाला का सेवा छोड़ दें। हर घर में पहले गाय होती थी। उस गाय से मालूम पड़ता था, ये घर कितना संपन्न है। गांव का सरपंच उसे बनाया जाता था, जो गाय रखता था और आज लोग कुत्ते रख रहे हैं तो कुत्ते जैसी प्रवृत्ति हो गई है। पहले गाय होती थी तो अतिथि देवो भव कहा जाता था। फिर थोड़े समय बाद गाय की जगह गाड़ी आने लगी तो वेलकम शुरू हो गया और अब आजकल कुत्ते आ गए तो घर के द्वार पर लिखते हैं कि कुत्तों से सावधान। अब घर में कौन है, आदमी है या कुत्ता रहता है, वही समझें। गाय ही एक ऐसा प्राणी है जो सबके लिए दुग्ध देती है। हमारी जन्म देने वाली मां कुछ समय बाद स्तनपान बंद कर देती है या दूध उतरना बंद हो जाता है, पर गाय हमें जीवन भर दुग्धपान कराती है। विदेशों में गाय से मिलने का पैसा लगता है। गौशाला में जाकर आप गाय की सेवा करें, जिससे हमारी गायों का संरक्षण हो।

सौजन्य

श्री महावीराय नमः

ARIHANT PRINTERS

Serving the Printing Industry Since 1980....

Head Office : Plot No - 67, Udayan Industrial Estate, 3, Pagladanga Road (Near Beliaghata CIT More) Kolkata 700 015, India

Factory : "The Hub Infratech" Beldubi G.P., Panchla, Satghoria, Howrah - 711302 (WB).

Acharya Tulsi
Diagnostic Centre & Dental Care
A Jain Social Charitable Organisation

AcharyaMahapragya
Medicals
25% off on all Medicines
78900 02010

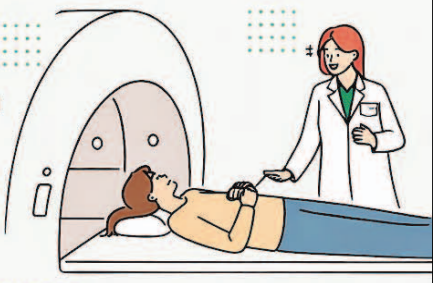
A PROJECT OF AKHIL BHARTIYA TERAPANTH YUVAK PARISHAD

ATDC PURVANCHAL KOLKATA FACILITIES:

- CT Scan
- Pathology
- USG
- ECG & Echocardiogram
- NCV & EMG
- EEG
- Uroflowmetry
- Digital X-Ray
- OPD
- Dental Care
- Eye Clinic
- Physiotherapy
- Accupressure Clinic
- Holter

OUR USP:

- Affordable Rates
- In house laboratory with latest machinery
- Reports Delivered online (Whatsapp and Email)



FACILITIES AVAILABLE IN ASSOCIATION WITH VIJAYA DIAGNOSTICS:

MRI | Mammography | Treadmill Test

DOCTORS AVAILABLE IN ASSOCIATION WITH VIJAYA DIAGNOSTICS:

MRI | Mammography |Treadmill Test



DOCTORS AVAILABLE:

General Physician • Medicine • Orthopedic • Gynecologist • Ophthalmologist (Eye) • ENT
Paediatrician (Child Specialist) • Dermatologist (Skin) • Oncology (Cancer Specialist) • Urologist

ACHARYA TULSI DIAGNOSTIC CENTRE & DENTAL CARE
848D & 847A, Block A, Lake Town,(Jessore Road) Kolkata - 700089 atdcpurvanchal@gmail.com

REPORTS YOU CAN TRUST
COST YOU CAN AFFORD

MANAGED BY TERAPANTH YUVAK PARISHAD PURVANCHAL - www.atdccare.com
033 25340066 +91 7044555222

With Best Compliments From :

अनंतदृष्टि

बिधाननगर माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट की एक पहल

राजारहाट में न्यू टाउन के पास लगभग 140 कट्ठा ज़मीन के
अपने कॉम्प्लेक्स में 2 कम्युनिटी सेंटर, 150 गेस्ट रूम,
मेडिकल और हेल्थ सेंटर, स्किल डेवलपमेंट सेंटर,
स्पोर्ट्स ट्रेनिंग सुविधाएं वगैरह जैसी कम्युनिटी सुविधाएं निर्माणाधीन।

जो लोग इस नेक काम में शामिल होना चाहते हैं, वे हमसे
anantadristi1@gmail.com
पर संपर्क कर सकते हैं।



मुस्लिम आक्रांताओं से लोहा लेने वाली वीरांगनाएं



रश्मि सिंह
दिल्ली

भारत के इतिहास में सैकड़ों वर्षों तक हिन्दू राजाओं को विदेशी आक्रांताओं से लड़ना पड़ा। मध्यकाल और अंग्रेज काल में कई राजाओं और रानियों को बलिदान देना पड़ा था। ऐसे कई मौके आए, जब राज्य की बागडोर रानियों को संभालनी पड़ी और वे हंसते-हंसते देश पर अपनी जान न्योछावर कर गईं। गांधार, कंबोज, कुरु, पांचाल, कौशल, काशी, मगध आदि राज्य के विदेशी आक्रांताओं के हाथों में चले जाने के बाद महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान के जनपदों के राजाओं ने विदेशी आक्रांताओं से कड़ा मुकाबला कर अपने राज्य की रक्षा की। आज की युवा पीढ़ी को एक ऐसी वीरांगना के बारे में जानना चाहिए, जिनकी वीरता और संघर्ष को भारतीय इतिहास में गर्व के साथ गाया जाता है और गाया जाता रहेगा।

सिंध के दीवान गुन्दुमल की बेटी ने सर कटवाना स्वीकर किया, पर मीर कासिम की पत्नी बनना नहीं। इसी तरह वहां के राजा दाहिर और उनकी पत्नियों और पुत्रियों ने भी अपनी मातृभूमि और अस्मिता की रक्षा के लिए अपनी जान दे दी।

रानी को हासिल करने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर हमला कर दिया और राजा रत्नसिंह को धोखे से मार गिराया। तब यह देखकर रानी पद्मिनी ने राजपूत वीरांगनाओं के साथ जौहर की अग्नि में 1303 ईस्वी में आत्मदाह कर लिया।

सिंध के राजा की पत्नियों और पुत्रियों का बलिदान

सिंध के दीवान गुन्दुमल की बेटी ने सर कटवाना स्वीकर किया, पर मीर कासिम की पत्नी बनना नहीं। इसी तरह वहां के राजा दाहिर और उनकी पत्नियों और पुत्रियों ने भी अपनी मातृभूमि और अस्मिता की रक्षा के लिए अपनी जान दे दी। आज सिंध देश पाकिस्तान का एक प्रांत बनकर रह गया है। राजा दाहिर अकेले ही अरब और ईरान के दरिंदों से लड़ते रहे। उनका साथ किसी ने नहीं दिया बल्कि कुछ लोगों ने उनके साथ गद्दारी की। दाहर (दाहिर) सन 679 में सिंध के राजा बने।

सिंधु देश पर राजपूत वंश के राजा राय साहसी का राज्य था। राय साहसी का कोई उत्तराधिकारी नहीं था अतः उन्होंने अपने प्रधानमंत्री एक कश्मीरी ब्राह्मण चच को अपना राज्य सौंपा। राजदरबारियों एवं रानी सोहन्दी की इच्छा पर राजा चच ने रानी सोहन्दी से विवाह किया। राजा दाहिर चच के पुत्र थे। राजा चच की मृत्यु के बाद उनका शासन उनके भाई चंदर ने संभाला, जो कि उनके राजकाल में प्रधानमंत्री थे। राजा चंदर ने 7 वर्ष तक सिंध पर राज्य किया। इसके बाद राज्य की बागडोर महाराजा दाहिर के हाथ में आ गई।

सिंध का समुद्री मार्ग पूरे विश्व के साथ व्यापार करने के लिए खुला हुआ था। एक जहाज में सवार अरब व्यापारियों के सुरक्षाकर्मियों ने देवल के शहर पर बिना कारण हमला कर दिया और शहर से कुछ बच्चों और औरतों को जहाज में कैद कर लिया। जब इसका समाचार सूबेदार को मिला तो उसने अपने रक्षकों सहित जहाज पर आक्रमण कर अपहृत औरतों और बच्चों को बंधनमुक्त कराया। अरबी जान बचाकर अपना जहाज लेकर भाग खड़े हुए।

उन दिनों ईरान में धर्मगुरु खलीफा का शासन था। खलीफा सिंध पर आक्रमण करने का बहाना ढूंढ रहा था। उसने अब्दुल्ला नामक व्यक्ति के नेतृत्व में अरबी सैनिकों का दल सिंध विजय के लिए भेजा। युद्ध में अरब सेनापति अब्दुल्ला को जान से हाथ धोना पड़ा। खलीफा अपनी हार से तिलमिला उठा।

दस हजार सैनिकों का एक दल ऊंट-घोड़ों के साथ सिंध पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया। सिंध पर ईस्वी सन् 638 से 711 ई. तक के 74 वर्षों के काल में 9 खलीफाओं ने 15 बार आक्रमण किया। 15वें आक्रमण का नेतृत्व मोहम्मद बिन कासिम ने किया। सिंधु वीरों ने डटकर मुकाबला किया और कासिम को सोचने पर मजबूर कर दिया। सूर्यास्त तक अरबी सेना हार के कगार पर खड़ी थी। सूर्यास्त के समय युद्धविराम हुआ। ज्ञानबुद्ध और मोक्षवासव नामक दो लोगों ने कासिम की सेना का साथ दिया और रात्रि में सिंधुवीरों के शिविर पर हमला बोल दिया गया। महाराज की वीरगति और अरबी सेना के अलोर की ओर बढ़ने के समाचार से रानी लाडी अचेत हो गईं। सिंधी वीरांगनाओं ने अरबी सेनाओं का स्वागत अलोर में तीरों और भालों की वर्षा के साथ किया। कई वीरांगनाओं ने अपने प्राण मातृभूमि की रक्षार्थ दे दिए। जब अरबी सेना के सामने सिंधी वीरांगनाएं टिक नहीं पाईं तो उन्होंने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए जौहर किया। बच गईं दोनों राजकुमारियां सूरजदेवी और परमाल ने युद्ध क्षेत्र में घायल सैनिकों की सेवा की। तभी उन्हें दुश्मनों ने पकड़कर कैद कर लिया। सेनानायक मोहम्मद बिन कासिम ने अपनी जीत की खुशी में दोनों राजकन्याओं को भेंट के रूप में खलीफा के पास भेज दिया। खलीफा दोनों राजकुमारियों की खूबसूरती पर मोहित हो गया और दोनों कन्याओं को अपने जनानखाने में शामिल करने का हुक्म दिया, लेकिन राजकुमारियों ने अपनी चतुराई से कासिम को सजा दिलाई।



लेकिन जब राजकुमारियों के इस धोखे का पता चला तो खलीफा ने दोनों को कत्ल करने का आदेश दिया तभी दोनों राजकुमारियों ने खंजर निकाला और अपने पेट में घोंप लिया और इस तरह राजपरिवार की सभी महिलाओं ने अपने देश के लिए बलिदान दे दिया।

डोली में बैठे राजा ने रानी से कहा आप मुझे मार दें क्योंकि में बंधक नहीं बनना चाहता। रानी ने ऐसा ही किया। बादशाह के सैनिक रानी के साहस को देखकर दंग रह गए। कुछ ही देर बाद उन्होंनें देखा कि रानी ने भी अपनी उसी तलवार से स्वयं की गर्दन उड़ा दी।

रानी सारंधा

बादशाह औरंगजेब रानी सारंधा से अपने अपमान का बदला लेना चाहता था। रानी सारंधा के पति ओरछा के राजा चंपतराय थे। बादशाह ने हिन्दू सुबेदार शुभकरण को चंपतराय के विरुद्ध युद्ध अभियान पर भेजा। शुभकरण बचपन में चंपतराय का सहपाठी भी थी। दुर्भाग्यवश चंपतराय के कई दरबारी भयवश उससे टूटकर औरंगजेब से जा मिले थे। पर राजा चंपतराय रानी सारंधा के साथ्ज्ञ ओरछा से निकल गये व तीन वर्षों तक बुंदेलखंड के जंगलों में भटकते रहे। औरंगजेब के चंपतराय को बंदी बनाने के सो प्रयास असफल हुए। तलाशी अभियान में लगी बादशाही सेना हटा ली गई, जिससे चंपतराय को यह लगा कि बादशाह औरंगजेब ने हार मानकर तलाशी अभियान खत्म कर दिया है। तब ऐसे में राजा अपने किले ओरछा में लौट आए। औरंगजेब इसी बात कर इंतराज कर रहा था। उसने तत्काल ही ओरछा के किले को घेर लिया। किले में लगभग 20 हजार लोग थे। तीन सप्ताह बाद क्षीण हो चुके राजा उसी समय ज्वर से पीड़ित हो गये। राजा इस दशा में अपनी प्रजा को छोड़कर जाने के लिए सहमत नहीं थे। रानी भी इस पर सहमत थीं। तब रानी ने अपने पुत्र छत्रसाल को बादशाह के पास संधि पत्र लेकर भेजा, जिससे निर्दोष लोगों के प्राण बचाए जा सके। अपने देशवासियों की रक्षा के लिए रानी ने अपने प्रिय पुत्र को संकट में डाल दिया। जैसा की आशंका थी औरंगजेब ने छत्रसाल को अपने पास रख लिया और प्रजा से कुछ न कहने का प्रतिज्ञापत्र भिजवाने का सुनिश्चित किया। अब सारंधा के समक्ष एक ओर बीमार पति तो दूसरी ओर बंधक पुत्र था। फिर भी उसने स-ाहस से काम लिया और अब चंपतराय को अंधेरे में किले से निकालने की योजना बनाई। रानी अपने राजा को किले से 10 कोस दूर ले गई। तभी उसने देखा कि पीछे से बादशाह के सैनिक आ रहे हैं। राजा को भी जगाया। राजा ने कहा कि मैं बादशाह का बंधक बनसे से अच्छा है कि यही वीरगति को प्राप्त होऊं। रानी का अंतिम सैनिक भी जब वीरगति को प्राप्त हो गया तो डोली में बैठे राजा ने रानी से कहा आप मुझे मार दें क्योंकि में बंधक नहीं बनना चाहता। रानी ने भारी मन से ऐसा ही किया। बादशाह के सैनिक रानी के स-ाहस को देखकर दंग रह गए। कुछ ही देर बाद उन्होंनें देखा कि रानी ने भी अपनी उसी तलवार से स्वयं की गर्दन उड़ा दी।

रानी पद्मिनी

इसी तरह रानी पद्मिनी की सुंदरता पर दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी मोहित हो गया। रानी को हासिल करने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर हमला कर दिया और राजा रत्नसिंह को धोखे से मार गिराया। तब यह देखकर रानी पद्मिनी ने राजपूत वीरांगनाओं के साथ जौहर की अग्नि में 1303 ईस्वी में आत्मदाह कर लिया।

रानी दुर्गावती

वीरांगना महारानी दुर्गावती का जन्म 1524 में गोंडवाना में था। वे कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। राजा संग्राम शाह के पुत्र दलपत शाह से उनका विवाह हुआ था। दुर्भाग्यवश विवाह के 4 वर्ष बाद ही राजा दलपतशाह का निधन हो गया। उस समय दुर्गावती का पुत्र नारायण 3 वर्ष का ही था अतः रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन संभाल लिया। दुर्गावती ने मुस्लिम शासकों को अनेक बार पराजित किया था। अकबर अन्य राजपूत विधवाओं की तरह दुर्गावती को भी रनवासे की शोभा बनाना चाहता था। रानी दुर्गावती ने अकबर के जुल्म के आगे झुकने से इंकार कर स्वतंत्रता और अस्मिता के लिए युद्ध भूमि को चुना और अनेक बार शत्रुओं को पराजित करते हुए 1564 में बलिदान दे दिया।

रानी कर्णावती (कर्मवती)

राजस्थान के मेवाड़ की रानी कर्णावती चित्तौड़ के राजा की विधवा थीं। रानी के दो पुत्र थे- राणा उदयसिंह और राणा विक्रमादित्य। ऐसे में महारानी कर्णावती ने राजपूतों और मुस्लिमों के संघर्ष के बीच हुमायूं के सामने प्रस्ताव रखा कि हम परस्पर संधि करके अपने समान शत्रु बहादुरशाह का मिलकर सामना करें।

मुगल सम्राट हुमायूं ने रानी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। हालांकि हूमायूं किसी को भी नहीं बख्शता था, लेकिन उसके दिल में रानी कर्णावती का प्यार अच्छे से उतर गया और उसने रानी का साथ दिया। हुमायूं को रानी ने अपना धर्मभाई बनाया था इसलिए हुमायूं ने भी राखी की लाज रखते हुए उनके राज्य की रक्षा की।

हाड़ी रानी

राजस्थान खासकर मेवाड़ के स्वर्णिम इतिहास में इनको विशेष स्थान प्राप्त है। बात 16वीं शताब्दी की है, इस नई-नवेली दुल्हन ने अपने वीर को जीत दिलाने के लिए अपना कटा शीश रणभूमि में भिजवा दिया था। तो वहीं हाड़ा रानी के नाम पर राजस्थान पुलिस की महिला बटालियन का नामकरण भी किया गया है। हाड़ी रानी जैसी वीरांगना इस वीर धरती के लिए बलिदान की एक अनूठी मिसाल हैं।

राजकुमारी रत्नावती

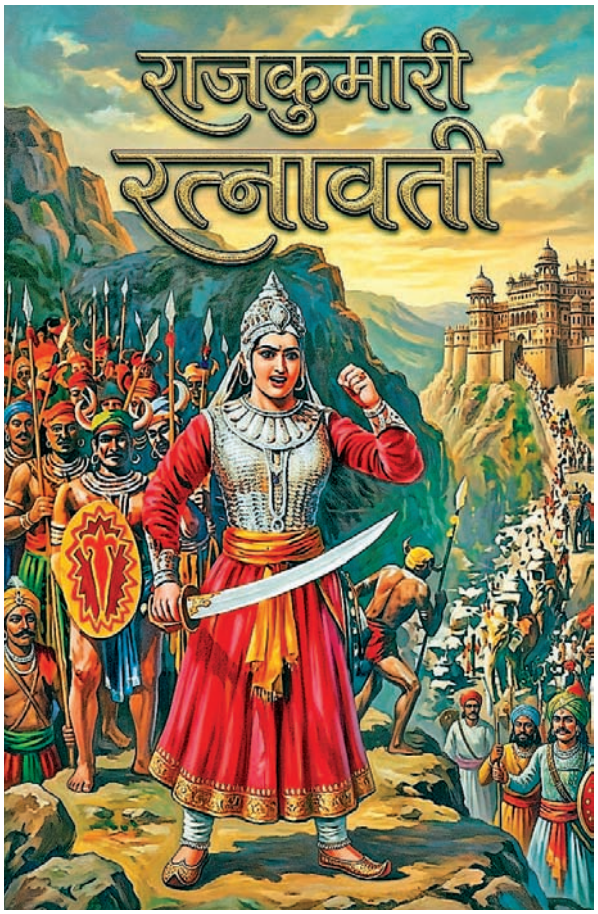
जैसलमेर नरेश महारावल रत्नसिंह ने जैसलमेर किले की रक्षा अपनी पुत्री राजकुमारी रत्नावती को सौंप दी थी। इसी दौरान दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन की सेना ने किले को घेर लिया जिसका सेनापति मलिक काफूर था। किंतु, राजकुमारी रत्नावती इससे घबराई नहीं और सैनिक वेश में घोड़े

पर बैठी किले के बुर्जों व अन्य स्थानों पर घूम-घूमकर सेना का संचालन करती रहीं। अततः उसने सेनापति काफूर सहित 100 सैनिकों को बंधक बना लिया।

सेनापति के पकड़े जाने पर मुगल सेना ने किले को घेर लिया। किले के भीतर का अन्न समाप्त होने लगा। राजपूत सैनिक उपवास करने लगे। राजकुमारी रत्नावती भूख से दुर्बल होकर पीली पड़ गई किंतु ऐसे संकट में भी राजकुमारी रत्नावती द्वारा राजधर्म का पालन करते हुए अपने सैनिकों को रोज एक मुट्ठी और मुगल बंदियों को दो मुट्ठी अन्न रोज दिया जाता रहा।

अलाउद्दीन को जब पता लगा कि जैसलमेर किले में सेनापति कैद है और किले को जीतने की आशा नहीं है तो उसने महारावल रत्नसिंह के पास संधि-प्रस्ताव भेजा। राजकुमारी ने एक दिन देखा कि मुगल सेना अपने तम्बू-डेरे उखाड़ रही है और उसके पिता अपने सैनिकों के साथ चले आ रहे हैं। मलिक काफूर को जब किले से छोड़ा गया तो वह रोने लगा और उसने कहा- यह राजकुमारी साधारण लड़की नहीं, यह तो वीरांगना के साथ देवी भी हैं। इन्होंने खुद भूखी रहकर हम लोगों का पालन किया है। ये पूजा करने योग्य आदरणीय हैं।

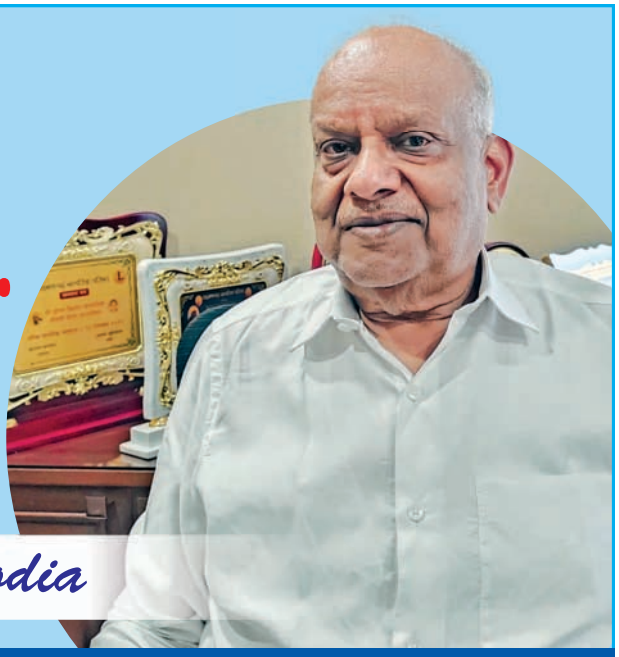
महाराणा की बेटी वीर बाला चम्पा ने भी मुगलों के सामने झुकना मंजूर नहीं किया। बच्चों को दिन-रात पैदल चलना पड़ता था। बच्चों को उपवास भी करना पड़ता था। 3-3, 4-4 दिन जंगली बेर व घास की रोटियों पर निकल जाते। महाराणा की पुत्री चम्पा 11 वर्ष की थी। चम्पा के 4 वर्षीय भाई कुमार को भूख लगी थी। चम्पा ने अपने भाई को कहानी सुनाकर व फूलों की माला पहनाकर बहला दिया। राजकुमार भूखा ही सो गया। अभाववश, महाराणा ने अकबर की अधीनता स्वीकार करने के लिए पत्र लिखा। 11 वर्षीय सुकुमार बालिका चम्पा 2-4 दिन में तो घास की रोटी पाती थी और उसे भी बचाकर रख लिया करती थी। अपने भाग की रोटी वह अपने भाई को थोड़ी-थोड़ी करके खिला देती थी। भूख के मारे वह स्वयं दुर्बल व कृशकाय हो गई थी। एक दिन वह भूख से मूर्छित हो गई। महाराणा ने उसे गोद में उठाते हुए रोकर कहा- 'मेरी बेटी! अब मैं तुझे और कष्ट नहीं दूंगा। मैंने अकबर को पत्र लिख दिया है।' यह सुनकर चम्पा मूर्छा में भी चौक पड़ी, बोली, 'पिताजी! आप यह क्या कहते हैं? हमें मरने से बचाने के लिए आप अकबर के दास बनेंगे? पिताजी! हम सब क्या कभी मरेंगे नहीं? पिताजी! देश को नीचा मत दिखाइए! आपको मेरी शपथ है, आप अकबर की अधीनता कभी स्वीकार न करें।' इन वचनों के साथ ही मासूम चम्पा महाराणा की गोद में ही सदा के लिए चुप हो गई।



With Best Compliments From :

ANZEN EXPORTS PVT. LTD.

Pinnacle cove, 20C Hazra Road,
Kolkata-200026
Phone : 033 24549650 / 51
Website : www.anzen.co.in



Jugal Kishore Jajodia

SHUBHAM PHARMACHEM PVT. LTD.

Regd. Office: 205-207, Laxmi Plaza, Laxmi Industrial Estate,
New Link Road, Andheri (W), Mumbai-400 053, Maharashtra, India
Tel: 2635 4800/2635 4900, Fax: +91 (22) 6692 3929/2631 8808
E-mail: shubham@shubham.co.in, Web: www.shubham.co.in

CIN NO. U99999MH1992PTC065071

आधुनिकता के बीच आस्था की ओर कदम :

भजन-कीर्तन में बढ़ती नई पीढ़ी की भागीदारी



निकुंज बेरीवाल

भारतीय समाज में भजन-कीर्तन और आध्यात्मिक परंपराओं की जड़ें बहुत गहरी रही हैं। लंबे समय तक यह धारणा बनी रही कि मंदिरों, सत्संगों और भजन-कीर्तन में मुख्य रूप से बुजुर्गों की भागीदारी अधिक होती है, जबकि युवा वर्ग आधुनिक जीवनशैली और तकनीक की दुनिया में व्यस्त रहता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यह धारणा तेजी से बदलती दिखाई दे रही है। आज देश के कई शहरों और कस्बों में भजन-कीर्तन, सत्संग और धार्मिक आयोजनों में युवाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है। यह बदलाव केवल धार्मिक गतिविधि का विस्तार नहीं, बल्कि समाज और युवा मनोविज्ञान में हो रहे गहरे परिवर्तन का संकेत भी है।

सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि युवाओं का भजन-कीर्तन और आध्यात्मिक गतिविधियों की ओर झुकाव क्यों बढ़ रहा है। आधुनिक जीवन की तेज रफ्तार, प्रतिस्पर्धा और मानसिक दबाव ने युवाओं को भी गहराई से प्रभावित किया है। पढ़ाई, करियर और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच कई बार युवाओं को मानसिक शांति और संतुलन की तलाश रहती है। ऐसे में भजन-कीर्तन और भक्ति के कार्यक्रम उन्हें एक ऐसा वातावरण देते हैं, जहां वे कुछ समय के लिए तनाव से दूर होकर आत्मिक शांति महसूस कर सकते हैं। संगीत, सामूहिक गायन और भगवान के नाम का स्मरण मानसिक संतुलन बनाने में भी मदद करता है।

दूसरा महत्वपूर्ण कारण सांस्कृतिक पहचान की तलाश है। वैश्वीकरण और सोशल मीडिया के दौर में युवा दुनिया भर की संस्कृतियों से परिचित हो रहे हैं। लेकिन इसी प्रक्रिया में अपनी जड़ों को समझने और उनसे जुड़ने की इच्छा भी बढ़ रही है। भजन-कीर्तन, कथा-प्रवचन और धार्मिक उत्सव युवाओं को अपनी परंपराओं और संस्कृति से जोड़ने का माध्यम बन रहे हैं। इससे उन्हें अपनी पहचान को समझने और उसे गर्व के साथ स्वीकार करने का अवसर मिलता है।

तकनीक और सोशल मीडिया ने भी इस बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज कई आध्यात्मिक गुरु, भजन गायक और धार्मिक संस्थाएं डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सक्रिय हैं। यूट्यूब, इंस्टाग्राम और अन्य माध्यमों पर भजन-कीर्तन और धार्मिक प्रवचनों के वीडियो बड़ी संख्या में देखे जा रहे हैं। इससे युवा पीढ़ी तक इन गतिविधियों की पहुंच पहले की तुलना में कहीं अधिक आसान हो गई है। कई जगहों पर युवा स्वयं भजन मंडली बनाकर कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं और सोशल मीडिया के जरिए उसे साझा भी कर रहे हैं।

हालांकि, इस सकारात्मक प्रवृत्ति के साथ कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं।



भक्ति और आस्था का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं होना चाहिए। सच्ची भक्ति का संबंध नैतिक मूल्यों, सेवा भाव और समाज के प्रति जिम्मेदारी से भी है। यदि भजन-कीर्तन के साथ-साथ युवा समाज सेवा, पर्यावरण संरक्षण और मानवता के कार्यों में भी भाग लें, तो यह आस्था समाज के लिए और अधिक सार्थक बन सकती है।

इसके अलावा यह भी जरूरी है कि आस्था और तर्क के बीच संतुलन बना रहे। भारतीय परंपरा हमेशा से ज्ञान, विवेक और आध्यात्मिकता के संतुलन की बात करती रही है। युवाओं को भक्ति के साथ-साथ शिक्षा, वैज्ञानिक सोच और सामाजिक जिम्मेदारी को भी उतना ही महत्व देना चाहिए। जब आस्था और विवेक साथ-साथ चलते हैं, तभी समाज में सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन संभव होता है।

आज भजन-कीर्तन में युवाओं की बढ़ती भागीदारी यह संकेत देती है कि नई पीढ़ी केवल भौतिक सफलता ही नहीं, बल्कि मानसिक शांति और आध्यात्मिक संतुलन की भी तलाश कर रही है। यह प्रवृत्ति यदि सही दिशा में आगे बढ़े, तो यह न केवल युवाओं के जीवन को संतुलित बनाएगी बल्कि समाज में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगी।

अंततः कहा जा सकता है कि भजन-कीर्तन की ओर बढ़ता युवाओं का रुझान भारतीय समाज की जीवंतता का प्रतीक है। यह परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन का एक सुंदर उदाहरण भी है। यदि युवा अपनी आस्था को सेवा, सद्भाव और नैतिक मूल्यों के साथ जोड़ें, तो यह केवल धार्मिक गतिविधि नहीं बल्कि समाज के समग्र विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है।





कोलकाता में पिछले 17 वर्षों से भक्ति और सेवा का दीप जलाने वाली संस्था **श्री सालासर भक्त वृंद** आज महानगर में आस्था, समर्पण और सामाजिक जिम्मेदारी का एक जीवंत उदाहरण बन चुकी है। यह संस्था न केवल धार्मिक आयोजनों के माध्यम से लोगों को जोड़ रही है, बल्कि जरूरतमंदों की सेवा कर समाज में मानवता का संदेश भी फैला रही है।

इस प्रेरणादायक यात्रा की शुरूआत करीब 17 वर्ष पहले "भक्त वृंद" नाम से हुई थी। एक दिन हावड़ा में एक सदस्य के घर पर सुंदरकांड पाठ के दौरान दीपक की पवित्र जोत में भगवान हनुमान के दिव्य दर्शन हुए। इस अलौकिक अनुभव ने सभी सदस्यों को भावविभोर कर दिया। उसी क्षण यह निर्णय लिया गया कि संस्था को पूर्ण रूप से हनुमान जी की भक्ति और सेवा को समर्पित किया जाएगा। इसी प्रेरणा से संस्था का नाम बदलकर **श्री सालासर भक्त वृंद** कोलकाता रखा गया और तब से यह निरंतर सेवा के पथ पर अग्रसर है।

12 मई 2011 को संस्था को आधिकारिक पंजीकरण संख्या प्राप्त हुई, जिसके बाद इसके धार्मिक और सामाजिक कार्यों का दायरा लगातार बढ़ता गया। संस्था द्वारा प्रत्येक महीने सुंदरकांड का पाठ आयोजित किया जाता है, जो किसी न किसी सदस्य के घर पर सम्पन्न होता है। इससे सदस्यों के बीच आत्मीयता और भक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। हनुमान जी का जन्मोत्सव हर वर्ष बड़े ही उल्लास और भव्यता के साथ सेक्रेटरी संजय पोद्दार के कार्यालय, 5 प्रफुल्ल सरकार स्ट्रीट में मनाया जाता है। इस अवसर पर सुंदरकांड पाठ, भजन संध्या और प्रसाद वितरण का आयोजन होता है, जिसमें सभी सदस्य उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। इसके अलावा हिंदू नव वर्ष से पूर्व हर साल बाबा का एक विशाल उत्सव भी आयोजित किया जाता है।

संस्था की पहचान केवल धार्मिक आयोजनों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक सेवा में भी इसका योगदान अत्यंत सराहनीय है। गर्मी के दिनों में राहगीरों को शीतल जल उपलब्ध कराना तथा हर शनिवार को शर्बत और आइसक्रीम बांटना, प्रत्येक अमावस्या को "नर सेवा ही नारायण सेवा" के भाव से भोजन वितरण करना, ये सभी कार्य संस्था की सेवा भावना को दशार्ते हैं।

हर वर्ष संस्था द्वारा हेल्थ चेकअप कैंप और निःशुल्क नेत्र ऑपरेशन (चक्षु चिकित्सा) आयोजित किए जाते हैं। इसके साथ ही ब्लड डोनेशन कैंप, दिव्यांगजनों को ट्राई साइकिल वितरण और जरूरतमंदों को कंबल बांटने जैसे सेवा कार्य भी नियमित रूप से किए जाते हैं। पितृपक्ष के दौरान 500 जरूरतमंद लोगों को वस्त्र और साड़ियां वितरित की जाती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी संस्था का योगदान उल्लेखनीय है। गरीब बच्चों की पहचान कर उनकी स्कूल फीस का प्रबंध किया जाता है। स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) और गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) के अवसर पर हिंदू बहुल गांवों में हजारों पेंसिल बॉक्स और किताबों का वितरण किया जाता है। साथ ही बांग्ला भाषा में श्रीमद्भागवत गीता का वितरण कर धार्मिक ज्ञान को भी जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है। संस्था में कुल 185 सदस्य हैं, जिनके सहयोग से सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न होते हैं। हर वर्ष संस्था "आराधना पंचांग" प्रकाशित कर शहर के लोगों के बीच वितरित करती है। सदस्य सालाना पिकनिक में शामिल होते हैं और सावन मास में रुद्राभिषेक का आयोजन किया जाता है। समय-समय पर विभिन्न बड़े धार्मिक धामों की यात्राएं भी आयोजित की जाती हैं। कोलकाता के साल्ट लेक में निकलने वाली भव्य रथ यात्रा में भी संस्था सक्रिय भूमिका निभाती है। संस्था की महिला विंग भी उतनी ही सक्रिय है, जिसने 11 जनवरी को गोलाघट्टा स्थित बीका बैंक्वेट में मंगल पाठ का आयोजन किया। यह कार्यक्रम हर वर्ष आयोजित होता है और दादी के मंगल पाठ जैसे आयोजनों में सभी सदस्य बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

संस्था के मार्गदर्शक के रूप में निरंजन जैन, रवि कड़ेल और सुरेश जाजोदिया निरंतर प्रेरणा देते आ रहे हैं। पदाधिकारियों में वीरेन्द्र मोदी (अध्यक्ष), संतोष सुरेका, राजकुमार लोहिया और विनीत पोद्दार (उपाध्यक्ष), संजय पोद्दार (सचिव), पंकज रोहतगी (संयुक्त सचिव), सुशील सांगानेरिया (कोषाध्यक्ष) और वीरेन्द्र महरिया (सह-कोषाध्यक्ष) अपनी जिम्मेदारियों का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं। कार्यकारिणी में ओम तोदी, मयंक पोद्दार, राजू राठी, दीपक झुनझुनवाला, गोपाल भोजक, गोविन्द सराफ, पंकज चौधरी, पवन तोदी, राजेश डागा, गौरी शंकर कोठारी, अनिल मेहता, अर्जित जालान, विनोद सुरेका, विनय खेमका, विनोद केडिया, विकाश अग्रवाल, मोहित सुरेका, पद्म सरावगी, अमित पोद्दार और सत्यनारायण महाजन का सक्रिय योगदान संस्था को निरंतर आगे बढ़ा रहा है।

कुल मिलाकर, **श्री सालासर भक्त वृंद** कोलकाता आज भक्ति, सेवा और संस्कारों का संगम बनकर समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है जहां आस्था के साथ मानवता की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म माना जाता है।





समाज की सेवा मेरा धर्म है : सुरेश खंडेलवाल

आज भी संपन्न तबके में ऐसे लोग हैं, जो समाज की चिंता रखते हैं। कोलकाता के सुरेश खंडेलवाल 15 साल से भी ज्यादा समय से खंडेलवाल समाज के वाइस प्रेसिडेंट बने हुए हैं। श्री श्याम परिवार, खिदिरपुर और बासुकीनाथ गौ सेवा ट्रस्ट से भी जुड़े हुए हैं। खंडेलवाल समाज के उपाध्यक्ष के रूप में 15 वर्षों का लंबा कार्यकाल उनकी नेतृत्व क्षमता और समाज के प्रति अटूट निष्ठा का प्रमाण है। वे केवल एक पद पर नहीं हैं, बल्कि समाज के अभिभावक की भूमिका निभा रहे हैं। श्याम परिवार (खिदिरपुर) और बासुकीनाथ गौ सेवा ट्रस्ट से उनका जुड़ाव यह दशार्ता है कि वे अध्यात्म को सेवा से जोड़कर देखते हैं। गौ सेवा जैसे पुनीत कार्य में उनकी सक्रियता उनके करुणामयी स्वभाव को रेखांकित करती है। कोलकाता के अनेक प्रतिष्ठित संस्था खंडेलवाल जी का जुड़ाव रहा है प्रेममिलन कोलकाता, काशी विश्वनाथ सेवा समिति, खंडेलवाल वैश्य धर्मदा



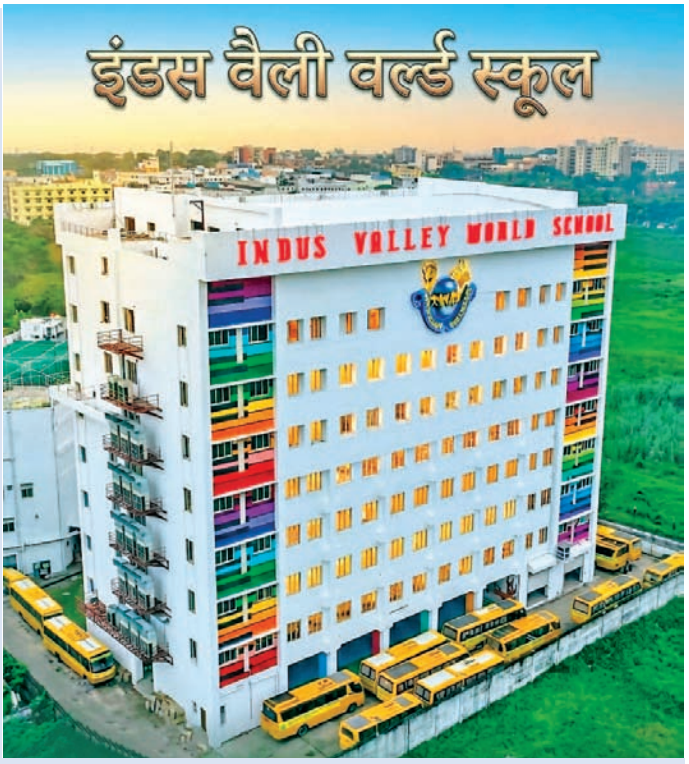


ट्रस्ट के ट्रस्टी भी है आज के भौतिकवादी युग में, जहां संपन्नता अक्सर व्यक्ति को आत्मकेंद्रित बना देती है, वहां सुरेश जी जैसे लोग यह सिद्ध करते हैं कि असली अमीरी 'साधनों' में नहीं बल्कि 'साझा करने की भावना' में है। वे समाज के युवाओं के लिए एक सेतु का कार्य कर रहे हैं, जो उन्हें अपनी जड़ों और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़े रखने में मदद करता है। **सेवा केवल दूसरों की सहायता नहीं है, बल्कि यह स्वयं के चरित्र का निर्माण है।** उन्होंने स्पष्टता न्यूज को बताया कि मनुष्य के जीवन की वास्तविक सार्थकता इस बात में नहीं है कि उसने अपने लिए क्या संचित किया, बल्कि इसमें है कि उसने दूसरों के जीवन में क्या सकारात्मक परिवर्तन लाया। खंडेलवाल जी ने प्रेम मिलन कोलकाता के साथ मिलकर पिछले कुछ महीना पहले सियालदह के रिफ्यूजी कैंप के गरीब और अनाथ बच्चों के बीच अपने पोते का बर्थडे मनाया था इसमें उनके पूरे परिवार के लोग व रिश्तेदार भी शामिल हुए थे। खंडेलवाल जी का मानना है कि निस्वार्थ सेवा से जो मानसिक और आत्मिक संतोष प्राप्त होता है, वह संसार की किसी भी भौतिक सुख-सुविधा से नहीं मिल सकता। एक स्वस्थ और सुदृढ़ समाज की नींव केवल सरकारी नीतियों पर नहीं, बल्कि नागरिकों के बीच परस्पर सहयोग और सेवा की भावना पर टिकी होती है। उनका कहना है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है। गौ सेवा और दीन-दुखियों की सहायता करना ही ईश्वर की सबसे बड़ी आराधना है। जब एक संपन्न व्यक्ति समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझता है, तो वह न केवल अभावों को दूर करता है बल्कि समाज में मानवता के प्रति विश्वास को भी पुनर्जीवित करता है। वे दिखावे के लिए फिॅजूलखर्ची को भी एक सामाजिक बुराई मानते हैं।





बंगाल के सबसे सम्मानित शैक्षणिक संस्थान के तौर पर मिली पहचान



वर्ष 2008 में इंडस वैली वर्ल्ड स्कूल का सफर कोलकाता के हृदयस्थल में वर्ल्ड-क्लास एजुकेशन देने के विजन के साथ शुरू हुआ था। अजय नगर, ईस्टर्न मेट्रोपॉलिटन बाई-पास पर स्थित यह स्कूल पिछले दो दशकों में बड़े सपनों वाले एक छोटे स्कूल से बंगाल के सबसे सम्मानित एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस में से एक बन गया है। एकेडमिक एक्सीलेंस, कैरेक्टर डेवलपमेंट और होलिस्टिक ग्रोथ के लिए स्कूल की प्रतिबद्धता ने हजारों स्टूडेंट्स को अपने सपने पूरे करने और समाज में सार्थक योगदान देने में मदद की है।

स्कूल के आधार स्तंभ

श्रेष्ठता : शैक्षणिक गुणवत्ता, चरित्र निर्माण और व्यक्तिगत उन्नति के उच्चतम मानकों की प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहना।

सत्यनिष्ठा : ऐसे ईमानदार, नैतिक और उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण करना, जो सदैव अपने सिद्धांतों और मूल्यों पर अडिग रहें।

नवाचार : शिक्षा के स्तर को और बेहतर बनाने के लिए आधुनिक शिक्षण पद्धतियों और नवीनतम तकनीक का समावेश करना।

वैश्विक दृष्टिकोण : विद्यार्थियों को अपनी भारतीय संस्कृति और जड़ों से जोड़े रखते हुए, उन्हें एक जागरूक वैश्विक नागरिक के रूप में तैयार करना। स्कूल में एकेडमिक्स, स्पोर्ट्स और को-करिकुलर एक्टिविटीज पर संतुलित फोकस रखा जाता है। सीबीएसई पाठ्यक्रम का यह स्कूल कक्षा 1 से 12 वीं तक की कक्षाएं चलाता है। यह स्कूल एक सुरक्षित, समावेशी और भविष्य के लिए तैयार वातावरण में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने के लिए विख्यात है। एक सह-शिक्षा संस्थान के रूप में मजबूत शैक्षणिक नींव के साथ-साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास पर जोर देता है। असका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि हर बच्चा आत्मविश्वास, अच्छे चरित्र और योग्यता के साथ आगे बढ़े। अपने आधुनिक पाठ्यक्रम, बेहतरीन बुनियादी ढांचे और समर्पित शिक्षकों के साथ, आईवीडब्यूादी एस कोलकाता के सर्वश्रेष्ठ सीबीएसई स्कूल के रूप में नए मानक स्थापित कर रहा है। स्कूल विद्यार्थियों को पढ़ाई, खेलकूद, कला और वास्तविक दुनिया की चुनौतियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाता है।

स्कूल का नेतृत्व करने वालो में

प्रबंध न्यासी शंकर लाल गुप्ता का प्रभावशाली व्यक्तित्व और अटूट प्रतिबद्धता संस्थान को सुचारू और कुशल रूप से चलाने में मदद करती है। अभी हाल में, इंडस वैली वर्ल्ड स्कूल के एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस लैब का भव्य उद्घाटन इसरो के रिटायर्ड मिशन डायरेक्टर टी. के. सुंदरमूर्ति की मौजूदगी में गत 23 मार्च को स्कूल 'एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस लैब' में हुआ। 'एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस लैब' से छात्र एक ऐसी दुनिया में कदम रखेंगे, जहां वे खगोल विज्ञान, स्टेम, रोबोटिक्स और टिंकरिंग एक साथ मिलकर सीखेंगे। इसके साथ एस्ट्रोनॉमी की गहराइयों को समझेंगे। रोबोटिक्स और स्टेम के साथ नए प्रयोग करेंगे व इनोवेशन के जरिए भविष्य की चुनौतियों का सामना करेंगे। हाल में हुए इस कार्यक्रम में चीफ गेस्ट की पत्नी, प्रिंसिपल रेशमा भट्टाचार्य, वाइस प्रिंसिपल मधुमिता शील, सीनियर सेकेंडरी कोऑर्डिनेटर अनु घोसला और इंडस वैली स्कूल के सीओओ आयुष गुप्ता भी उपस्थित थे।



इस मौके पर काफी संख्या में बच्चे, शिक्षक व प्रबंधन से जुड़े लोग थे। स्कूल की प्रिंसिपल रेशमा भट्टाचार्य एक अनुभवी और उत्साही शिक्षाविद् हैं। उन्होंने जादवपुर विश्वविद्यालय से तुलनात्मक साहित्य में पोस्ट ग्रेजुएशन, बी.एड और शैक्षिक प्रशासन में सर्टिफिकेट प्राप्त किया है। अपनी ममता और देखभाल भरे स्वभाव से वे स्कूल की स्थापना के समय से ही बच्चों के भविष्य को संवार रही हैं। संस्थापक वाइस प्रिंसिपल के रूप में उन्होंने स्कूल की निरंतर प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका दृढ़ विश्वास है कि हर बच्चा एक विजेता है और कोई भी बच्चा पीछे नहीं रहता। श्रीमती भट्टाचार्य का मानना है कि 'बेहतर बनने की दौड़ का कोई अंत नहीं होता' और हमें हर बीतते दिन के साथ खुद को सुधारते रहना चाहिए।






महावीर जयंती
की हार्दिक शुभकामनाएं
NARESH, REKHA, ATUL, RASHMI,
ALOK RINKAL, RIYA, HARSHIL, DAKSH,
SAMSAT, SETHI PARIWAR


महावीर जयंती
की हार्दिक शुभकामनाएं
श्रीमती खुशबू जैन
भजन गायिका
मो.- 9748817762


SIDDHA
One, Two, Three!
Really?
3 balconies
in a 3 BHK
Unbelievable!
Conditions apply
Actual Image
3 BHK from ₹1.20 Cr
2 & 4 BHK also available
8152 077 077
siddhaserena.in
SIDDHA
SERENA
NEW TOWN
WBRERA/P/NOR/2023/000638 | WBRERA/P/NOR/2024/001015
WBRERA/P/NOR/2024/001769 | rera.wb.gov.in
Scan to Know More

गढ़ना है बंगाल का भविष्य : एक समय में एक सोच



सागर अग्रवाल
मैनेजिंग ट्रस्टी और सेक्रेटरी

नताशा अग्रवाल
ग्रुप डायरेक्टर और ट्रेजरर

2002 में, ओमदयाल ग्रुप की शुरूआत इस पक्के विश्वास पर हुई थी कि एक शहर, एक राज्य और एक पीढ़ी के लिए उत्कृष्ट शिक्षा ही सबसे सशक्त माध्यम है। प्रारंभ से ही हमारा उद्देश्य केवल संस्थानों का निर्माण करना नहीं, बल्कि एक ऐसा परिवेश तैयार करना था, जहां विद्यार्थी जिज्ञासा, आत्मविश्वास और अवसरों के साथ पल्लवित हो सकें।

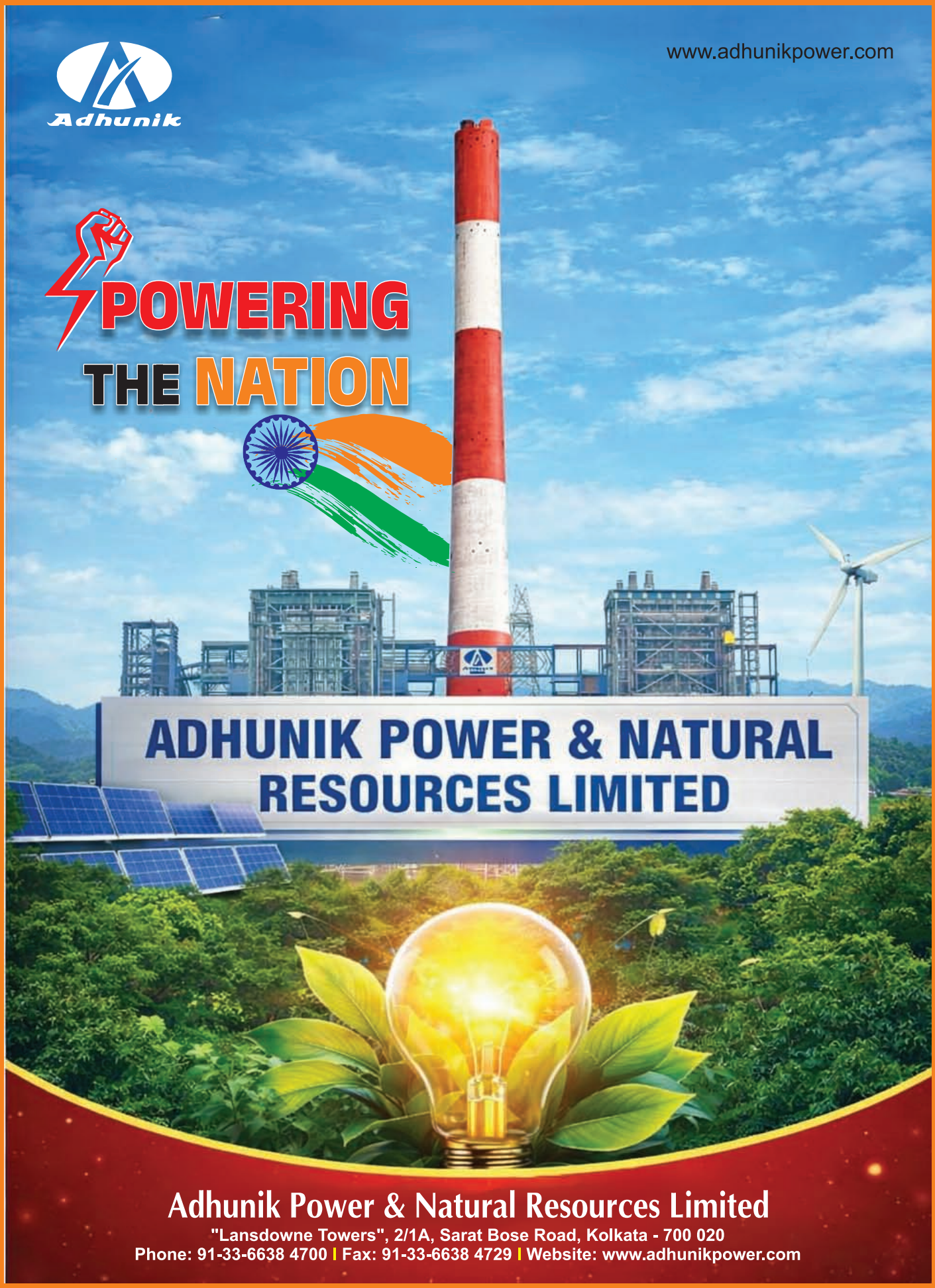
इसी विश्वास ने कोलकाता के पहले दिल्ली पब्लिक स्कूल को जन्म दिया, जिसे डीपीएस, रूबी पार्क के नाम से जाना जाता है, जो देश के टॉप डीपीएस स्कूलों में से एक है। अपने मजबूत एकेडमिक कल्चर और वाइब्रेंट कैंपस लाइफ के लिए जाना जाने वाला यह स्कूल विद्यार्थियों को आजादी से सोचने, प्रतियोगिता में हिस्सा लेने और स्पोर्ट्स, आर्ट्स और लीडरशिप में अपनी रुचियों का संधान (एक्सप्लोर) करने के लिए बढ़ावा देता है। हमारे विद्यार्थियों ने सीबीएसई परीक्षाओं में शत-प्रतिशत उत्कृष्टता के साथ असाधारण शैक्षणिक सफलता प्राप्त की है और वे राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं एवं ओलंपियाड में भी शीर्ष स्थान पर रहे हैं। कोलकाता के अनेक परिवारों के लिए डीपीएस रूबी पार्क बौद्धिक क्षमता और चारित्रिक विकास का केंद्र बन चुका है।

इसने एक दूसरा फ्लैगशिप कैंपस, डीपीएस दुर्गापुर बनाया, जिसमें उन विद्यार्थियों के लिए बोर्डिंग की सुविधा है, जो पूरे भारत से विशेष शैक्षिक उत्कृष्टता की तलाश में आते हैं — एक होलिस्टिक सीबीएसई एजुकेशन, जो पढ़ाई की सख्ती को खेल, कल्चर और कैरेक्टर के साथ संतुलित करता है, जिससे ऐसे युवा लड़के और लड़कियां तैयार होते हैं, जो डिबेट में उतने ही कॉन्फिडेंट होते हैं, जितने क्रिकेट के मैदान में।

ओमदयाल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, उलुबेड़िया में एक एनएएसी-एक्रेडिटेड इंजीनियरिंग और आर्किटेक्चर कॉलेज, जहां से ग्रेजुएट एमेजन, टीसीएस और विप्रो में करियर बनाते हैं, जल्द ही शुरू हो गया। हम 1986 में दिल्ली में एक्स-आईआईटियन द्वारा शुरू की गई विद्यामंदिर कक्षाओं को भी कोलकाता लाए, ताकि भारत के टॉप इंस्टीट्यूशन्स में पहुंचने का सपना देखने वाले हर स्टूडेंट को उससे मैच करती कोचिंग मिल सके।

और अब, यही विश्वास कुछ नया बना रहा है। हमारे स्कूलों में एक स्टेट-ऑफ-द-आर्ट एआई और रोबोटिक्स लैब और एक वर्ल्ड-क्लास एस्ट्रोनॉमी लैब की स्थापना की गई, क्योंकि आज क्लासरूम में स्टूडेंट्स आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और स्पेस टेक्नोलॉजी से बनी दुनिया में जा रहे हैं और उन्हें इससे हैरान नहीं होना चाहिए। उन्हें पहले से ही इसके कुछ हिस्से बनाने चाहिए। हमारे आईपैड-इनेबल्ड क्लासरूम और डिजिटली इंटीग्रेटेड कैंपस के साथ, ये हमारे इंफ्रास्ट्रक्चर में कोई नई चीज नहीं हैं, ये हमारे इरादे की अभिव्यक्ति हैं।

हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें इनोवेशन और टेक्नोलॉजी सबसे जरूरी हैं। हमारे इंस्टीट्यूशन स्टूडेंट्स को अलग-अलग तरीकों से नॉलेज से जुड़ने में मदद करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। मजबूत एकेडमिक फाउंडेशन को नई टेक्नोलॉजी के साथ मिलाकर, हमारा मकसद स्टूडेंट्स को न सिर्फ. आज की चुनौतियों के लिए बल्कि, कल के अवसरों के लिए भी तैयार करना है। 23 साल, 4 इंस्टीट्यूशन, हजारों स्टूडेंट्स, जिन्होंने आगे बढ़कर कुछ बनाया, लीड किया, खोजा और रचना की। इंडिया का अगला दशक आज क्लासरूम में बैठे स्टूडेंट्स बनाएंगे और हम यह पक्का करना चाहते हैं कि वे तैयार हों। उल्लेखनीय है कि संस्थान के मैनेजिंग ट्रस्टी और सेक्रेटरी सागर अग्रवाल और ग्रुप डायरेक्टर और ट्रेजरर नताशा अग्रवाल हैं। इनके नेतृत्व में डीपीएस निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।


Adhunik
www.adhunikpower.com
POWERING
THE NATION
ADHUNIK POWER & NATURAL
RESOURCES LIMITED
Adhunik Power & Natural Resources Limited
"Lansdowne Towers", 2/1A, Sarat Bose Road, Kolkata - 700 020
Phone: 91-33-6638 4700 I Fax: 91-33-6638 4729 I Website: www.adhunikpower.com

With Best Compliments From :

BENGAL
ENERGY

BENGAL ENERGY LIMITED

OM TOWER, 32, J. L. NEHRU ROAD, 3RD FLOOR,
KOLKATA-700 071, W.B.

OM JALAN

RAJALDESAR - KOLKATA



Phone : 33 2288 3355/56/57 | Fax : 33 2288 3354
E-mail: omjalan@bengalenergy.in | omjalan2014@gmail.com